नवरात्रि विशेषांक
मार्च-2022
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 6
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
तारा साधना
नवरात्रि पूजन विधान
विजय गणपति साधना
गुरु समर्पण एवं दोष निवारण का-
तीव्र तान्त्रिक प्रयोग

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री मंगवाना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

8890543002

साधकों को सभी सामग्री स्पीड पोस्ट से भेजी जाती है। अतः साधना सामग्री मंगाने के लिए सामग्री की न्यौछावर राशि के साथ डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें तथा जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण, अपना पूरा पता पिनकोड एवं फोन नम्बर के साथ हमें उपरोक्त नम्बर पर वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे, जिससे आपको साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त हो सकेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

1 वर्ष सदस्यता 405/-	शिव यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	लक्ष्मी यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	1 वर्ष सदस्यता 405/-

आनो भ्रदाः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

सुख, सम्पन्नता एवं समृद्धि हेतु : ऋद्धि सिद्धि प्रयोग

पूर्व जन्म के समस्त पाप-दोष निवारण हेतु : पापाकुंश साधना
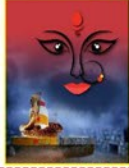
मनुष्य जीवन के सर्वस्व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु : चैत्र नवरात्रि साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

आमंत्रण

आयुर्वेद

योग
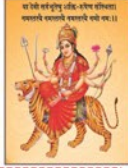
प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
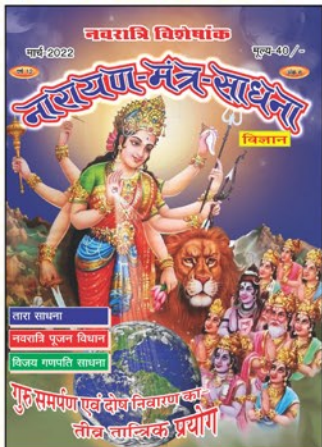
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्लीः110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

करोतु सा नः शुभ हेतुरिश्वरी।
शुभानि भद्राणि भिहन्तु चापदः॥

हे माँ जगदम्बा! आप मेरी रक्षा करें। मेरे परिवार का शुभ करें, कल्याणकारी बनें और सभी प्रकार के भय से निरापद बना दें।

आत्म दर्शन

ब्रह्मदेश के महाप्रतापी राजा ने नैमिषारण्य में उपस्थित दस सहस्र ऋषि-मुनियों से प्रार्थना की , कि ऋषिवर! मैं आत्मदर्शन हेतु प्रार्थी रूप में आपके सम्मुख उपस्थित हूँ। मुझे आत्मा के गूढ़तत्व को समझाने की कृपा करें।

ऋषि मण्डली में मौन छा गया। राजा हताश होकर लौट आया। बीच मार्ग में बैठे ऋषि अष्टावक्र से उसका सामना हो गया। उन्होंने राजा से कहा–'महाराज! आप देख ही रहे हैं कि मैं शरीर से असमर्थ हूँ और अत्यधिक थका होने के कारण आगे नहीं बढ़ पाऊँगा और आज इस मार्ग पर ही विश्राम करूँगा, बड़ी कृपा होगी यदि आप दूसरा मार्ग अपना लें।' राजा क्रोध की अग्नि में धधक उठा, 'अधम पिण्ड! तुम्हारा यह दुस्साहस? हट जा इस मार्ग से। मैं यहाँ से ही जाऊँगा।' अष्टावक्र ने सौम्यता से अविचलित स्वर में पुन: कहा–'राजन! निकट ही दूसरा मार्ग है, आप उससे क्यों नहीं चले जाते? राजा तमक कर बोला–'नहीं, मैं इसी मार्ग से जाऊँगा।'

'महाराज हठ करना मूर्खता है और फिर जिस मार्ग पर जाने से आपको कुछ भी विशेष मिलने वाला नहीं, उसके लिये जिद करना अज्ञान ही है।' राजा चकराया। उसने पूछा–'क्या आशय है तुम्हारा विकलांग!'

'यही कि आँख बन्द करके चलने वाले को कोई भी नहीं सिखा सकता। कोई ऋषि-मुनि भी नहीं। आत्मदर्शन की बात तो बहुत दूर की बात है।'

राजा ने जब यह बात सुनी तो उसकी आँखें खुल गईं और रथ से उतर कर अष्टावक्र के चरणों में झुक गया।

ऋषि ने कहा, 'बस यही आत्मदर्शन है राजन! पल-पल पर जीव को आत्मदर्शन होता है। विडम्बना यह है कि उसकी आँखों पर क्रोध और अहंकार का परदा चढ़ा रहता है इसलिये आँख की बात आत्मा तक नहीं पहुंच पाती। ज्यों ही यह परदा हटता है–आत्मदर्शन हो जाता है।'

प्रस्तुत अंक में सद्गुरुदेव ने अपने अमृत वचनों में गुरु शिष्य सम्बन्धों की सविस्तार व्याख्या करते हुए गोविन्दपादाचार्य और शंकराचार्य के गुरु शिष्य प्रसंग को विस्तार से समझाया है कि किस प्रकार शिष्य जीवन में ऊर्ध्वगामी गति प्राप्त कर सकता है। कैसा होता है एक सच्चे शिष्य का जीवन—इसका प्रत्येक शब्द मन की वीणा को झंकृत करने वाला है इसे तो पठन कर मनन कर अपने जीवन में उतारना है—

अहं ब्रह्मास्मि
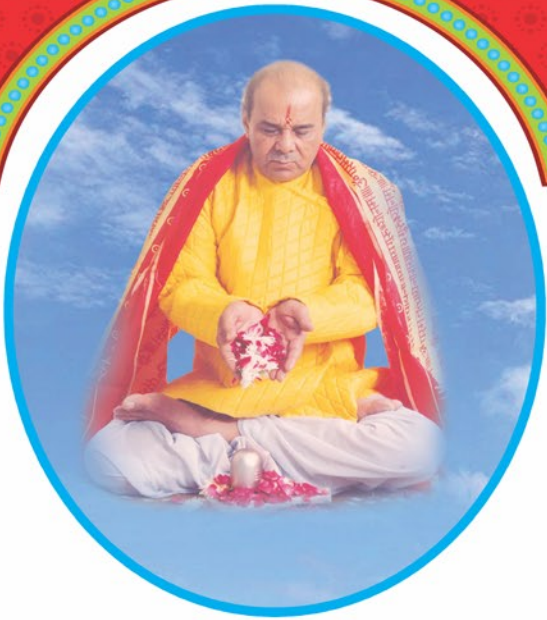
गोविन्दपादाचार्य ने स्पष्ट रूप से बताया– शंकर इस जीवन में, इस संन्यास मार्ग पर न कोई पिता होता है, न कोई हितैषी होता है, न कोई जाति होती है, न कोई समाज होता है। वह स्वयं होता है और वह स्वयं अपने जीवन को परिपूर्णता प्रदान करता है। इसलिए उस मां की मृतदेह की भस्म नर्मदा नदी में प्रवाहित कर दो क्योंकि इससे ऊंचा स्थान, इससे पवित्र स्थान इस विश्व में और कोई नहीं है।

और शंकराचार्य ने अपने गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए वह भस्म नर्मदा में प्रवाहित कर दी और इस प्रकार से उन्होंने जो छोटा-मोटा धागा, जो बंधन समाज का या परिवार का था उसको भी समाप्त कर दिया और यह निश्चय कर लिया कि मैं अपने जीवन में उस सत्य को उद्घटित करूँगा जो जीवन का आधारभूत सत्य है, तथ्य है।

एक दिन अवसर पाकर शंकराचार्य ने अपने मन के विचार गुरुदेव के सामने रखे। गुरुदेव ने कहा कि जो तुम ब्रह्म दीक्षा प्राप्त करना चाहते हो, जो तुम नित्य लीला विहारिणी दीक्षा प्राप्त करना चाहते हो उसके लिए तुम्हें तत्पर होना पड़ेगा, साधना संपन्न करनी पड़ेगी, गुरु सेवा करनी पड़ेगी और गुरु आज्ञा का अक्षरश: और प्रतिक्षण पालन करना पड़ेगा, क्योंकि यह देह को साधने और मन को बांधने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

शंकर ने गुरुदेव की बातों को ध्यान से सुना और मन में निश्चय कर लिया कि यदि इससे भी कठिन अग्नि परीक्षा होगी तो भी मैं उसमें खरा उतरूँगा और गुरु आज्ञा का पालन करता हुआ, गुरु सेवा करता हुआ मैं इन कठिन क्रियाओं को संपन्न कर पूर्ण गुरु दीक्षा प्राप्त करूँगा और वे नर्मदा के एक किनारे पर, जहां से वह उत्तराभिमुख होकर अग्रसर होती है उस स्थान पर, उस गुफा में जो स्वयं प्रकृति की देन है, जो निर्मित नहीं है अपितु प्रकृति के द्वारा परिचालित है उसमें बैठकर साधना प्रारंभ की, और वह प्रकृति निर्मित गुफा आज भी, जीवित, जागृत और चैतन्य है, जहां जाने से एक पवित्रता का बोध होता है, जहां जाने से एक विरक्ति का भाव जाग्रत होता है, जहां जाने से ध्यानस्त प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, और जहां जाने से यह चेतना अपने-आप अभिव्यक्त हो जाती है कि इस जीवन में कोई बंधु, कोई समाज, कोई मां-बाप, कोई भाई-बहन, कोई संबंधी, कोई रिश्तेदार नहीं होते। अपितु ये तो देहगत सम्बन्ध हैं और जीवित रहते हुए देह को परे रखने पर प्राणमय चिंतन से विश्व को देखने की क्रिया प्रारम्भ होती है।

यदि वहाँ पहुंचकर आज भी इस प्रकार का सत्य एक सामान्य दर्शक के मन में उद्घटित होता है तो यह सोचा जा सकता है कि वास्तव में ही वह प्रकृति निर्मित गुफा कितनी अधिक दिव्य और तेजस्वी है जिसमें एक बालक शंकर ने यहाँ रहकर कितनी कठोर तपस्या की होगी और अपने जीवन में पूर्णता को प्राप्त करने का प्रयास कर सफलता अर्जित की होगी।

गुरुदेव ने उन्हें द्वैत भाव की अपेक्षा अद्वैत भाव स्पष्ट किया कि ब्रह्म ही माया है, ब्रह्म ही जीव और जगत है और यह सब कुछ माया चारों तरफ बिखेरती हुई पुन: ब्रह्म में लीन हो जाती है। और यहीं से शंकराचार्य का अद्वैत सिद्धांत, 'अहं ब्रह्मास्मि' का घोष इस पृथ्वी तल पर विकीर्ण हुआ। उन्होंने स्पष्ट रूप
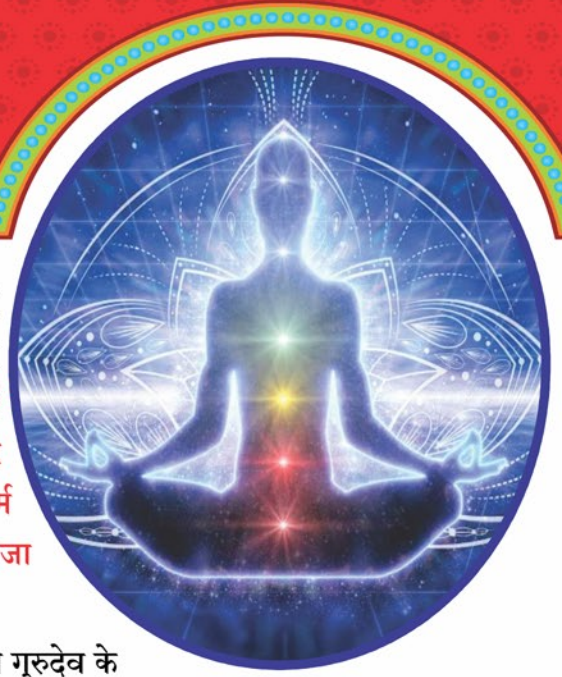
से बताया कि माया तो एक छल है जिसमें जीव भ्रमित होता है मगर जो इस भ्रम से परे हट जाता है, जो इस बात का अनुभव करता है कि ब्रह्म का एक स्थूल रूप माया है और जब वह यह समझता है कि 'अहं ब्रह्मास्मि'– मैं ही ब्रह्म हूँ, मुझसे ही माया का प्रादुर्भाव होता है, और माया पुन: मेरे अंदर ही लीन हो जाती है तभी सही दृष्टि से सनातन धर्म के समस्त ग्रंथों का आलोड़न-विलोड़न किया जा सकता है, समझा जा सकता है।

गोविन्दपादाचार्य ने शिष्य की कठिन परीक्षा ली। शंकर नित्य गुरुदेव के उठने से पहले उठते, पूर्ण मनोयोग से उनकी सेवा करते, उनके समीप ज्यादा से ज्यादा बैठने का प्रयत्न करते और उनके एक-एक वाक्य को अपने जीवन में उतारते। और यहीं से उनके जीवन की वह मूल व्याख्या कि ब्रह्म ही सत्य है, 'अहं ब्रह्मास्मि' जिस का उद्घोष वेदों, पुराणों, उपनिषदों में दिया हुआ है का प्रारम्भ हुआ।

एक वर्ष तक गुरुदेव गोविन्दपादाचार्य ने उनकी कठोर से कठोर परीक्षा ली और जब उन्होंने अनुभव किया कि यह बालक किसी भी प्रकार की परीक्षा में पूर्णतायुक्त है तब गुरु ने उन्हें त्रिपुर सुन्दरी और श्री चक्र उपासना की साधना प्रदान की। भगवतपाद शंकराचार्य के घराने में साम्ब सदाशिव की उपासना परम्परागत रूप से चली आ रही थी। यहीं से शंकराचार्य ने शिव से निर्गुण परम तत्त्व की प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त किया, और शुद्ध तंत्र विद्या का ज्ञान प्राप्त करते हुए श्री चक्र की उपासना का अनुभव किया।

सौन्दर्य लहरी के ग्यारहवें श्लोक में, यह समझाया है कि जीवन अपने-आप में पूर्णता का द्योतक है। श्री चक्र की उपासना को समझा नहीं जा सकता क्योंकि श्री चक्र के उपास्य देवता ललिता त्रिपुरा हैं और मंत्र के मनन द्वारा ही मन का तत् सम्बन्धी देवता से तादात्म्य स्थापित किया जाता है।

और उन्होंने सौन्दर्य लहरी में स्पष्ट किया—

भक्त: त्रयी वर्ण या, यति करित लीलांजन तया।
विभाती त्वन नेत्र, त्रितयमिद मिषान दयिते।
पुन: पष्टम देवाम, द्रुहिण हरि रूद्रान परताम।
रज सत्वं विद्धः, तम यति गुणानाम त्रयमीव:।

यही नहीं अपितु उन्होंने श्री चक्र को स्पष्ट रूप से समझने और बताने के लिए कहा–

गते कर्णाभ्य हरणाम, गरुतैव पक्षमाण धधति।
परांबे तश चित्त:, प्रसमद स वित्रा वण फले।
इमे नेत्रे गौत्रा, धरपति कुलोत्तम सकलि ते।
तवा करणा कष्ट:, स्मर सर विलासा कलयत:।

उन्होंने इन श्लोकों के माध्यम से ललिता त्रिपुर सुन्दरी के बारे में स्पष्ट रूप से व्याख्या की है और यह बताया है कि मंत्र के मनन द्वारा मन का तत्सम्बन्धी देवता से किस विधि से, किस रहस्य से

'अहं ब्रह्मास्मि'– मैं ही ब्रह्म हूँ, मुझसे ही माया का प्रादुर्भाव होता है, और माया पुनः मेरे अंदर ही लीन हो जाती है तभी सही दृष्टि से सनातन धर्म के समस्त ग्रंथों का आलोड़न–विलोड़न किया जा सकता है, समझा जा सकता है।

तादात्म्य स्थापित किया जाता है। और उन्होंने इस सौन्दर्य लहरी में ललिता त्रिपुरांबा के मंत्र का निर्देश स्पष्ट रूप से उद्‌घटित किया है और बताया है कि वास्तव में ही मात्र श्री चक्र की उपासना के माध्यम से ही ब्रह्म गायत्री के वैदिक मंत्र और हादी-कादी तांत्रिक मंत्रों को समझा जा सकता है।

एक प्रकार से यदि बाह्य रूप से देखें तो शंकराचार्य ने मां पार्वती को माध्यम बनाकर उनके सौन्दर्य का वर्णन किया है। परन्तु विद्वान् यहीं पर भूल कर बैठे हैं। यह मात्र पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन नहीं है अपितु तंत्र की श्रेष्ठतम व्याख्या है जिसके माध्यम से पूरे तंत्र को समाहित कर यह स्पष्ट किया गया है कि बिना तंत्र के जीवन की पूर्ण व्याख्या संभव नहीं है और न श्री यंत्र और श्री चक्र को ही समझा जा सकता है। शरीर के अंदर अभ्यंतर पट पर इडा, पिंगला और सुषुम्ना जैसी नाड़ियों एवं षट चक्र और देवता रूपी शक्तियों के केंद्रों की व्याख्या एवं सहायता से ही योग पद्धति के साधनक्रम को समझा जा सकता है, और ऐसी स्थिति आने पर शरीर ही अपने-आप में पूर्ण श्री यंत्र बन जाता है और तब मंत्रों की सहायता से इस मूलाधार कुण्डलिनी शक्ति का उत्थान करके उसका आरोहण, अवरोहण सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्म रंध्र अर्थात् सहस्रार तक किया जा सकता है क्योंकि ये सब शक्तियाँ बीज रूप से शरीर में तो समाहित होती ही हैं आवश्यकता इस बात की है कि इनका जागरण करके शरीर में ही ईश्वर की प्राप्ति की जा सके।

इन देवताओं को समझने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। और जो बाहर भटकते हैं वे शरीर स्थित श्री चक्र का या श्री चक्र द्वारा निर्मित शरीर को न समझने की भूल कर बैठते हैं क्योंकि पिंड और ब्रह्माण्ड दोनों की रचना तात्विक दृष्टि से एक रूपा है। यदि योग मार्ग से गतिशील हो तो कुण्डलिनी, मन, प्राण, नाद और बिंदु इन पांचों को उर्ध्व चेतनायुक्त बनाकर ब्रह्माण्ड के समस्त तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है और यह ज्ञान प्राप्त करके ही वह विश्व की समस्त शक्तियों

को अपने अंदर समाहित कर व्यक्ति उन अलौकिक कार्यों को सम्पन्न कर सकता है जो कि अगम्य हैं, अगोचर हैं, अद्वितीय हैं और सामान्य जनों के लिए आश्चर्यजनक है। सही दृष्टि से देखा जाए तो मूलाधार स्थित कुण्डलिनी शक्ति ही महामाया है और इसी को शुद्ध स्वरूप और इसी को सिद्ध विद्या कहा जाता है। यही परा है, यही पश्यंति है यही मध्यमा है और यही वैखरी है जिसे व्यक्त करके समस्त मंत्रों के माध्यम से जगत की सृष्टि समझी जा सकती है। और उन्होंने यह प्रतिपादित किया है कि योग और उपासना का स्थान अन्यत्र कहीं भी नहीं अपितु मनुष्य की देह ही है और साथ ही साथ उन्होंने उस तथ्य का भी गूढ़ता से स्पष्टीकरण किया कि जीवन की सर्वोच्च उपलब्धियों, तंत्र और मंत्र, योग और दर्शन, मीमांसा और अद्वितीय कार्य, परकाया प्रवेश और वायुगमन प्रक्रिया, शरीर को अंगुष्ठ मात्र करके गमनशील होना और सिद्धाश्रम की प्राप्ति मात्र इस शरीर के माध्यम से ही संभव है क्योंकि परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी ही सही अर्थों में मंत्रमय जगत की सृष्टि करती हैं और यही मूलाधार स्थित कुण्डलिनी शक्ति की पूर्णता है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी इस व्याख्या को सौन्दर्य लहरी के दो श्लोकों में स्पष्ट किया है–

विशालकलयाणी स्फुटरुचिरयोद्धया कुवलये, कृपा धारा धारा किमपि मधुरा भोग वतिका।
अवंति दृष्टि ते बहुनगर विस्तार विजया, द्रुवम तत तन नाम: व्यवहरण योग्या विजयते।

और श्लोक को और ज्यादा तरीके से समझाते हुए बताया कि किस प्रकार से शरीर को उच्चाटन, आकर्षण, द्रविकरण, सम्मोहन, वशीकरण, तारण और विद्रावण किया जाता है।

कवि नाम संदर्भ: सत्वकमर: कंदै करिश्कम,
कटाक्ष: व्याक्षेप: भ्रमरकल भौकर्ण युगलम।
अमुचंतो द्रष्टवा तव नवर सा स्वाद तरला,
वसुधा संसर्गा दलिक नयन किं चिदुरणं।

और ये दो श्लोक इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं कि यह शरीर ही सही अर्थों में श्रीचक्र है, इसी में संसार लीन होता है। और इस शरीर को ही साध्य करके, इस शरीर को ही श्री चक्र बना करके, इस शरीर को ही त्रिपुर सुन्दरी में समाहित करके संसार की समस्त चेतना, संसार का समस्त ज्ञान, संसार की सारी कार्य पद्धति को समझा जा सकता है।

परन्तु इसे समझने के लिए गुरु का सानिध्य और गुरु की कृपा अत्यावश्यक है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में स्पष्ट रूप से यही सत्य हजारों वर्षों पूर्व स्पष्ट कर दिया था कि–

तद विद्धै प्राणियातेन परिप्रश्ने न सेवया।
उपदेश शंति देय ज्ञानां ज्ञानिन: तत्र दर्शिन:।

अर्थात् बिना गुरु के उस जीवन को नहीं समझा जा सकता। और जीवन को नहीं समझा जा सकता तो श्री चक्र और ललिताम्बा को भी नहीं समझा जा सकता। और यदि इन दोनों, तत्वों को नहीं समझा जा सकता तो सूक्ष्म रूप धारण करना, विशुद्ध काया प्राप्त करना, इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना को जाग्रत करना, कुण्डलिनी को जाग्रत कर पूर्णता तक पहुंचना संभव नहीं है।

इसलिए चक्रों और कुण्डलिनी का जितना सुन्दर विषय विवेचन भगवतपाद शंकराचार्य ने सौन्दर्य लहरी के माध्यम से किया है वह अपने-आप में अन्यतम है क्योंकि यह ग्रंथ केवल पठन करने के लिए अथवा मनन करने के लिए ही नहीं है अपितु सही अर्थों में यह तंत्र ग्रंथ है, यह तांत्रिक ग्रंथ है। इसके एक-एक श्लोक में तंत्र की विशुद्ध व्याख्या है और इसके मार्ग से ही, इसे समझकर हादी-कादी, उपासना तथा योग मार्ग को लेकर गतिशील हुआ जा सकता है।

उन्होंने इस सौन्दर्य लहरी में कई स्थानों पर भगवान् या गुरु को ही शंकर कहा है, शिव कहा है और यह बताया है कि उनके माध्यम से ही जीवन को पूर्णता दी जा सकती है। और जीवन के बत्तीस वर्ष के अल्प समय में ही ऐसा ग्रंथ संपादित कर सन् 820 ई. में अपना प्रात: स्मरणीय नाम सदा के लिए काल के भाल पर अंकित कर, इस नश्वर देह को विसर्जित कर दिया।

परन्तु उनकी यह सौन्दर्य लहरी आज भी योगियों के लिए और विद्वानों के लिए अन्यतम ग्रंथ है।
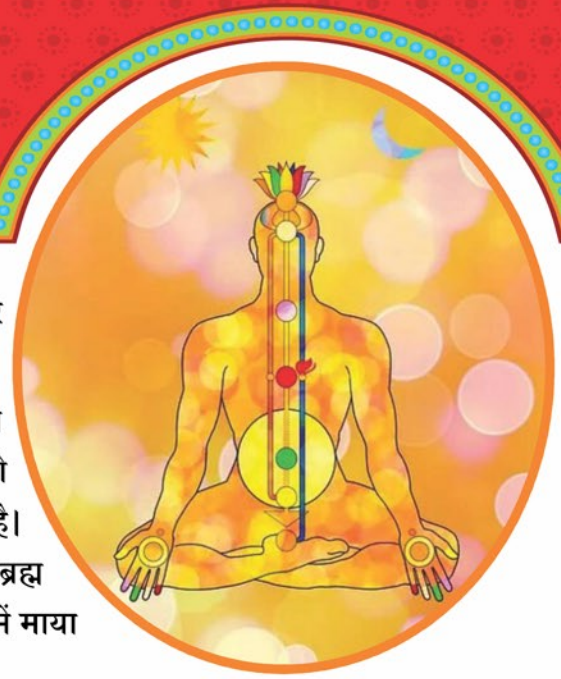
मैं भगवतपाद शंकराचार्य का यह सौन्दर्य लहरी का पाठ कर रहा हूँ और केवल उनके स्थूल सौन्दर्य का वर्णन कर रहा हूँ।

यह श्लोक केवल स्थूल सौन्दर्य वर्णन ही नहीं है और दूसरी दृष्टि से पूर्णत: स्थूल सौन्दर्य वर्णन ही है। विद्वानों ने इन श्लोकों को तांत्रिक श्लोक कहा है ओर इन श्लोको में से तंत्र को खोज निकाला है। कुछ विद्वानों ने अद्वैत की भावना को ध्यान में रखकर इस पूरे शरीर को ब्रह्म माना है और उन्होंने कहा है कि इसी शरीर में ब्रह्म है और इसी शरीर में माया है। इन दोनों का अंतर नहीं किया जा सकता।

कुछ विद्वानों ने इन श्लोकों के आधार पर प्रत्येक श्लोक को तंत्रमय मानकर स्तोत्र और तंत्र का समन्वय किया है और बताया है कि इसकी प्रत्येक पंक्ति में तंत्र है और यदि इस विधि से अवलोकन किया जाए तो यह शरीर एक तंत्र बन जाता है, एक यंत्र बन जाता है, और इसकी पूजा ध्यान, धारणा, चिंतन, समाधि करने से ही पूर्णता एवं सफलता मिलती है।

यही नहीं, अपितु कुछ विद्वानों ने सम्पूर्ण योग का समन्वय इस तंत्र में ढूंढ़ निकाला है, या दूसरे शब्दों में कहें तो प्रत्येक श्लोक को एक यंत्र का स्वरूप दिया है और बताया है कि श्लोक के अनुसार यदि यंत्र निर्मित किया जाए और उस यंत्र की व्याख्या, उस यंत्र का चिंतन, उस यंत्र का ध्यान और उसकी पूरी पूजा पद्धति सही ढ़ंग से की जाए तो व्यक्ति इडा, पिंगला, सुषुम्ना, वैखरी पद्धति द्वारा इस मनुष्य शरीर को ब्रह्ममय बनाता हुआ पूर्णत: ब्रह्माण्ड में लीन कर देता है, पूर्णत: आनन्द में लिप्त कर देता है, पूर्णत: सिद्धाश्रमयुक्त कर देता है।

और आगे चलकर कुछ विद्वानों ने इस बात को स्वीकार किया है कि ये श्लोक कोई तंत्र व्याख्या नहीं है, केवल यंत्र का चित्रण नहीं है अपितु ये श्लोक आयुर्वेद की दृष्टि से अन्यतम हैं क्योंकि भगवतपाद शंकराचार्य जहां एक ओर पूर्णत: तंत्रमय हैं, अद्वैतमय हैं, ब्रह्ममय हैं वहीं एक अद्वितीय चिकित्सक भी हैं, आयुर्वेदज्ञ भी हैं।

और वे जहाँ-जहाँ से निकलते हैं वहाँ-वहाँ वनस्पतियाँ स्वयं खड़े होकर, हाथ जोड़कर अपना परिचय, अपनी उपयोगिता, अपनी सफलता और इस मल-मूत्र भरे मानव देह को किस प्रकार से जीवित रखा जाए जिससे कि इसके अंदर उस ब्रह्म का निवास बना रह सके इस तथ्य की व्याख्या भी इस श्लोक में की गई है।

और सबसे अंत में विद्वान इस रहस्य को सही ढ़ंग से स्पष्ट नहीं कर सके कि इस श्लोक का प्रत्येक शब्द मंत्रमय है, इस श्लोक के प्रथम शब्द को लेकर चारों पंक्तियों के एक-एक वाक्य को लेकर मंत्र की रचना की जाए तो वह तंत्र का अद्भुत, अनिर्वचनीय मंत्र बन जाता है और इस मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति माया के बंधन से छूटकर पूर्णत: ब्रह्ममय बन जाता है।

मूल स्वरूप तो यह है कि मनुष्य माया के बंधन से मुक्त हो जाए। वह इस बात का भान रखे कि मेरे जीवन में न कोई माँ है, न कोई पिता है, न कोई भाई है, न कोई बंधु है, न सखा है, न कोई स्वजन है। मैं अकेला पिंड ही उत्पन्न हुआ हूँ और अकेला पिंड ही समाप्त हो जाऊंगा।
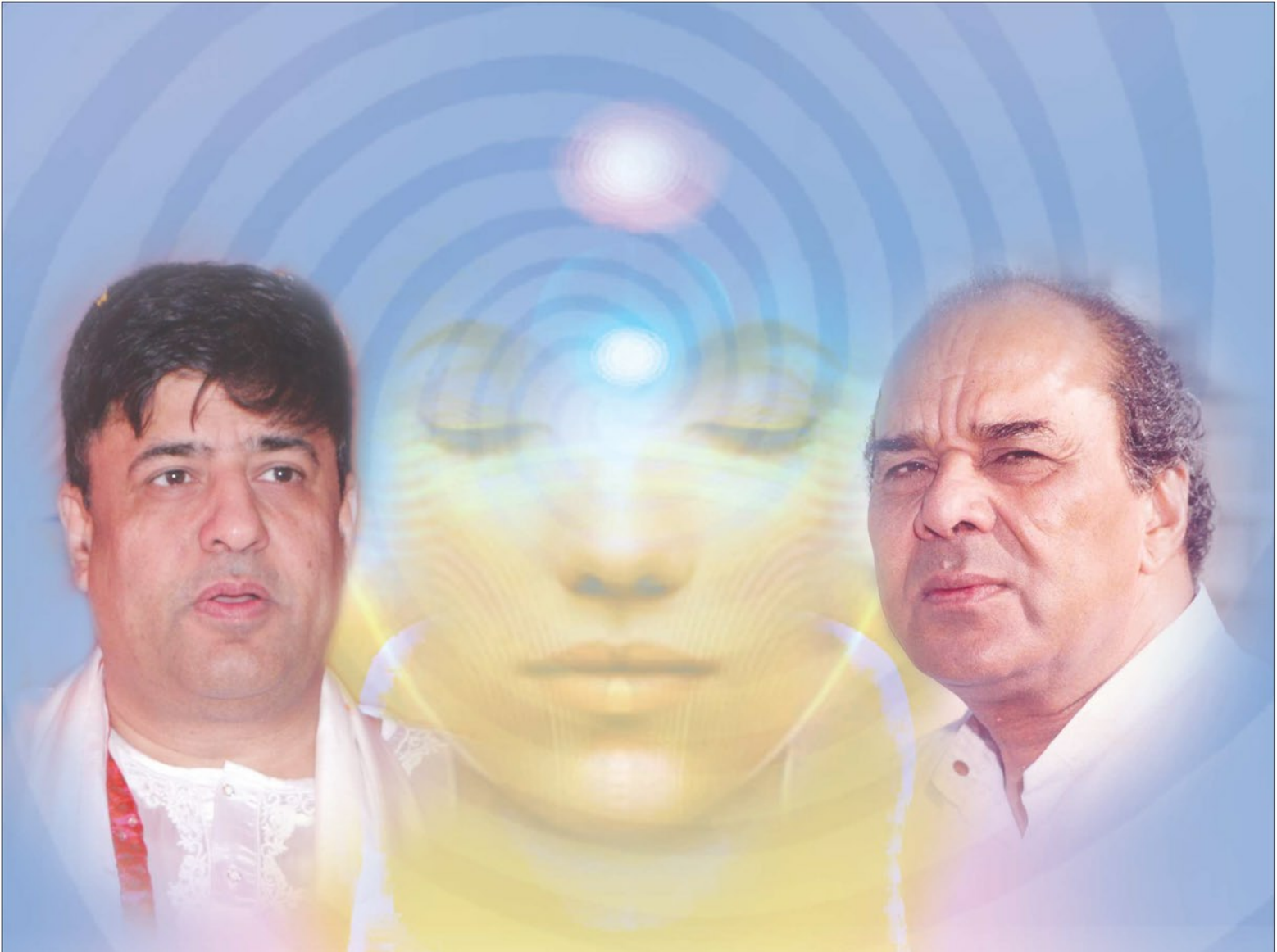
यह हो सकता है कि मैं किसी योनि में जन्म लूँ, यह हो सकता है कि मैं भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, गंधर्व आदि किसी प्रकार से विचरण करूँ। यह भी हो सकता है, कि मेरे प्राण का तत्व इस ब्रह्माण्ड में रहेगा या नहीं रहेगा और क्या–मैं सदेह सिद्धाश्रम को प्राप्त कर सकूँगा–ये कई प्रश्न मानव के मन में उभरते हैं।

और जो विद्वान हैं वे इसका अनुभव करते हैं, वे समझते हैं, वे इसकी व्याख्या करते हैं। परन्तु वे इस व्याख्या में सफल नहीं हो पाते।

इस दृष्टि से देखा जाए तो सौन्दर्य लहरी के एक-एक श्लोक पर एक-एक ग्रंथ लिखा जा सकता है और वृहदाकार ग्रंथ लिखने के अनंतर भी पंण्डित, विद्वान इस बात का ही निर्णय नहीं कर पाते कि क्या मैं जो कुछ कहना चाहता था वह कह भी पाया हूँ कि नहीं।

इन श्लोकों का आकार और आधार वृहद् दिखाई देता है और उन विद्वान को अपना अनुभव, अपना चिंतन और अपना अर्थ अत्यंत लघु प्रतीत होता है।

वास्तव में ही भगवतपाद शंकराचार्य ने इन श्लोकों की रचना ही नहीं की, अपितु इनके माध्यम से इस धारणा को भी पुष्ट किया कि द्वैत जैसी कोई स्थिति नहीं है। माया अलग चीज नहीं है। माया को परे हटाकर ब्रह्म को नहीं देखा जा सकता।

ब्रह्म को देखने की विधि केवल इतनी ही है कि वह माया से वेष्टित है और इस माया को परे हटाने के लिए इस वैखरी पद्धति का ध्यान करना आवश्यक है और साथ ही साथ जगत-जननी मां पार्वती के रूप का ध्यान अपने अंदर बसा लें, अपने

अंदर समाहित कर लें तो वह उसकी प्रथम सीढ़ी होगी, जिसके माध्यम से वह अंतिम सीढ़ी पर भी पहुंच सकेगा। वे चाहते थे कि एक-एक श्लोक का इस प्रकार सातों तरीकों से वर्णन-विवरण दूं परन्तु क्या इस प्रकार सामान्य भद्रजन इतने गोपनीय रहस्य को समझ पाएंगे, क्या वे इतने सरल तरीके से तंत्र को देख पाएंगे, क्या वे इतने सामान्य तरीके से इस ब्रह्म से माया को अलग करके अनुभव कर सकेंगे, क्या कोई आयुर्वेदज्ञ इन श्लोकों में निहित उन वनस्पतियों का अध्ययन कर सकेगा, जो कि इसमें सन्निहित हैं, क्या इन श्लोकों के माध्यम से योग की पूर्ण मीमांसा कर सकेंगे, जिसके माध्यम से मूलाधार से उठकर कुण्डलिनी सहस्रार तक पहुंचती है और क्या वे जीव और जगत, ब्रह्म और माया, देह और ईश्वरता, संसार और सिद्धाश्रम के भेद को अनुभव कर सकेंगे?

शायद ऐसा संभव न भी हो सके? इसलिए मुझे केवल भगवत पाद शंकराचार्य के प्रत्येक श्लोक का स्थूल वर्णन करने की क्रिया अपनानी पड़ी। यह पद्धति स्थूल होते हुए भी सूक्ष्म है और सूक्ष्म होते हुए भी स्थूल है। इन दोनों स्थितियों के बीच जब मनुष्य गतिशील होता है तब उसमें ज्ञान का उदय होता है, तब उसमें चेतना का प्रादुर्भाव होता है, तब वह इस बात को अनुभव कर सकता है कि मैं हाड़-मांस का सामान्य पुतला नहीं हूँ, मैं रक्त और नाड़ियों से उलझा हुआ कोई यंत्र नहीं हूँ अपितु मेरे अंदर एक विराटता छिपी हुई है–ऐसी ही विराटता जैसी भगवान कृष्ण ने गीता के अनन्तर अर्जुन को स्पष्ट रूप से दिखाई थी।

और वह विराटता प्रत्येक मनुष्य में निहित है। आवश्यकता है एक योग्य गुरु की। ऐसा गुरु जो इस बात को समझ सके, ऐसा गुरु जो इन सारी पद्धतियों का अध्ययन कर चुका हो, ऐसा गुरु जो इस श्लोक के एक-एक अनुनय की व्याख्या कर समझ सके, और समझा सके। ऐसा गुरु जो योग में भी पारंगत हो, वनस्पति में भी पारंगत हो, योग का भी अध्ययन किया हो, ब्रह्म और माया के तत्व को समझ चुका हो, और अपने-आप में ध्यान मुद्रा के माध्यम से इस माया को ब्रह्म में समाहित करने की क्रिया जानता हो।

मैं जानता हूँ कि ऐसा गुरु मिलना कठिन है, मैं जानता हूँ कि इन सभी तत्वों का अध्ययन एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, मैं यह भी जानता हूँ कि इनमें से प्रत्येक तत्व, प्रत्येक क्रिया विशाल और विराट है और एक व्यक्ति

यदि अपना पूरा जीवन योग में ही खपा दें, तंत्र में ही विसर्जित कर दे, ब्रह्म को ही समझने में लगा दे, तब भी वह एक जीवन में उसकी व्याख्या, और उसके अर्थ और उसके अनुनय और उसके चिंतन और उसकी प्रक्रिया को नहीं समझ सकेगा।

इसके लिए तो उसे कई जन्म लेने पड़ेंगे। और, एक-एक जन्म पूरा उस उस चिंतन में लगा देने के अनन्तर ही वह समझ सकेगा कि ब्रह्म और माया क्या है, जीव और जगत क्या है, जड़ और चेतन क्या है। तंत्र पद्धति के माध्यम से पूर्णता कैसे पाई जा सकती है। यंत्र का स्वरूप और उसकी व्याख्या क्या है,कायाकल्प की पद्धति और सिद्धाश्रम में गमन कैसे होता है, यह सब अत्यंत जटिल दुर्बोध और कठिन विषय है।

और वास्तव में ही एक जीवन में इन सारे वर्णनों का अध्ययन संभव नहीं है परन्तु फिर भी इन समस्याओं से कभी न कभी तो जूझना ही पड़ेगा, कभी न कभी तो इन समस्याओं का अध्ययन करना ही पड़ेगा, कभी न कभी तो कोई विद्वान् या पंडित या हंसावतार, कृष्णावतार या पूर्णावतार उत्पन्न हो सकेगा जो भगवतपाद शंकराचार्य के प्रत्येक श्लोक को भली प्रकार समझ सके।

और आज अधिकांश व्यक्ति स्थूल दृष्टि युक्त हैं, वे सूक्ष्म पद्धति की क्रिया को नहीं समझ पाते। और यह तब तक नहीं समझ सकते जब तक उन्हें अद्वितीय गुरु की प्राप्ति न हो जाए। और अद्वितीय गुरु प्राप्त होने के अनन्तर भी क्या वह गुरु की कृपा की प्राप्ति कर सकता है, क्या जो शास्त्रों में वर्णित है उसके अनुसार गुरु की सेवा कर सकता है, क्या वेदों में, पुराणों में, उपनिषदों में, श्रुतियों और चिंतनों में गुरु को एक विशाल आकार देते हुए जो सूक्ष्म चिंतन किया है क्या उस चिंतन तक एक मनुष्य पहुंचकर गुरु सेवा कर, उसकी कृपा कटाक्ष को प्राप्त कर सकता है।

यह आज के युग में लगभग असंभव सा है, कठिन है, क्योंकि व्यक्ति स्वयं इतना जटिल, इतना तनावग्रस्त, इतना बोझिल हो गया है कि वह इस खोल से बाहर निकलकर गुरु की खोज नहीं कर पाता। उस गुरु को नहीं प्राप्त कर सकता जो इन सब दृश्यों से सिद्धहस्त हो। उस गुरु की काया में प्रवेश नहीं कर सकता जिसके अंदर इतने रहस्यों और ज्ञान का सागर लहलहा रहा हो। और इतना धैर्य नहीं है, कि वह चकोर की तरह गुरु की आँखों में डूबकर उनके मुख से निसृत शब्दों और वाक्यों का पालन कर अपने जीवन को धन्य अनुभव कर सकता हो, छाया की तरह उनके साथ रह सकता हो, अपने-आपको उनमें विसर्जित कर सकता हो, उनको सही ढंग से समझ सकता हो और अपने आपको मिटाकर, अपने आपको विसर्जित कर गुरुमय हो सकता हो।

असंभव तो कुछ नहीं है कठिन अवश्य है। गौरी शंकर पर पांव रखना असंभव नहीं है परन्तु कठिन अवश्य है। आकाश को छूना और पृथ्वी की गहराई नापना असंभव नहीं है परन्तु कठिन अवश्य है। मानसरोवर की सुन्दर धारा में डुबकी लगाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है और जब तक वे गौरी-कुंड को समझ नहीं सकेंगे तब तक हिमालय को भी नहीं समझ सकेंगे, तब तक मानसरोवर को भी नहीं समझ सकेंगे, तब तक अपने अंदर जगत जननी के स्वरूप को धारण भी नहीं कर सकेंगे, तब तक उनके मन में ज्ञान का उदय भी नहीं हो सकेगा। और इसलिए विचरण करना असंभव नहीं है परन्तु उस ज्ञान को समाहित कर, ऐसे गुरु को ढूंढ कर

उसमें लीन हो जाने की क्रिया कठिन अवश्य है और जो इस क्रिया को सम्पन्न कर लेता है वह युग-पुरुष के समान हो जाता है। उसका जीवन अद्वितीय बन जाता है।

सौन्दर्य लहरी के दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध भाग आनन्द लहरी के नाम से विख्यात है तो दूसरा भाग सौन्दर्य लहरी के नाम से उजागर है। पहले भाग में भगवतपाद शंकराचार्य ने ब्रह्म और माया का विवेचन कर अपने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है कि अद्वैत ही जीवन का आधार है और व्यक्ति अपने शरीर को ही माया समझकर उसी में, ब्रह्म में समन्वय कर इन दोनों को एकाकार कर सिद्धाश्रम में पहुंच सकता है।

अंत में जीवन और जगत की लय सिद्धाश्रम में ही है, परंतु वहां तक जाना, जाकर वहां निवास करना और जाकर वापस लौटना अत्यंत दुष्कर है, ठीक उसी प्रकार से कि एक जड़ व्यक्तित्व संपूर्ण समुद्रों को अपने हाथों से तोल सके, तैरकर पार कर सके। परन्तु कुछ योगीजन ऐसा कर सके हैं। ऐसा वे कर सकते हैं जिनके पूर्वजन्म के पुण्यों का संचय होता है, ज्ञान और चेतना का सामंजस्य होता है। वे स्थूल काया में दिखाई देते हुए भी विराटता के साकार पुंज होते हैं।

इस क्रिया में उम्र नहीं देखी जाती और क्योंकि स्थूल उम्र तो मनुष्य अपनी बुद्धि और अपनी गणना के अनुसार समझ सकता है। परन्तु उसकी आध्यात्मिक आयु को समझना सबके बस की बात नहीं होती।

और जब तक व्यक्ति उस आध्यात्मिक आयु को नहीं समझ सकता, तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता, तब तक वह आनन्द भी नहीं ले सकता, तब तक वह जीवन के सौन्दर्य का पान भी नहीं कर सकता। और वह मल-मूत्र भरी देह को प्राप्त कर मल-मूत्र भरी देह में ही विसर्जित हो जाता है।

आनन्द लहरी में, जिसमें चालीस श्लोक हैं, उन श्लोकों में प्रभाललाद लहरी पद का प्रयोग तदर्थ रूप में किया गया है और भगवतपाद ने इस पिंड व्यक्ति की शक्ति, इस पिंडस्थ में संबंधित श्री चक्र, उसमें सन्निहित श्री विद्या की व्याख्या की है। यह वह विधि है जिसके माध्यम से षट चक्र भेदन हो सकता है और इसके अनंतर मातृकाओं के द्वारा परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी वाणी से, अनुभव करता हुआ इनके पारस्परिक संबंधों पर चिन्तन और विचार कर सकता है। क्योंकि ये क्रियाएँ ही कुण्डलिनी शक्ति के जागरण का आधार हैं।

और जब-तक कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत नहीं हो जाती तब तक व्यक्ति मल-मूत्र भरी देह से छूट भी नहीं सकता। और ऐसी क्रिया न होने पर भगवतपाद के अद्वैत सिद्धांत को भी नहीं समझा जा सकता है। अद्वैत सिद्धान्त ने जीव और ब्रह्म की एकरूपता को स्वीकार किया है। अद्वैत सिद्धांत ब्रह्म और माया की अपरोक्ष अनुभूति है जिन्हें समझाने का प्रयास किया है। और देखा जाए तो शंकराचार्य इन्हीं श्लोकों में रमे हैं। इन्हीं श्लोकों में अपने जीवन के निचोड़ को स्पष्ट किया है। इन्हीं श्लोकों के माध्यम से सृष्टि के उदय, पालन और अभ्युत्थान की क्रिया को समझाने का प्रयास किया गया है और इन्हीं श्लोकों के माध्यम से मनुष्य देह की पूर्णता को स्पष्ट रूप से व्याख्या कर अनुवय क्रिया स्पष्ट की है।

यह ठीक है कि यह चेतन सत्ता जड़ पद्धति का कार्य करती प्रतीत होती है, यह ठीक है कि मनुष्य

गतिशील होता हुआ दिखाई देता है, यह भी ठीक है कि उसे आलोचनाओं-प्रतिआलोचनाओं का सामना करना पड़ता है, उसको सुख-दुख, हर्ष-विषाद का समन्वय करना पड़ता है, और अधिकतर जो भ्रांतियुक्त व्यक्ति है और वह जीव जो भ्रांति में पड़ा होता है उसे बाहर निकालने के लिए किसी प्रकार से समर्थ नहीं होता। और ऐसा होने पर तो यह जीव पुन: जन्म ले लेता है, यह जीव फिर उसी अवस्था में रह जाता है जिस अवस्था में आज है। और इस प्रकार से तो कई जन्म उसे लेने पड़ सकते हैं।

और यही भगवतपाद ने पहली बार स्पष्ट रूप से अनुवय किया है, समझाया है, कि बिना गुरु के ज्ञान के, यह संभव नहीं है परन्तु उन्होंने संकोचवश ही सही गुरु की व्याख्या का अनुवय किया है, उन्होंने कहा कि देहधारी व्यक्तित्व पूर्ण गुरु नहीं हो सकता, उसके अंदर जो ज्ञान है परा, पश्यंति वैखरी का, जो परस्पर आलोड़न-विलोड़न है, जीव और जगत का समन्वय एवं श्री चक्र का चित्रण है, श्री विद्या का पूर्ण समन्वय है उसका उसे भान हो, और वह षट चक्र भेदन की विधि को पूर्ण रूप से जानता हो तभी वह गुरुत्व प्राप्त कर सकता है।

और यह भी स्पष्ट किया है कि आने वाले समय में विद्वान तो मिल सकते हैं, भाष्यकार भी मिल जाएंगे, परन्तु ऐसे गुरु नहीं मिल सकेंगे जिनमें यह सारा ज्ञान सम्मिलित हो। और वैसा गुरु मिलना असंभव सा ही होगा जो कायाकल्प की विधि को पूर्ण रूप से समझता हो, जो कायाकल्प के माध्यम से शरीर को अंगुष्ठवत बनाने कि क्रिया को जानता हो, जो शरीर को अंगुष्ठवत बनाकर सिद्धाश्रम पहुंच पाता हो। जहां पर हजारों-हजारों वर्ष आयु प्राप्त होगी, संन्यासी, भगवान श्री कृष्ण और प्रात: स्मरणीय भगवतपाद स्वामी सच्चिदानन्द जी के शरीर से निकलती हुई सुगंध की विराटता होगी, जहां सिद्धयोगा झील होगी, जहां पर सूर्य और चन्द्रमा का वश नहीं चलता, जो स्थान जन्म, जरा और मरण से परे होगा, जिसकी माटी अपने-आप में सुरभित और सौन्दर्यमयी होगी, और जो अदृश्य होते हुए भी दृश्यमान होगी, दृश्यमान होते हुए भी अदृश्य बनी रहेगी।

उसमें प्रवेश वही पिंड कर सकेगा जो भौतिक शरीर से भले ही एक स्थूल काया दिखाई दे, परन्तु उसके अंदर ये सारे तत्व संग्रहित होंगे, और फिर उस गुरु में इतनी चेतना होगी, इतनी सामर्थ्य होगी कि वह अपने शिष्य को अपने साथ ले जाने की क्रिया समझता होगा, और ले जाने की क्रिया को स्पष्ट कर सकता होगा।

आदमी प्रश्न करते हैं कि क्या ऐसे गुरु को समझा जा सकेगा, क्या ऐसे गुरु की कृपा प्राप्त की जा सकेगी, क्या ऐसे गुरु की कृपा-कटाक्ष को अनुभव किया जा सकेगा, क्या ऐसे गुरु से तादात्म्य स्थापित किया जा सकेगा, क्या व्यक्ति अपने-आपको पूर्ण गुरु में लीन कर सकेगा और क्या ऐसे गुरु और शिष्य दो शब्द अलग-अलग नहीं रहकर सिद्ध शब्द को पूर्ण परिभाषित कर सकेंगे?

शंकर यहाँ संशय ग्रस्त नहीं है अपितु उनके सामने एक प्रश्न चिह्न अवश्य लगा हुआ है कि ऐसा गुरु वही हो सकेगा जो हंसावतार होगा, जो एक विशेष उद्देश्य के लिए पृथ्वी लोक पर अवतरित हुआ होगा, जो मनुष्यों में मनुष्य, भौतिक व्यक्तियों में भौतिक, योगियों में योगी, राजाओं में राजसी और तपस्वियों में पूर्ण तपस्वी और योगी बनकर जीवित, जाग्रत, दृश्य और अदृश्य दिखाई दे सकेगा।

उसके जीवन में वे क्रियाएँ समन्वित होंगी जो एक गृहस्थ जीवन में आवश्यक हैं। पत्नी, पुत्र, बंधु-बांधव, धन, यश, मान, पद-प्रतिष्ठा में लीन होते हुए भी अलग खड़ा होने की सामर्थ्य रखता होगा जिस प्रकार से एक कमल कीचड़ में उत्पन्न होकर, जल में रहता हुआ भी जल से बिल्कुल अलग होता है। उस पर जल का बिल्कुल प्रभाव नहीं होता। ऐसा ही पुष्प देवताओं के मुकुट को सुशोभित करता है। स्पर्श कर सकता है। क्या ऐसा गुरु होने पर एक स्थूलकाय बुद्धिहीन शिष्य उस स्थूलकाय गुरु के अंदर पहुंचकर इन सभी आयामों को अनुभव कर सकेगा? क्या उसमें इतनी लालसा होगी, कि वह इन सारी क्रियाओं को समझने के लिए प्रयत्नशील होगा? क्या वह शिष्य हर्ष और विषाद से परे हटकर गुरु में एकात्म होता हुआ पूर्ण तपस्यारत हो सकेगा और अंत में ऐसा शिष्य क्या गुरु की लीलावस्था को जान सकेगा?

क्योंकि यह लीला देवताओं में भी दुर्लभ है, यक्षों, गंधर्वों, किन्नरों में भी कठिन है। इसीलिए गुरु को इन देवताओं से बहुत ऊपर माना है क्योंकि उनकी महिमा का वर्णन और विस्तार, विवेचन और क्रिया एक सामान्य मनुष्य नहीं कर सकेगा। और यदि वह नहीं कर सकेगा तो उस गुरु को कैसे पहचान सकेगा?

और यदि नहीं पहचान सकेगा तो वह इस मल-मूत्र, रक्त-मज्जा, थूक-लार से भरे हुए शरीर से अपने-आप को दूर कर, तटस्थ होकर एक किनारे खड़े होकर उस गुरु को कैसे पहचान सकेगा?

और यदि नहीं पहचाना गया, नहीं पहचान सकेगा, तो गुरु तो पूर्ण अवतार हैं ही। गुरु तो पूर्ण हंसावतार हैं ही। वे तो एक विशेष उद्देश्य को लेकर यदा-कदा पृथ्वी लोक पर आएंगे ही, और अपने कार्य को सम्पन्न कर पुन: किसी अन्य लोक में विचरण करने के लिए प्रस्थान करेंगे ही।

परन्तु ऐसा होने पर सामान्य मनुष्य के लिए हाथ मलने के अलावा क्या रह पाएगा, पछताने के अलावा उसके पास कौन–सी पूंजी रह पाएगी, दु:खी होने के अलावा उसके पास कौन–सी उपलब्धि हो सकेगी?

और वह फिर हजारों वर्षों तक प्रतीक्षा करने के बाद भी ऐसे गुरु को समझ सके, पहचान सके, उससे तादात्म्य कर सके, उससे एकाकार हो सके, उसमें अपने–आप को पूर्ण समन्वय कर सके, यह कठिन है।

और इसीलिए भगवतपाद शंकराचार्य के सामने प्रश्न चिह्न खड़ा होता है। और यहीं पर वे विचलित होते हैं, यहीं पर उनकी वाणी में एक थरथराहट अनुभव हुई है कि फिर ऐसे शिष्य और गुरु का समन्वय कैसे हो पाएगा?

क्योंकि शिष्य माया है और गुरु पूर्ण ब्रह्म है। उनका समन्वय नहीं होगा तो अद्वैत की स्थापना कैसे हो पाएगी? इस अद्वैत को कौन स्थापित कर पाएगा, इस अद्वैत को कौन समझा पाएगा, इस अद्वैत को किस प्रकार समझा जा सकेगा?

फिर भी शंकराचार्य विश्वास करते हैं कि पृथ्वी पर कोई न कोई शिष्य खड़ा होगा ही, कोई न कोई शिष्य समझने की प्रक्रिया करेगा ही, गुरु कोई न कोई शिष्य तो ढूंढ़ निकालेगा ही, कोई न कोई शिष्य तो एकात्म भाव स्थापित कर सकेगा ही, और जब ऐसा होगा तभी मेरी आत्मा अपने-आप में एक आनन्द अनुभव कर सकेगी।

और यहीं पर आनन्द लहरी का प्रादुर्भाव होता है, यहीं पर सौन्दर्य लहरी का आविर्भाव होता है और इन श्लोकों के माध्यम से वह जड़ से जगत, द्वैत से अद्वैत, माया से ब्रह्म, स्थूलता से सूक्ष्मता और मल-मूत्र भरी देह से सिद्धाश्रम से संपर्क स्थापित करने का गंभीर प्रयास करते हैं।

शंकराचार्य ने जगत-जननी उमा के सौन्दर्य का स्थूल वर्णन इस सौन्दर्य लहरी में कर मनुष्य जाति को जो अमूल्य अद्वितीय रत्न भेंट किया है उसके लिए यह लोक युगों-युगों तक उनको स्मरण रखेगा, उनके प्रति नत-मस्तक होगा।

मैं आपको पूर्ण आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने, शिष्यत्व को उच्चता की ओर अग्रसर करते हुए पूर्णत्व प्राप्त करें।

आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद

–पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

भगवान गणेश सभी देवताओं में प्रथम पूज्य देव हैं। इनके बिना कोई भी कार्य, कोई भी पूजा अधूरी ही मानी जाती है। समस्त विघ्नों का नाश करने वाले विघ्न विनाशक गणेश की यदि साधक पर कृपा बनी रहे, तो उसके धर में ऋद्धि–सिद्धि जो कि गणेश जी की ही पत्नियाँ हैं और शुभ–लाभ जो कि उनके पुत्र हैं, का भी स्थायित्व होता है। ऐसा होने से साधक के घर में सुख, सौभाग्य, समृद्धि, मंगल, उन्नति, प्रगति एवं समस्त शुभ कार्य होते ही रहते हैं। इस प्रकार का यंत्र अपने आप में भगवान गणपति का प्रतीक है, और इस प्रकार का यंत्र प्रत्येक साधक के पूजा स्थान में स्थापित होना ही चाहिये। बाद में यदि किसी प्रकार की कोई साधना के पूर्व गणपति पूजन करना हो, तो इसी यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर लेना पर्याप्त होता है। इस यंत्र का नित्य धूप आदि द्वारा करने की भी आवश्यकता नहीं है। मात्र इसके प्रभाव से ही घर में प्रगति, उन्नति की स्थिति निर्मित होने लगती है। धर में इस यंत्र का होना ही भगवान गणपति की कृपा का द्योतक है, सुख, सौभाग्य, शान्ति का प्रमाण है।

गणपति यंत्र महालक्ष्मी फल

विधि

इस यंत्र को प्राप्त कर गणपति चित्र के सामने हाथ जोड़कर

'गं गणपतये नमः'

का मात्र दस मिनट जप करें और गणपति से पूजा स्थान में यंत्र रूप में निवास करने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। अनुकूलता हेतु नित्य यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर नमस्कार कर दें।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका–सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क – 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

श्री पंचमी – 05.04 .22

ऋद्धि सिद्धि दायक

प्रयोग

आज प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में

सुख, सम्पन्नता एवं समृद्धि

प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी की आवश्यकता होती है

क्योंकि बिना इसके गृहस्थ जीवन चल ही नहीं सकता

जिसके भी जीवन में इसका अभाव है, वह दुखी चिंताग्रस्त जीवन जीने को मजबूर हो जाता है। लक्ष्मी की कृपा जीवन में प्राप्त हो, इसके लिए श्री पंचमी के दिन से या किसी भी बुधवार से इस साधना को प्रारम्भ कर अवश्य सम्पन्न करें। इस साधना को रात्रि को प्रारम्भ करें।

साधना सामग्री : मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठित श्री यंत्र, कमलगट्टे की माला

समय : रात्रि के नौ बजे के बाद, दिशा : उत्तर

अपने सामने चौकी पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुलाब की पंखुड़ियों पर श्री यंत्र स्थापित करें। यंत्र को जल से स्नान करायें। उस पर केसर या अष्टगंध से तिलक करें, पुष्प चढ़ायें। घी का दीपक जलायें, धूप जलायें। फिर गुरु मंत्र की एक माला करें। तत्पश्चात कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र का पांच माला जप करें-

मंत्र : **।। ॐ पदमावती पद्मनेत्रे लक्ष्मी दायिनी सर्व कार्य सिद्धि करि करि ॐ ह्रीं श्रीं पदमावत्यै नमः ।।**

यह ग्यारह दिन की साधना है, ग्यारह दिनों बाद एक कुंवारी कन्या को भोजन करायें एवं यथायोग्य दक्षिणा दें। श्री यंत्र को अपनी दुकान में या पूजा स्थान में रखें वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल है। इससे निरंतर उन्नति होती रहती है।

साधना सामग्री– 510

गुरु निखिल का ध्यान करें आह्वान करें

भस्म कर दें, सारे दोष दुर्भाग्य होलिका अग्नि में

गुरु समर्पण और दोष निवारण का तीव्र तांत्रिक प्रयोग

जो होली की रात्रि को सम्पन्न करना ही है

होली का पर्व रंग और उल्लास का पर्व तो है ही, उससे भी अधिक तांत्रोक्त साधनाओं और इस प्रकार से मिली सिद्धि की मस्ती से चूर होने का, आँखों के डोरे गुलाबी कर लेने का पर्व है...

क्योंकि शक्तिमान व्यक्ति की ही मस्ती वास्तविक मस्ती है और उसी का इठलाना किसी खोखलेपन से भरा नहीं होता...

...जब मैं जैसा चाहूँगा वैसा घटित हो ही, मेरा कोई विरोधी न हो, मेरी कोई अनायास क्षति न करे और मेरे जीवन में दरिद्रता न हो – यही कामना होती है, किसी भी सही साधक की और गृहस्थ से जुड़े हुए तंत्र के ज्ञाता की भी। तांत्रिक तो एक विशेषण है, तांत्रिक कोई वेशभूषा या अभिचारिक कर्मों का ज्ञाता मात्र ही नहीं, और इसके लिए साधक वर्ष भर प्रयासरत रहता ही है, व्याघ्र की तरह अवसर की प्रतीक्षा करता रहता है कि कब उचित क्षण आए और वह झपट्टा मारकर सफलता और सिद्धि प्राप्त कर सके।

जो साधना की मर्यादा समझते हैं, साधना का वास्तविक अर्थ समझते हैं,

और जीवन रो-झींक कर काट देना ही पर्याप्त नहीं समझते,

वे ही फिर आगे बढ़कर साधना में और उससे भी आगे बढ़कर तांत्रोक्त प्रक्रियाओं में संलग्न होने की क्रिया करते ही है।

एक श्रेष्ठ साधक को यह ज्ञात होता है कि तंत्र की कोई भी प्रक्रिया बिना यंत्रों एवं सही उपकरणों के पूर्ण नहीं होती, साधनात्मक शैली से संबंधित रहे, किसी भी पंथ या मत का इतिहास पलट कर देखा जाए तो उसमें एक से एक अनोखी वस्तुएं साधनात्मक उपकरणों के रूप में वर्णित मिलती हैं।

तंत्र का कोई ग्रंथ पलटकर देख लें, विचित्र प्रकार की वस्तुएं सामग्री के रूप में प्रयुक्त किए जाने का विधान मिलता है . . . कहीं शेर का नाखून तो कहीं मोर पंख की भस्म या ऐसे ही हैरत से और प्रायः जुगुप्सा से भरी वस्तुओं का विधान मिलता है। हमें कृतज्ञ होना चाहिए उन अनेक अज्ञात योगियों और मनस्वी पुरुषों का जिन्होंने ऐसी दुर्लभ सामग्री के स्थान पर यंत्र उत्कीर्ण करने के रहस्य खोजे, विधान रखे और तंत्र साधनाओं को गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी सुलभ कराया।

उसके पीछे उनका कोई स्वार्थ मूलक चिंतन नहीं था। उनका उद्देश्य, उनका लक्ष्य और उनकी मानसिक क्षुधा तो केवल किसी साधना विशेष का रहस्य जानने तथा उसका सरलीकृत रूप ढूंढने तक ही सीमित रहती थी, और शेष जो कुछ भी रहा वह स्वतः ही जनकल्याणार्थ उपलब्ध हो गया।

आज के युग में ऐसे यंत्रों की रचना और उनकी विधिवत प्रतिस्थापना का रहस्य केवल गिने-चुने व्यक्तियों को ही ज्ञात रह गया है, जिनके माध्यम से साधक न केवल अपनी इच्छित सिद्धि प्राप्त करता है वरन् जाने-अनजाने अपना बहुत कुछ उन यंत्रों पर आरोपित कर देता है। संभवतः श्रेष्ठ साधक भी इस तथ्य से परिचित नहीं होंगे, किन्तु यह एक वास्तविकता है कि जो यंत्र माला आदि व्यक्ति के प्राणों एवं शरीर से सम्पर्कित हो जाती है, वह शनैः शनैः दूषित भी होती जाती है, क्योंकि वह साधक के ऊपर आने वाली अनेक ज्ञात-अज्ञात विपदाओं के समक्ष ढाल बनकर खड़ी होकर, अपनी ऊर्जा का क्षरण तो करती ही है, साथ ही साथ साधक के द्वारा प्रतिदिन भौतिक जगत में किए जाने वाले व्यवहारों, झूठ, छल, व्याभिचार, नेत्र-दोष, मानसिक दोष का निराकरण भी अपनी तेजस्विता से करती जाती है।

यंत्र एवं मालाएं ताम्र पत्र के टुकड़े या बहुमूल्य पत्थर ही नहीं वरन देवता विशेष का यथार्थ प्रतिरूप ही होते हैं और इन प्रकारों से उनकी तेजस्विता पर आघात पहुँचता है।

ऐसे यंत्रों और मालाओं को स्थापित किए रहना अथवा धारण करना दोष युक्त माना गया है। तंत्र शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख है कि व्यक्ति जिस प्रकार अपने अन्य दोषों का परिष्कार करता रहता है, उसी प्रकार इन यंत्रों का भी परिष्कार होना चाहिए। यह दो प्रकार से संभव है, या तो व्यक्ति उसी यंत्र को पुनः शुद्ध कर नवीन ढंग से चैतन्यीकरण और प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न कराए अथवा नवीन यंत्र की स्थापना करे। प्रथम उपाय व्यय साध्य एवं जटिल है।

दोष युक्त यंत्रों के विसर्जन के लिए भी नियम संहिता बनाई गई है क्योंकि वह न केवल दिव्य वस्तु होती है वरन् उनके साथ-साथ व्यक्ति के पाप, दोष तंत्र प्रयोग इत्यादि भी जुड़ जाते हैं। जिस प्रकार मैल से भरे हुए कपड़े को जलाकर नष्ट करना ही स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित माना गया है उसी प्रकार इन यंत्रों आदि को भी शुद्ध करने के लिए उनके साथ-साथ अपने विविध कष्टों को भी समाप्त कर देने की उचित प्रक्रिया निर्मित की गई है।

होलिका दहन की रात्रि को होलिका दहन से कुछ पूर्व एक बड़े लाल कपड़े पर अपने सभी यंत्र एवं मालाओं को एकत्र कर उंगलियों पर एक सौ आठ बार गुरु मंत्र का उच्चारण कर और मानसिक संकल्प करके इस प्रयोग के द्वारा मैं अपने सभी इह जन्मकृत दोषों तथा समस्त अनिष्ट से मुक्ति पाने के लिए इन्हें होलिका की पवित्र अग्नि में समर्पित कर मुक्ति प्राप्त करने का आकांक्षी हूँ, एक पोटली सी बनाकर चुपचाप होलिका दहन के समीप जाकर उसकी एक परिक्रमा कर भेंट चढ़ा दें तथा बिना पीछे मुड़े एवं देखें सीधे घर आकर स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर अपने सामने पूज्य गुरुदेव का चित्र रख तथा ताँबे के पात्र में पाँच लघु नारियल रख गुरु मंत्र की पाँच माला मंत्र-जप पहले से प्राप्त नयी स्फटिक माला से करें एवं इन पाँच लघु नारियलों को घर के महत्वपूर्ण स्थानों यथा अन्न भंडार, व्यापार स्थल, पूजन स्थान, शयन कक्ष तथा एक घर के द्वार के समीप पीले कपड़े में बाँध कर स्थापित कर दें।

उपरोक्त सभी यंत्रों एवं मालाओं के साथ-साथ साधक की समस्त दुषितता भी अग्नि में जलकर नष्ट हो जाती है और एक रिक्तता उत्पन्न हो जाती है, ज्यों कोई बोझ हटने पर व्यक्ति दबाव मुक्त अनुभव करे। यह शून्य की स्थिति प्रायः व्यक्ति कुछ समय के लिए अस्वस्थता जैसा अनुभव करा सकती है लेकिन उससे चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं तथा उपरोक्त पाँच नारियलों की इसी उद्देश्य से पूजा की जाती है जिससे रिक्तता को तुरंत ही शुभ्रता से भरा जा सके। साधक इस अवसर पर निम्न दुर्लभ मंत्र जप अर्थात् एक सौ आठ बार उच्चारण करे जिसमें सम्पूर्ण होली साधना का रहस्य छुपा है -

मंत्र

|| ॐ निखिलेश्वराय नारायणाय
हृदयस्थ गुरुभ्यो नमः ||

उपरोक्त मंत्र जप व्यक्ति को इसी रात्रि में कर लेना चाहिए, जिससे कि वह समस्त सुख, वैभव प्राप्त करने के साथ-साथ तांत्रोक्त प्रयोगों दूषित प्रभावों से वर्ष भर के लिए मुक्त रहे।

साधना सामग्री : पाँच लघु नारियल, स्फटिक माला - 450/-

सुखी जीवन के लिये समस्त पापों का नाश अनिवार्य है

दोष चाहे पूर्व जन्म के हों या इस जन्म के

उन पर अंकुश आवश्यक है

तंत्र की श्रेष्ठ साधना

पापाकुंशा एकादशी

जिसे स्वयं भैरव ने भी सम्पन्न की थी

साधना में असफलता प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण कारण होता है

पूर्व जन्मकृत दोष

जिसे समापन के पश्चात् साधक साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकता है

निश्चय ही यह साधना एक श्रेष्ठ साधना है, जिसे सम्पन्न कर कोई भी साधक जिसे निरन्तर साधना में असफलता प्राप्त होती हो, वह निश्चय ही सफलता प्राप्त करता है। देखने में यह साधना आपको भले ही लघु प्रतीत हो रही हो, परन्तु कभी-कभी एक छोटी सी घटना भी पूरे जीवन को परिवर्तित करने में सक्षम होती है, एक छोटी सी गोली भी व्यक्ति को मृत्यु प्रदान करने में सक्षम होती है... फिर तो यह एक ऐसी साधना है, जिसके विषय में मात्र इतना ही कहा जा सकता है – 'देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर'

प्रत्येक जीवन विभिन्न योनियों से होता हुआ निरन्तर गतिशील रहता है।

हालांकि उसका बाहरी चोला बार-बार बदलता रहता है, परन्तु उसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा शाश्वत है, वह मरती नहीं है, अपितु भिन्न-भिन्न शरीरों को धारण कर आगे के जीवन क्रम की ओर गतिशील रहती है।

मानव योनि ही एक ऐसी योनि है, जिसमें वह अन्य कर्मों को सिंचित करता रहता है।

पशु आदि तो बस पूर्व कर्मों के अनुसार जन्म लेकर ही चलते रहते हैं, वे यह नहीं सोचते, कि यह कार्य मैं कर रहा हूं या मैं इसको मार रहा हूं।

अतः उनके पूर्व कर्म तो क्षय होते रहते हैं, परन्तु नवीन कर्मों का निर्माण नहीं होता, जबकि मनुष्य हर बात में 'मैं' को ही सर्वोच्चता प्रदान करता है...

और चूंकि वह प्रत्येक कार्य का श्रेय खुद लेना चाहता है, अतः उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना पड़ता है।

मनुष्य जीवन और कर्म

मनुष्य जीवन में कर्म का शास्त्रीय पद्धति में तीन भागों में बांटा गया है-

1. सिंचित, 2. प्रारब्ध, 3. आगामी (क्रियामाण)

'**संचित कर्म**' वे होते हैं, जो जीव ने अपने समस्त दैहिक आयु के द्वारा अर्जित किये हैं, और जो वह अभी भी करता जा रहा है।

'**प्रारब्ध**' का अर्थ है, जिन कर्मों का फल अभी गतिशील है, उसे वर्तमान में भोगा जा रहा है।

'**आगामी**' का अर्थ है, वे कर्म, जिनका फल अभी आना शेष है।

इन तीन कर्मों के अधीन मनुष्य अपना जीवन जीता रहता है, प्रकृति के द्वारा ऐसी व्यवस्था तो रहती है, कि उसके पूर्व कर्म संचित रहें, परन्तु दुर्भाग्य यह है, कि मनुष्य को उसके नवीन कर्म भी भोगने ही पड़ते हैं, फलस्वरूप उसे अनन्त जन्म लेने पड़ते हैं। परन्तु यह तो एक ही बहुत ही लम्बी प्रक्रिया है और इसमें तो अनेक जन्मों तक भटकते रहना पड़ता है।

जो कार्य जीव द्वारा अपने देह में होता है, उसे कर्म कहते हैं और उसके सामान्यतः दो भेद हैं - शुभ कर्म अर्थात् पुण्य तथा अशुभ कार्य अर्थात् पाप। शुभ कर्म या पुण्य वह होता है, जिसमें हम किसी को सुख देते हैं, किसी की भलाई करते हैं और अशुभ कर्म वह होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को संताप पहुंचता है।

...परन्तु एक तरीका है, जिससे व्यक्ति अपने छल, दोष, पाप को नष्ट कर सकता है, नष्ट ही नहीं कर सकता, अपितु भविष्य के लिए अपने अन्दर अंकुश भी लगा सकता है, जिससे वह आगे के जीवन को पूर्ण पवित्रता युक्त जी सके, पूर्ण दिव्यता युक्त जी सके और जिससे उसे फिर से कर्मों के पाश में बंधने की आवश्यकता नहीं पड़े।

साधना : एकमात्र मार्ग

...और एक तरीका, यह मार्ग है साधना का, क्योंकि साधना का अर्थ ही है, कि अनिश्चित स्थितियों पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर अपने जीवन को पूरी तरह साध लेना, इस पर पूरी तरह से अपना नियंत्रण कायम कर लेना।

यदि यह साधना तंत्र मार्ग के अनुसार हो, तो इससे श्रेष्ठ तो कुछ हो नहीं सकता, इससे उपयुक्त स्थिति तो और कोई हो ही नहीं सकती, क्योंकि स्वयं शिव ने **'महानिर्वाण तंत्र'** में पार्वती को तंत्र की विशेषता के बारे में समझाते हुए कहा है-

कल्किल्मध दीनानां द्विजातीनां सुरेश्वरि।
मेध्या मेध्य विचाराणां न शुद्धिः श्रौतकर्मणा।।
न संहिताद्यैः स्मृतिभिरष्टासिद्धिर्नृणां भवेत्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते।।
विनाह्यागम मार्गेण कलौ नास्ति गतिः प्रिये।
श्रुतिस्मृतिपुराणादि मयेवोक्तं पुरा शिवे।।
आगमोक्त विद्यानेन कलौ देवान्यजेत्सुधीः।।

हे देवी ! कलि दोष के कारण ब्राह्मण या दूसरे लोग, जो पाप-पुण्य का विचार करते हैं, वे वैदिक पूजन की विधियों से पापहीन नहीं हो सकते। मैं बार-बार सत्य कहता हूं, कि संहिता और स्मृतियों से उनकी आकांक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। कलियुग में तंत्र मार्ग ही एकमात्र विकल्प है। यह सही है, कि वेद, पुराण, स्मृति आदि भी विश्व को किसी समय मैंने ही प्रदान किए थे, परन्तु कलियुग में बुद्धिमान व्यक्ति तंत्र द्वारा ही साधना कर इच्छित लाभ पाएगा।

इससे स्पष्ट होता है कि तंत्र साधना द्वारा व्यक्ति अपने पापपूर्ण कर्मों को नष्ट कर भविष्य में उनसे बंधन मुक्त हो सकता है।

पापाकुंशा साधना

ऐसे ही एक साधना है पापाकुंशा साधना, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दोषों को - चाहे दरिद्रता हो, अकाल मृत्यु हो, बीमारी हो या चाहे और कुछ हो, उसे समाप्त कर सकता है और अब तक के संचित पाप कर्मों को नष्ट करता हुआ भविष्य के लिए भी उनके पाश से मुक्त हो जाता है।

यह साधना अत्यधिक उच्च कोटि की है और बहुत ही तीक्ष्ण है। चूंकि यह तंत्र साधना है, अतः इसका प्रभाव शीघ्र देखने को मिलता है।

यह साधना तीन दिवसीय है। इसे पापाकुंशा एकादशी दिनाक 28.03.22 या किसी भी एकदशी से प्रारम्भ करना चाहिए। इसके लिए **'समस्त पाप-दोष निवारण यंत्र'** तथा **'हकीक माला'** की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद धोती धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठना चाहिए और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर **'समस्त पाप दोष निवारण यंत्र'** स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन सम्पन्न करना चाहिए। 'मैं अपने सभी पाप-दोष समर्पित करता हूं, कृपया मुझे मुक्ति दें और जीवन में सुख, लाभ, सन्तुष्टि प्रसन्नता आदि प्रदान करें'- ऐसा कहने के साथ यदि कोई अन्य इच्छा विशेष हो, तो उसका भी उच्चारण कर देना चाहिए। फिर **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करना चाहिए-

मंत्र

।। ॐ क्लीं ऐं पापनि शमन नाशय ॐ फट्।।

यह मंत्र अत्यधिक चैतन्य है और साधना काल में ही साधक को अपने शरीर का ताप बदला मालूम होगा, परन्तु भयभीत न हों, क्योंकि यह तो शरीर से उत्पन्न दिव्याग्नि है, जिसके द्वारा पाप राशि भस्मीभूत होती है। साधना समाप्ति के पश्चात् साधक को ऐसा प्रतीत होगा, कि उसका सारा शरीर किसी बहुत बड़े बोझ से मुक्त हो गया है, स्वयं को वह पूर्ण प्रसन्न एवं आनन्दित महसूस करेगा और उसका शरीर फूल की भांति हल्का महसूस होगा।

जो साधक अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि जब तक पाप कर्मों का क्षय नहीं हो जाता, व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति जागृत हो ही नहीं सकती और न ही वह समाधि अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

साधना के उपरान्त यंत्र तथा माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और व्यक्ति समस्त दोषों से मुक्त होता हुआ पूर्ण सफलता अर्जित कर, भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों मार्गों में श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

साधना सामग्री- 450/-

वेदसारशिवस्तवः

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।

जटाजूटमध्ये स्फुरद् गंगवारि
महादेव मेकं स्मरामि स्मरामि।।

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं ,
सदानन्दमीड्ये प्रभुं पञ्चवक्त्रम्।।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगम्
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्।।

शिवाकान्त शम्भो शशांकार्धमौले
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।

त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपं
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूपम्।।

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकार ओंकारवेद्यम्।

यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्।।

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु-
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यारिति मूर्तिस्त्रिमर्तिं तमीड्ये।।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।

तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्।।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य।।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेशं त्रिनेत्र।
शिवाकन्त शांत स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः।।

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-
स्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि।।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिगांत्मक हर चराचरविश्वरूपिन्।।
इति श्रीमच्छङराचार्यकृतो
वेदसारशिवस्तवः सम्पूर्णः।।

महाशिवरात्रि *के दिन प्रातः भगवान शिव के समक्ष उपरोक्त स्तोत्र का 5 पाठ करें।*

दिव्य आनन्द और उल्लास का पर्व

और तुम्हें आना ही है....

21 अप्रैल शिष्य के लिये पावनतम पर्व है। यह हर्ष एवं उल्लास का पर्व है जिस दिन हमारे सद्‌गुरुदेव इस पृथ्वी ग्रह पर पधारे। देह रूप में माया फैलाई, लीला की शुरुआत की, धर्म की पुनर्स्थापना की शुरुआत की और मंत्र साधना को पुनर्जीवित किया। साधक-शिष्यों को यह अहसास कराया कि तुम शेर हो और साधना के बल पर अपने 'स्व' का जागरण किया और फिर कोटि-कोटि हृदयों में विराजमान हो गये।

सद्‌गुरुदेव के शब्दों में, ''मुख्य बात तो यह है कि तुम वह स्वरूप स्वयं साक्षात् कर लो, उस स्वरूप का दर्शन प्राप्त कर लो जिसे निहारने के बाद समाधि कोई पृथक भावभूमि रह ही नहीं जाती।'' गुरु से मिलना, ऐसा ही साक्षात् करने का क्षण होता है और वे क्षण दिव्यता, आनन्द और समाधि के क्षण ही होंगे, जिन्हें किसी परिभाषा से नहीं बांधा जा सकता। न वह निर्विकल्प होती है, न सविकल्प, यह तो जड़ समाधि की स्थितियाँ हैं। किन्तु यह स्थिति तो प्रत्येक जड़ता से सजीवता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है, एक घटना है।

21 अप्रैल वस्तुतः हमारे लिए नूतन जन्म लेने का पर्व है क्योंकि ऐसे क्षणों में गुरु आतुर रहते हैं अपने शिष्यों को नया रूप देने के लिए, उन्हें सब कुछ प्रदान करने के लिए एवं अपने शिष्यों के हृदय में स्वयं समाहित होने के लिए।

यही है गुरु-शिष्य का सम्बन्ध जो कि संसार के किसी भी सम्बन्ध से ज्यादा पवित्र होता है अतः इस बार आप को मिलना है, सिर्फ शब्दों से नहीं। सिर्फ कहने मात्र को नहीं। तुम्हारा मिलना सार्थक हो सके इसके लिए गुरु को अपने हृदय में उतारना है। गहराई तक समर्पित कर देना है, उसी तरह जैसे नदी तेजी से बहती हुई सागर में विलीन हो जाती है, तब वह समुद्र बन जाती है। जब हम अपने स्व को विलीन करेंगे तो समुद्र बन सकेंगे। ऐसा नहीं है कि तुम प्रयास नहीं करते, तुम प्रयास तो करते हो परन्तु इस बार थोड़ी और क्षमता से प्रयास करो और मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम्हारे प्रयास को सार्थक करने के लिए।

यह दिवस तो प्रेम का दिवस है। यह अमृत दिवस है। इस दिवस के साथ, आप शिष्यों की धड़कनें जुड़ी हुई

21 अप्रैल सद्‌गुरुदेव अवतरण दिवस महोत्सव

और फिर आ गया 21 अप्रैल जो शिष्यों और साधकों के लिए दीवानगी का दिवस है

इन्तजार रहता है
उन्हें इस दिन का कि कब यह दिवस आये और
हम हुलस कर गुरु के चरणों में पहुँच जायें।
क्योंकि यह दिवस एक अद्वितीय व्यक्तित्व के
अवतरण का दिवस है

और गुरु तो इन क्षणों में बाहें फैलाये इन्तजार करते ही रहते हैं शिष्यों का..........

हैं। यह दिवस अपने भावों को प्रकट करने का दिवस है और यह पवित्र दिवस हमारे लिए जीवन का सर्वश्रेषठ दिवस है। जहाँ यह होली के रंगों से पूर्णता लिए हुए है तो दीपावली के दीपों से एवं साधना की दिव्यता से युक्त है तो राम की मर्यादा से एवं भगवान कृष्ण की प्रेम दृष्टि से आप्लावित है। यही कारण है कि योगियों एवं संन्यासियों ने इस दिवस को महोत्सव के नाम से विभूषित किया है।

अतः इस दिन हम सब एकत्र होकर सद्‌गुरुदेव का आवाहन करेंगे। उनकी प्रसन्नता के लिए मंत्रों के माध्यम से संकल्प लेंगे और विश्वास दिला देंगे, सद्‌गुरु नारायण के इस अवतरण दिवस पर, कि आप द्वारा प्रवाहित ज्ञान गंगा की धारा आज भी अविरल रूप से तीव्र गति से प्रवाहमान है।

सद्‌गुरुदेव ने कहा था, ''मेरी उपस्थिति को तुम्हें मंगलमय बनाना है तो मेरी अनुपस्थिति को भी मंगलमय बनाने की कला सीखो, तुम मेरी आशा हो, मेरा स्वप्न हो, मेरा चिंतन हो। मैं रहूँ या न रहूँ इसकी चिन्ता न करो, तुम मुझे स्मरण करो मैं हर क्षण तुम्हें पीछे खड़ा तैयार मिलूँगा।

तुम्हारे इस शरीर में कुछ भी सार नहीं है। यह मल-मूत्र, विष्ठा, लार, थूक से भरा है। तुम इसमें मुझे आत्मसात कर लो, मैं इसे स्वर्णिम बना दूँगा। तुम मुझे अत्यधिक प्रेम करते हो, इसका मुझे अहसास है तभी तो मैं निश्चिन्त हूँ, बस तुम्हें परिश्रम, समर्पण के साथ निडर होकर मेरे बताये मार्ग पर चलते रहना है।

यह आमंत्रण उन सभी शिष्यों के लिए है, जिन्होंने सद्‌गुरुदेव के ज्ञान को समझा है, जिन्होंने गुरुदेव को अपने हृदय कमल पर स्थापित किया है, जिन्होंने सद्‌गुरुदेव की वाणी सुनी है वह रुक ही नहीं सकता क्योंकि यह दिवस गुरु और शिष्य का आत्मीय मिलन का दिवस है, साधना की ऊँचाइयों को स्पर्श करने का दिवस है। इस दिवस से सभी शिष्यों की धड़कनें जुड़ी हुई हैं।

पूरे भारतवर्ष के साधक एक स्थान पर इकट्ठे होकर मनायेंगे यह महोत्सव और होगा नृत्य, संगीत, भजन, आनन्द और मस्ती और इन सबके साथ गंगा के तट पर गढ़मुक्तेश्वर स्थित टिगरी धाम में हर-हर महादेव की गूंज।

इस बार सिद्धाश्रम साधक परिवार गजरौला के शिष्य आपको आमन्त्रित कर रहे हैं और पलकें बिछाये आप सभी गुरु भाइयों का इन्तजार कर रहे हैं कि आप आयें और हमारे साथ मिलकर मनायें अपने सद्‌गुरुदेव के इस अवतरण दिवस के उल्लास पर्व को।

शिविर स्थल

रमाबाई राजकीय महाविद्यालय ग्राउण्ड, इन्दिरा चौक, गजरौला, जिला–अमरोहा

शिविर स्थल गजरौला रेलवे स्टेशन/बस स्टैंड से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

टिगरी धाम – यहाँ कार्तिक पूर्णिमा पर मेला लगता है। इस अवसर पर यहाँ लाखों लोग स्नान करते हैं। यह स्थान शिविर स्थल से मात्र 7-8 किलोमीटर दूर है। यह वही पुण्य स्थान है जहाँ पर 20 अप्रैल को पूज्य गुरुदेव सहस्त्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा, गुरु रक्त कण-कण स्थापन दीक्षा एवं अन्य शक्तिपात दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

यहाँ साधकों को ले जाने की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई है। गजरौला दिल्ली से 100 किलोमीटर की दूरी पर है जो कि दिल्ली-गाजियाबाद-गजरौला-मुरादाबाद रूट पर स्थित है।

घमंड से पतन की ओर

कितना घमंड है ? आज के इंसान को। क्या समझता है खुद को ? आखिर किस बात का घमंड है इंसान को ?

उसे जीवन में अगले क्षण का पता नहीं है कि क्या होने वाला है।

- सुन्दरता का घमंड-एक मामूली दुर्घटना में दो मिनट में ही इंसान की सुन्दरता गायब हो जाती है। वो रोगी बन जाता है। चमड़ी देखने लायक नहीं होती।
- शरीर पर घमंड-उम्र के साथ-साथ शरीर ढलता जाता है और आप कुछ नहीं कर सकते या जब इंसान को लकवा हो जाता है तब तो खुद उठ नहीं सकता, हिल नहीं सकता। बार-बार उसे सहारे की जरूरत पड़ती है। तब कहाँ जाता है, उस शरीर का घमंड।
- पैसे का घमंड-दो मिनट में इंसान का व्यापार ठप्प हो जाता है या किन्हीं वजहों से उसके आय के साधन समाप्त हो जाते हैं। वक्त कब आपको पाई-पाई के लिए दूसरों पर आश्रित बना दे, पता नहीं।
- औलाद का घमंड-बेटा हो या बेटी कब कोई ऐसा कदम उठा ले कि आपका अहंकार धरा का धरा रह जाए। कब वह आपको छोड़कर चला जाए या आपकी संग्रह की गई सम्पत्ति का सिर्फ अपने ऊपर कैसे दुरुपयोग करेगा, कुछ मालूम नहीं।
- सत्ता का घमंड-सत्ता कभी भी पलट सकती है। आप किसी भी समय हीरो से जीरो हो सकते हो। आपके साथ चलने वाले आपकी हाँ में हाँ मिलाने वाले दो ही पल में पलटी मार देंगे। फिर सत्ता नहीं तो क्या करोगे फिर भी इंसान को इतना घमंड क्यो...?

इंसान क्या लेकर आया था, क्या लेकर जाएगा, कुछ भी नहीं। खाली हाथ ही जाएगा, कोई साथ नहीं जाएगा।

एक सुई तक भी साथ नहीं जाएगी। बस जाते हैं तो आपके द्वारा किये गये अच्छे कर्म, आपकी मंत्र साधना, आपका तप, आपका अच्छा व्यवहार जिससे कभी आप किसी अन्य के चेहरे पर खुशी दे सके हों। अतः

- छोड़ दें - दूसरों को नीचा दिखाना।
- छोड़ दें - दूसरों की सफलता से जलना।
- छोड़ दें - दूसरों के धन से जलना।
- छोड़ दें - दूसरों की निंदा करना।
- छोड़ दें - दूसरों की सफलता पर ईर्ष्या करना।

ये सब मिथ्या है।

।। पश्य मे परम रूपम्।।

त्रिवेणी का महाश्मशान

इसके पूर्व आपने पढ़ा-

त्रिवेणी के प्रसिद्ध मुकुन्द देव घाट पर पं. भोलानाथ कंठाभरण तथा जगन्नाथ पंडित के मध्य अनवरत सात दिन तक शास्त्रार्थ चलता रहा

इस शास्त्रार्थ में जगन्नाथ पंडित को पराजय स्वीकार करनी पड़ी, उन्हें मर्मान्तक कष्ट पहुंचा और उन्होंने प्राण त्याग करने का निश्चय कर लिया। जगन्नाथ पंडितके शिष्य रामदास ने उन्हें ऐसा करने से रोका, किन्तु जगन्नाथ पंडित ने रामदास से कहा – 'तुम मेरे पुत्र को महाविद्या काली, तारा सिद्ध करने के लिए शव साधना कराओ और इसी घाट पर भोलानाथ कंठाभरण को जब वह परास्त करेगा, तभी मेरी आत्मा को शाति प्राप्त होगी,'' इसके बाद जगन्नाथ पंडित ने रामदास को कुछ विशिष्ट मंत्र प्रदान किए और शरीर त्याग दिया।........(इसके आगे पढ़िये)

सप्तग्राम भारतवर्ष का अन्यतम प्राचीन शहर और बन्दरगाह था। समुद्रगामी जहान सप्तग्राम पहुंचने के पहले त्रिवेणी में विश्राम लेते थे। सोलहवीं शताब्दी तक सप्तग्राम एक विशिष्ट वाणिज्य केन्द्र था। 1240 ई. से गंगा नदी की गति में परिवर्तन से सरस्वती नदी कीचड़ और बालू में परिवर्तित हो सूखती चली गई, इसलिए सरस्वती के तट पर अवस्थित सप्तग्राम का व्यवसाय-वाणिज्य समाप्त हो गया। फलस्वरूप त्रिवेणी की आर्थिक प्रगति में विराम लग गया।

इससे त्रिवेणी के ज्ञान-प्रसार क्षेत्र में उसकी प्रभुता में जरा भी अवनति नहीं हुई। उस समय भी त्रिवेणी में 30 के करीब ब्राह्मणों के चतुस्पाठी थे, जहां दूर-दूर से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने को आया करते थे। उस समय विद्या शिक्षा व शिक्षण पूर्ण कर पंडित दिग्विजय को निकल पड़ते। जीतने पर उन्हें दिग्विजयी पंडित की आख्या प्राप्त होती। पंडितों के लिए यह सम्मान एक चक्रवर्ती सम्राट होने के सम्मान से कम नहीं था।

त्रिवेणी के मुकन्द देव घाट के उत्तर में श्मशान है, उसे लोग **'त्रिवेणी'** के महाश्मशान के नाम से जानते हैं। इस महाश्मशान के सम्बन्ध में बहुकाल से लोक परम्परा के रूप में अलौकिक घटनाएं लोगों में प्रसिद्धि प्राप्त करती आ रही है।

उपयुक्त समय आने पर ब्राह्मणी को पुत्र की प्राप्ति हुई। रामदास अब तब साधक बन चुका था। वहगुरु के आदेश-पालन के लिए व्रती हुआ। शिशु के लालन-पालन में वह अपना अधिकतर समय व्यतीत करता, वह शिशु को लेकर श्मशान जाता। धधकती चिता के सामने जब आग की तपन सेक कर किसी शव की टांग ऊपर उठ जाती, तो शव जलाने वाले बांस की लट्ठ से उन्हें मार कर, टांग को घुटने से तोड़कर पुनः अग्नि को समर्पित कर देता। शिशु इस दृश्य को विस्मय से देख किलकारियां भरता।

त्रिवेणी का महाश्मशान, चारों तरफ गंदगी का असह्य परिवेश। यत्र-तत्र टूटी-फूटी पड़ी मानव हड्डियां, अधजली लकड़ियां, राखों के ढेर, रंग-बिरंगे चिथड़े, सूप, झाड़ू और हवा के झोंकों के साथ आती सड़ान्ध की बदबू।

इस महाश्मशान में कोई न कोई शव जलता ही रहता। जलते शवों से दूर झाड़-झंखाड़ों में उल्लू, चील और गिद्धों की टकटकी लगाती भूखी नजरें, दूर के खेतों से सियारों का क्रन्दन।

बचपन से ही गुरु-पुत्र को रामदास ने श्मशान के इस भयानक परिवेश का अभ्यस्त बना दिया था। जब शिशु कुछ बड़ा हुआ तो रामदास स्वयं श्मशान में उकडू हो शिशु को अपनी पीठ पर बिछा, उसे 'काली' नाम का जप कराने लगा। उस छोटी सी उम्र में ही वह गुरु-पुत्र के मनमें श्मशान-भीति को समाप्त कर चुका था।

समय गुजरता गया। शिशु अब बालक बन चुका था। रामदास ने बालक का उपनयन संस्कार सम्पन्न करा, उसे उसके पिता के साथ घटी घटना को सविस्तार बताकर उसे सिद्धि के लिए अमावस्या की एक रात्रि को बालक को लेकर त्रिवेणी के महाश्मशान के लिए प्रस्थान किया, उस दिन दोनों ने ही उपवास रखा था।

आकाश गर्जन कर रहा था। जोरों की वृष्टि हो रही थी। प्रबल वेग से वायु बहने लगी, रामदास इसकी परवाह न कर, पूजा की वस्तुएं व गुरु-पुत्र को संग ले महाश्मशान में उपस्थित हुआ। रामदास अनुभव कर रहा था, कि अशरीरी छाया घर से प्रस्थान करने से महाश्मशान पहुंचने तक उसके आगे-आगे उसका पथ-निर्देशन कर बढ़ती जा रही थी। गुरु की अशरीरी उपस्थिति से उसका उत्साह दूना बढ़ गया, उसने

बचपन से ही गुरु-पुत्र को रामदास ने श्मशान के इस भयानक परिवेश का अभ्यस्त बना दिया था। जब शिशु कुछ बड़ा हुआ तो रामदास स्वयं श्मशान में उकडू हो शिशु को अपनी पीठ पर बिछा, उसे 'काली' नाम का जप कराने लगा। उस छोटी सी उम्र में ही वह गुरु-पुत्र के मनमें श्मशान-भीति को समाप्त कर चुका था।

महामंत्र का जप अविराम चलता रहां बालक को भयभीत करने के लिए सर्प, बाघ, भालू, भूत-प्रेत, पिशाच-डाकिनी, भैरवी, योगिनी एक-एक कर सभी आए, व्यर्थ हो वापिस चले गए। बालक ने रामदास के निर्देशानुसार उन पर जरा भी कर्णपात नहीं किया।

गुरु को मन ही मन प्रणाम किया।

त्रिवेणी के महाश्मशान में उपस्थित हो रामदास फिर शास्त्रमत से पूजा की व्यवस्था में जुट गया। कुछ ही दूरी पर एक चिता की अधजली लकड़ियां चटख रही थी।

रामदास ने पहले गुरु की स्तुति की –

ॐ नमस्तुभ्यम् महामंत्र दायिने शिव रूपिणे।
ब्रह्मज्ञान प्रकाशाय संसार–दुःख तारिणे।।
अति सौम्याय दिव्याय वीराय मोहान्ध हारिणे।
नमस्ते कुलनाथाय कुल कौलिन्य दायिने।।
शिव तत्त्व–प्रबोधाय ब्रह्मतत्त्व–प्रकाशिने।
नमस्ते गुरवे तुभ्यम् साधकाभय दायिने।।
अनाचाराचार भाव–बोधाय भाव हेतवे।
भावाभव हि निर्मुक्त–मुक्तये गुरवे नमः।।

(महामंत्र दाता, ब्रह्म ज्ञान के प्रकाशक, संसार दुःख के निवर्तक, अतिसौम्य, दिव्य व वीर रूपी अज्ञान–निवर्तक शिव रूपी गुरुदेव को नमस्कार। साधकों के अभयदाता, अनाचार व आचार भाव के उपदेष्टा, दिव्यादि भाव के हेतु, भावातीत मूरत गुरुदेव को नमस्कार)

रामदास ने इसके बाद सिद्धि–स्थान की रक्षा के लिए मंत्र पढ़ा, इसके बाद पूजन कर उसने बालक के कान में महामंत्र पढ़ा, तथा उसे उत्साहित करने लगा। फिर उसने पेट के बल सो रहे बालक को अपनी पीठ पर बैठा, उसे महामंत्र जप करने को कहा तथा स्वयं कुछ विशिष्ट क्रिया सम्पादित कर देह त्याग दिया, रामदास का शरीर शांत हो गया। बालक जरा भी भयभीत न हो रामदास की पीठ पर बैठा महामंत्र का जप करता ही रहा।

महामंत्र का जप अविराम चलता रहां बालक को भयभीत करने के लिए सर्प, बाघ, भालू, भूत–प्रेत, पिशाच–डाकिनी, भैरवी, योगिनी एक–एक कर सभी आए, व्यर्थ हो वापिस चले गए। बालक ने रामदास के निर्देशानुसार उन पर जरा भी कर्णपात नहीं किया।

शून्य से किसी रमणी की केशराशि नीचे गिरी और फिर शून्य से ही शव का गलित मांस गिर वातावरण को दुर्गन्धमय व अनिष्ट कर दिया, किन्तु बालक उसी तरह रामदास के शव पर बैठे महामंत्र का जप करता रहा।

इसके बाद कोई नारी उसकी मां का रूप धारण कर प्रकट हुई और बालक को महामंत्र का जप करने से निषेध कर, उसे गृह वापिस लौटने के लिए अनुनय करने लगी, किन्तु रामदास के निर्देशानुसार बालक ने उसकी बातों पर जरा भी कर्णपात नहीं किया।

इसी तरह के व्यवधानों के मध्य बालक अविचलित हो महामंत्र का जप करता रहा। कठोर साधना से उसे कोई भी डिगा नहीं सका। अंत में रात्रि के तृतीय प्रहर की समाप्ति हुई। शुक्रतारा के उदय होने का समय हुआ। सहसा पूर्व दिशा से अरुणोदय के समान मृदुमन्द मलय पवन बहने लगी। महाश्मशान के दुर्गन्धमय वातावरण में वसन्त का प्रवेश हुआ। कहीं से 'पिक' की ध्वनि आयी, निकट ही भ्रमर गुंजन करने लगे। बालक ने हठात् पूर्व के आकाश में एक नील कादम्बिनी को उदय होते देखा। सहसा कादम्बिनी के मध्य से कोटि सूर्य समुज्ज्वल या कोटि चन्द्र सुशीतल अपूर्व मनोरम ज्योति नदी में से धीरे-धीरे प्रकट हुई। बालक को उस समय तक दिव्य ज्ञान प्राप्त हो चुका था, वह उठ कर मां के चरणों में लौट गया।

जगतजननी ने बालक को वर मांगने का आदेश दिया। बालक ने पहले रामदास को वर देने का अनुरोध किया। इस पर जगदम्बा ने कहा-'पुत्र ! जो मर गया है, वह कैसे वर लेगा ?'

तब बालक ने हठ किया कि रामदास को वर न देने पर वह वर नहीं लेगा। जगदम्बा ने बालक की दृढ़ता व सत्यता को देख रामदास के मस्तक पर अपने वाम पद से स्पर्श कर कहा-

उत्तिष्ठ वत्स मुक्तोऽ सि रोग निद्रां परित्यज।
पश्य मे परमं रूपं यथेचितं वरं वृणु।।

रामदास ने उठकर सामने जगदम्बा को देखा, तो वह आनन्द से आत्मविभोर हो उठा। साष्टांग भूमि पर गिर, मां को दोनों हाथ जोड़ स्तुति करने लगा। जगदम्बा ने रामदास से वर मांगने को कहा, तो उसने मां की कृपा मांगी।

फिर मां ने बालक से वर मांगने को कहा। बालक ने सर्व विद्या पारदर्शी व शास्त्रों में अजेय होने का वर मांगा।

जगदम्बा ने तथास्तु कहा, आठ वर्षीय उस तपस्वी बालक को अपनी गोद में ले, उसके मुख का चुम्बन किया। देवी-देवता जिसकी हर समय आकांक्षा करते थे, बालक ने वह पीयूष पान कर देवत्व को प्राप्त किया। जगदम्बा उन दोनों साधकों को आशीर्वाद प्रदान कर शून्य में विलीन हो गई। रामदास उस बालक के साथ जब गृह को वापिस लौटा, उस समय सूर्य की किरणें निशा की ग्रास कर चुकी थी।

दो दिन बाद रामदास उस बालक को लेकर भोलानाथ कंठाभरण के पास पहुंचा तथा उसे बालक से शास्त्रार्थ करने का अनुरोध किया। भोलानाथ स्वयं एक सिद्ध पुरुष थे, उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि बालक जगदम्बा की कृपा प्राप्त कर चुका है। उन्होंने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और बालक की तुष्टि के लिए त्रिवेणी आए।

एक बार फिर त्रिवेणी के मुकुंद देव घाट पर शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। इस शास्त्रार्थ को देखने के लिए ब्राह्मण समाज के अलावा दूसरे सम्प्रदाय के लोग भी उमड़ पड़े थे। कंठाभरण ने बालक की विद्वता की प्रशंसा की तथा उस पर मां की कृपा होने के कारण जन समक्ष के सामने प्रणाम कर, अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

भृत्य रामदास के नेत्रों से अविरल अश्रु बह रहे थे, वह शून्य में देख रहा था. .. क्या इस दृश्य को उसके गुरु जगन्नाथ पंडित देख रहे होंगे?

...उनका प्रतिशोध पूरा हुआ है, और अब उसकी भटकती आत्मा तृप्त हुई होगी।

रामदास ने त्रिवेणी के महाश्मशान की दिशा में देखा। कोई चिता धू-धू कर जल रही थी। सत्य की लीला-भूमि की ओर उसके दोनों हाथ कृतज्ञता व भक्ति से स्वतः जुड़ गए।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- शिष्य द्वारा अपने हृदय में गुरु को धारण करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु यह तो प्रारंभ मात्र है, जैसा कि एक बार पूज्य गुरुदेव ने कहा था –

  यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि गुरु को कितने शिष्य याद करते है? यह तो उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि 'गुरु' शब्द को कितने शिष्यों ने अपने हृदय पटल पर अंकित किया है? यह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु सेवा करने की कामना अपने दिल में रखते हैं? यह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु की प्रसन्नता हेतु सचेष्ट हैं?
- अपितु महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु कितने शिष्यों को याद करता है।
- अपितु महत्वपूर्ण यह है , कि गुरु के होठों पर कितने शिष्यों का नाम आता है।
- अपितु सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है, कि कितने शिष्यों के नाम गुरु के हृदय पटल पर खुदे हुए है।
- अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु ने किस शिष्य की सेवा स्वीकार की है।
- अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु किस शिष्य पर प्रसन्न हुआ है।
- और गुरु के होठों पर शिष्य का नाम उच्चरित हो, गुरु के हृदय पटल पर शिष्य का नाम अंकित हो, गुरु सेवा का अवसर प्राप्त हो तथा शिष्य के कार्यों से गुरु प्रसन्न हों, यह शिष्य जीवन का परम सौभाग्य है तथा प्रत्येक शिष्य की यही प्राथमिक इच्छा होती है। जिस शिष्य को ऐसा दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त होता है, वह देवतुल्य हो जाता है, उसके जीवन से सभी पाप, दु:ख, पीड़ा, समस्याएं आदि दूर हो जाती है, अणिमादि सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती है, उसका व्यक्तित्व करोड़ों सूर्य से भी ज्यादा तेजस्वी हो जाता है। गुरु सेवा में यह कोई आवश्यक नहीं, कि शारीरिक रूप से गुरु गृह में रह कर ही सम्पन्न की जाए, अपितु महत्त्वपूर्ण गुरु सेवा यह है कि, शिष्य गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान को कितना अपने स्वयं पर क्रियान्वित करता है और उस ज्ञान से लोगों को लाभान्वित करवाता है तथा कितने अधिक लोगों को गुरु से जोड़ने का कार्य करता है, नि:स्वार्थ, निष्कपट भाव से।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- पहली बार जब व्यक्ति गुरु से मिलता है तो उसमें एक परिवर्तन आरंभ हो जाता है। फिर जो सब पुराना सड़ा गला उसके जीवन में होता है वह नष्ट हो जाता है तथा एक नवीनता उसके जीवन में व्याप्त होने लग जाती है।
- सद्‌गुरु का अर्थ कोई आचार्य या पंडित नहीं। सद्‌गुरु का अर्थ है वह जो कि व्यक्ति के जीवन में जो भी रुढ़ियां या पुरानापन है उसे समाप्त करके उसमें एक नवीनता का संचार कर दें।
- जीवन कोई सांस लेने खाने-पीने, सोने, जागने का नाम नहीं है। जीवन का अर्थ है निरंतर नवीन होना हर पल कुछ नयापन व्याप्त हो। ऐसा हो तभी जीवन है, तभी एक बहती निर्मल धारा है। अन्यथा तो केवल एक सड़े पानी से भरा ताल है।
- जब जीवन में सद्‌गुरु का प्रवेश होता है तो बहुत उथल-पुथल होती ही है। एक सड़े हुए नाले पर अगर ऊपर-ऊपर गुलाब बिखेर दे तो ऊपर से भले ही वह सुंदर दिखे मगर अंदर की गंदगी तो समाप्त नहीं होती। मगर जब उस नाले को साफ किया जाए तो सड़ांध तो उठेगी ही। इसी प्रकार जब सद्‌गुरु जीवन में परिवर्तन करता है तो
- सभी कुछ अस्त-व्यस्त होता दिखाई देता है। उससे घबराने की आवश्यकता नहीं। एक बार सद्‌गुरु जीवन में व्याप्त गंदगी को दूर कर देता है उसके पश्चात् मधुरता ही बचती है।
- सद्‌गुरु से कुछ प्राप्त करने के लिए यह कोई आवश्यक नहीं कि उनकी पूजा की जाए। आवश्यक है कि उनके हृदय से अपने हृदय के तारों को जोड़ दिया जाए, यह आवश्यक है कि गुरु की आत्मा से एकाकार हो जाया जाए।
- ऐसा होने पर व्यक्ति के जीवन में एक अद्‌भुत परिवर्तन होने लग जाता है। जीवन फिर साधारण नहीं रहता। उसमें एक ऐसा तत्व समाहित हो जाता है जो निरन्तर व्यक्ति को पूर्णता की ओर अग्रसर करता रहता है।

शक्ति साधना से

चैत्र नवरात्रि साधना

सम्पूर्ण पूजन विधान

नवरात्रि पर्व शक्ति प्राप्ति का पर्व है और मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही शक्ति की उपासना कर उसे प्राप्त करना है।

नवरात्रि में शक्ति पूजा जिसका समन्वित रुप दुर्गा है वह सब देवताओं की संघ शक्ति का प्रतीक है क्योकि दुर्गा शक्ति की उत्पत्ति देवताओं की संगठन शक्ति से ही हुई है। अतः नवरात्रि में विधि-विधान सहित दुर्गा का पूजन एक प्रकार से सभी देवी-देवताओं का पूजन है। त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शिव जिसकी इच्छा से शरीर धारण करते हैं वह शक्ति दुर्गा ही है। वह सगुण और निर्गुण दोनों रुपों में है। कलियुग में दुर्गा पूजा का लाभ तत्काल प्राप्त होता है। भगवान वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत में लिखा है कि 'कलौं चण्डी विनायकौ' अर्थात् कलियुग में शक्ति और गणपति साधना ही तुरंत फल प्रदान करने वाली है और आपके सामने आ रहा है शक्ति का महापर्व नवरात्रि 02.04.22 से 10.04.22।

यदि आप शिष्य हैं, साधक हैं, शक्ति उपासक हैं, तंत्र-मंत्र की शक्ति अपने भीतर भरना चाहते हैं तो नवरात्रि की यह विशिष्ट शक्ति पूजन, साधना अवश्य सम्पन्न करें।

भगवती दुर्गा की तेजस्विता यदि साधक समाहित करने में सक्षम हो जाये,

तो साधक के जीवन का सौभाग्योदय होता है और ऐसा सौभाग्यवर्द्धक क्षण उपस्थित हो रहा है, इस बार 'चैत्र नवरात्रि' पर

नवरात्रि का यह पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियां, दूर कर अपने भीतर शक्ति भरने का पर्व है, यदि संसार विपत्ति सागर है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिए शक्तिमान होना ही पड़ेगा, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरनी पड़ेगी, यह शक्ति ही अपने अलग-अलग रूपों में विद्यमान होकर साधक के कार्य सम्पन्न करती है।

मां दुर्गा के तीनों महान स्वरूपों के बारे '**श्री देव्यथर्वशीर्ष**' में लिखा है कि '**हे देवी! आप चित्त स्वरूपिणी महासरस्वती हैं, सम्पूर्ण द्रव्य, धन-धान्य रूपिणी महालक्ष्मी हैं तथा आनन्दरूपिणी महाकाली हैं, पूर्णत्व पाने के लिए हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे! महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी स्वरूपिणी चण्डिके, आपको बारम्बार नमस्कार है, मेरे अविद्या, अज्ञान, अवगुण रूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थी काट कर मुझे शक्ति प्रदान करें।**'

शक्ति-प्राप्ति का तात्पर्य बल से नहीं लगाया जा सकता यद्यपि व्यवहार में शक्ति का प्रयोग इसी रूप में व्यक्त किया जाता है किन्तु शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार '**शक्ति**' शब्द में '**श**' ऐश्वर्य सूचक तथा '**क्ति**' पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्ध पर्यायावची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का '**प्र**' - सत्व गुण सूचक '**कृ**' रजोगुण सूचक एवं '**ति**' तमोगुण सूचक घोषित किया गया है। इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुणात्मिका स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए हैं, जिसकी उपासना हम महासरस्वती, महाकाली एवं महालक्ष्मी के रूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भावना इन्हीं तीनों शक्तियों की आराधना, साधना एवं इससे भी अधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है।

भगवती दुर्गा का तात्पर्य तो पूर्णतः भौतिक संकटों की समाप्ति ही है। भगवती दुर्गा को 'दुर्गति नाशक' कहा गया है अर्थात् दुर्गा वह शक्ति है जो जीवन में दुर्गति, दुःख देने वाली स्थितियों जीवन के रोग, दुर्बलता, दारिद्र्य, शत्रु जैसे विभिन्न 'दुर्गम दैत्यों' का शमन कर सकती हैं।

भगवती दुर्गा का स्वरूप अत्यंत भीषण माना गया है, जैसा कि उनके ध्यान से स्पष्ट होता है-

ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेवितां।
हस्तेश्चक्रगदासिखेट विशिखांचापं गुणं तर्जनीं,
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

अर्थात् '**जिनके अंगों की प्रभा विद्युत-द्युति के समान है, जो सिंह के कंधों पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत हो रही हैं, जिनके चारों ओर हाथ में तलवार एवं ढाल लिए अनेक कृत्यायें खड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार ढाल, बाण, धनुष, पाश आदि अस्त्र धारण कर रखे हैं, ऐसी अग्निमय स्वरूप वाली, माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाली त्रिनेत्री दुर्गा की मैं अभ्यर्थना करता हूं।**''

भगवती दुर्गा का यह स्वरूप स्वयं प्रकट करता है, कि वे भावगम्य नहीं, अपितु साधनागम्य हैं। वह सत्य है कि देवी प्रत्येक दशा में ममतामयी ही हैं, किन्तु जब तक साधक उनके स्वरूप विशेष के अनुकूल स्वयं को ही सन्नद्ध नहीं कर लेगा, तब तक वह स्वयं उसके अन्दर समाहित हो भी कैसे सकेगा ? इसके अतिरिक्त उस जगज्जनी को यह भलीभांति स्पष्ट होता है, कि उनका कौन सा साधक शिशुत्व की स्थिति में है और कौन केवल मुंह से ही मां-मां रट लगा रहा है।

वह स्थिति जब कि शिशुत्व की प्रबलता के कारण साधक कुछ भी करने में असमर्थ हो जाता है और जीवन के प्रत्येक क्षण के लिए केवल भगवती जगदम्बा पर ही आश्रित हो जाता है, ऐसी स्थिति सिर्फ अत्यन्त उच्च कोटि के योगियों की ही होती है। अन्य कोई यदि इसके आधार पर साधना करने से बचना चाहे, तो यह उसकी न्यूनता होगी, श्रेष्ठता नहीं। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक प्रत्येक दशा में साधना करने को तत्पर रहते ही हैं, क्योंकि इसका निर्धारण तो जगदम्बा स्वयं ही कर लेगी, कि अब मेरे किसी भक्त या साधक को

'चैत्र की नवरात्रि' भगवती दुर्गा की साधना का वर्ष भर में सबसे अधिक सिद्ध मुहूर्त माना गया है। यही अवसर होता है, जब प्रकृति में उपस्थिति उनकी चैतन्यता को उचित मंत्रों एवं विधान के द्वारा अपने अंदर उतारा जा सकता है।

देवी दुर्गा से बाह्य रूप से सहायता की प्रार्थना करने की अपेक्षा अधिक उचित तो यही होता है, कि साधक उनकी प्रखरता को स्वयं अपने शरीर के अणु-अणु में भर ले और फिर केवल किसी एक या दो समस्याओं का समाधान नहीं वरन् समस्त समस्याओं का समाधान स्वयं ही कर सके।

साधना की आवश्यकता है और कौन इससे मुक्त हो गया।

इस विवेचन का उद्देश्य मात्र इतना है, कि साधक जिस अवसर पर दुःख, दारिद्र्य, शत्रुहंता की इस श्रेष्ठ साधना में प्रवृत्त हो, उस समय उसके मन में प्रबल संकल्प और दृढ़ता की भावभूमि हो। आधे मन से, भावनाओं में डूबते-तैरते, बलात् साधना करने से इसके फल की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती।

सिंह की एक उपमा **'मृगपति'** भी है, जिसका अर्थ होता है, जो मृग की ही भांति चंचल मन पर आधिपत्य स्थापित कर ले। जिस प्रकार सिंह भीषण झपट्टा मार कर एक ही प्रहार में अपने शिकार का प्राणान्त कर देता है, उतनी ही दृढ़ता और प्रखरता से अपने मन की दुर्बलताओं को समाप्त किया जा सके। इस लेख में जहां भगवती दुर्गा का ध्यान उल्लिखित किया गया है, वहां सिंह की इसी उपमा **'मृगपति'** का उल्लेख इसी तथ्य की ओर ध्यार आकर्षित करने वाला है।

'चैत्र नवरात्रि' भगवती दुर्गा की साधना का वर्ष भर में सबसे अधिक सिद्ध मुहूर्त माना गया है। यही अवसर होता है, जब प्रकृति में उपस्थिति उनकी चैतन्यता को उचित मंत्रों एवं विधान के द्वारा अपने अंदर उतारा जा सकता है। देवी दुर्गा से बाह्य रूप से सहायता की प्रार्थना करने की अपेक्षा अधिक उचित तो यही होता है, कि साधक उनकी प्रखरता को स्वयं अपने शरीर के अणु-अणु में भर ले और फिर केवल किसी एक या दो समस्याओं का समाधान नहीं वरन् समस्त समस्याओं का समाधान स्वयं ही कर सके।

चैत्र नवरात्रि ऋतुओं का संगम है, और शक्ति उपासकों के लिये यह महापर्व है। नवरात्रि को महारात्रि अर्थात् महोत्सव स्वरूप में सम्पन्न करने की प्रथा वेदोक्त काल से चली आ रही है। देवी भागवत् के अनुसार महाशक्ति ही शारीरिक विकार, मोह, अन्धकार, आलस्य, राग, द्वेष तथा वासना के प्रतीक मधु-कैटभ, महिषासुर, शुंभ-निशुंभ, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज का नाश धर्मरूपी सिंह पर आरूढ़ होकर प्रभुत्व स्थापित करने वाले विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों के माध्यम से दुष्प्रवृत्ति रूपी असुरों का विनाश कर देती है। भगवती जगदम्बा ही तृतीय नेत्र से ज्ञान की वर्षा कर ज्ञानियों को अमृत प्रदान करती हैं। शक्ति के इस जगदम्बा रूप का विस्तृत विवेचन मार्कण्डेय पुराण में आया है और इसमें भगवती दुर्गा स्वयं कहती हैं कि जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थिति होगी तब मैं शत्रुओं का संहार करूंगी। मनुष्य जीवन में अज्ञान रूपी अन्धकार फैला हुआ ही है। इसमें शारीरिक विकार, मोह, अन्धकार, आलस्य, राग-द्वेष, अहंकार, वासना भरी पड़ी है, इनका नाश कर जीवन में चेतना प्राप्त करने हेतु नवरात्रि सर्वोत्तम पर्व है।

इस वर्ष विक्रम सम्वत् 2079 में नवरात्रि 02.04.22 को प्रारम्भ हो रही है। आप साधक हैं, शिष्य हैं तो श्रेष्ठ अवसर पर शक्ति आराधना पूर्ण विधि विधान सहित नित्य सम्पन्न करें।

प्रथम दिन विशेष पूजन नीचे दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न करना है और बाकी दिनों में गणपति पूजन, गुरु पूजन, सम्पन्न करके ही प्रत्येक दिन अपनी कामना के अनुसार विशिष्ट नवदुर्गा का पूजन एवं दुर्गा मंत्र जप सम्पन्न करना है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के साथ-साथ नियमों का पालन विशेष आवश्यक है।

साधना सामग्री- 'आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र', श्री साफल्य गुटिका, शक्ति माला।

साधना विधान

साधक प्रातःकाल स्नान करके आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर भगवती दुर्गा का सुन्दर-सा आकर्षक चित्र स्थापित करें। भगवती के चित्र के सामने कुंकुम से रंगे हुए लाल चावल की ढेरी बनाकर उस पर **'आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र'** को स्थापित करें। इसके पश्चात् निम्न

विधि से पूजन करें-

आचमन-दाहिने हाथ में जल लेकर स्वयं आचमन करें-

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः।।
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः।।
ॐ क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः।।

इसके बाद हाथ धो लें।

आसन शुद्धि-आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं।।

संकल्प-दाहिने हाथ में जल लें-

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते देशान्तर्गते पुण्य क्षेत्रे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें) **अमुक शर्माऽहं** (अपना नाम बोलें) **सकल दुःख दारिद्र्य निवृत्ति मम मनोकामना पूर्ति निमित्तं भगवती दुर्गा सिद्धि प्राप्ति निमित्तं च पूजनं करिष्ये।।**

जल छोड़ दें।

गणपति पूजन-

ॐ गं गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः। पुष्पासनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। तिलकं अक्षतान् च समर्पयामि। धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

गुरु पूजन-

इसके बाद पंचोपचार से या षोड़शोपचार से गुरुदेव का पूजन करें और प्रार्थना करें-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

कलश स्थापन

अपने बायीं ओर जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश स्थापन करें। उसमें जल भर दें। इसके बाद कलश में चारों ओर कुंकुम से चार तिलक लगा दें। उसमें सुपारी, अक्षत, दूब और पुष्प तथा गंगाजल डालें। फिर कलश पर हाथ रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु।।

फिर कलश पर नारियल रखें।

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावल को दाहिने हाथ से निम्न मंत्र को पढ़ते हुए कलश पर चढ़ायें।

ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ महासरस्वत्यै नमः। ॐ नन्दजायायै नमः। ॐ धूमायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः।।

भगवती दुर्गा के चित्र को पानी के छींटें देकर साफ कपड़े से पोंछ दें और पूजन करें-

ध्यान-दोनों हाथ जोड़ें-

श्री जगदम्बायै ध्यानं समर्पयामि नमः।।

आवाहन-भगवती का आह्वान। हाथ में पुष्प लेकर आवाहन करें-

ॐ जगदम्बायै आवाहनं समर्पयामि नमः।।

पाद्य -जल में दूध मिलाकर दूब चढ़ायें-

ॐ जगदम्बायै पाद्यं समर्पयामि नमः।।

आचमन-लौंग तथा जायफल जल में डाल कर चढ़ायें-

ॐ जगदम्बायै आचमनं समर्पयामि नमः।।

अर्घ्य-दूब, तिल, चावल एवं कुंकुम जल में डाल कर चढ़ायें-

ॐ जगदम्बायै अर्घ्यं समर्पयामि नमः।।

मधुपर्क-दूध में दही, घी एवं शहद मिला कर चढ़ायें-

ॐ जगदम्बायै मधुपर्कं समर्पयामि नमः।

स्नान- स्नान हेतु जल चढ़ायें-

परमानन्द बोधब्धि निमग्न निजमूर्तये।
सांगोपांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते।।

वस्त्र- वस्त्र के स्थान मौली चढ़ाये-

ॐ जगदम्बायै वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।
गन्धं अक्षतान् समर्पयामि नमः।।

पुष्प, धूप, दीप-

ॐ जगदम्बायै पुष्पं धूपं दीपं दर्शयामि नमः।।

नैवेद्य, दक्षिणा

ॐ जगदम्बायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
दक्षिणां द्रव्यं समर्पयामि नमः।।

मंत्र

बायें हाथ में गुटिका लेकर मुट्ठी बन्द कर दें। दायें हाथ में 'शक्ति माला' लेकर निम्न मंत्र की 5 माला मंत्र का जप करें-

।। ॐ दुं दुर्गे दुर्गतिनाशाय दुं ॐ फट्।।

दुर्गा शक्ति की यह साधना नवरात्रि में नौ दिन सम्पन्न करनी है, प्रत्येक दिन पांच माला मंत्र जप के अलावा नवार्ण मंत्र (ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) का एक माला जप भी सम्पन्न करें। यथासंभव एक समय भोजन कर नौ दिन तक निरन्तर साधना करें।

आरती- इसके पश्चात् मां भगवती जगदम्बा की आरती सम्पन्न करें।

पुष्पांजलि-

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवान च
पुष्पांजलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।

दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवती को चढ़ायें तथा प्रसाद वितरण करें।

नवरात्रि साधना के नौ दिन पूर्ण होने पर लाल वस्त्र में बांध कर यंत्र, गुटिका और माला को जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल दें। कलश के ऊपर जो नारियल है, उसे प्रसाद के रूप में सपरिवार ग्रहण करें।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन कुंआरी कन्याओं को भोजन करा कर उचित दक्षिणा प्रदान करें।

साधना सामग्री-510/-

आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।।1।।
जय अम्बे गौरी.....

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको।।2।।
जय अम्बे गौरी.....

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।3।।
जय अम्बे गौरी.....

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।।4।।
जय अम्बे गौरी.....

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।।5।।
जय अम्बे गौरी.....

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।।6।।
जय अम्बे गौरी.....

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।7।।
जय अम्बे गौरी मैया.....

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
जय अम्बे गौरी.....

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।9।।
जय अम्बे गौरी.....

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।।10।।
जय अम्बे गौरी.....

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
जय अम्बे गौरी.....

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतुमें राजत कोटि रतन ज्योति।।12।।
जय अम्बे गौरी.....

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै।।13।।
जय अम्बे गौरी.....

त्रिपुर सुन्दरी का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य है, क्योंकि यह शांत स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों की ही साधना है।

सम्पूर्णता प्राप्ति साधना

श्री विद्या तंत्र

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

जीवन में काम, सौभाग्य, शरीर सुख के साथ-साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है।

वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी को तो राज-राजेश्वरी ही कहा गया है,

क्योंकि यह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है। वैसे तो इस साधना के सहस्र स्वरूप हैं, क्योंकि इसका नाम ही 'सहस्र रूपिणी' है और प्रत्येक स्वरूप की साधना अलग-अलग रूप में की जाती है।

प्रस्तुत पंक्तियों में इस साधना के प्रमुख तथ्यों को ध्यान में रख कर एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है -

विश्वामित्र एवं वशिष्ठ का विवाद तो शास्त्रों में विस्तार से लिखा है, उस विवाद के अंतर्गत आखिर एक दिन क्षत्रिय विश्वामित्र ने जो कि विभिन्न साधनाएं एवं सिद्धियां प्राप्त कर राजर्षि विश्वामित्र कहलाने लग गए थे, उन्होंने वशिष्ठ से पूछा कि ऐसी कौन सी साधना है जिसको सम्पन्न करने से मैं ब्रह्मर्षि बन सकता हूँ और जगत में मेरा नाम आपके बराबर हो सकता है वष्ठिट ने कहा कि हे राजर्षि विश्वामित्र! जीवन में पूर्णता के लिए दस प्रकार की सिद्धियां आवश्यक हैं, ये सिद्धियां हैं :-

1. अणिमा सिद्धि, 2. लघिमा सिद्धि, 3. महिमा सिद्धि, 4. ईशित्व सिद्धि, 5. वशित्व सिद्धि, 6. प्राकाम्य सिद्धि, 7. भक्ति सिद्धि, 8. इच्छा सिद्धि, 9. प्राप्ति सिद्धि, 10. सर्वकाम सिद्धि।

ये दस सिद्धियां आपको प्राप्त करनी आवश्यक है और इसका एक ही उपाय है कि आप राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी की कृपा से ये सिद्धियां प्राप्त कर लेने से आपके जीवन में पूर्णता आ जाएगी और इतिहास गवाह है कि विश्वामित्र ने अंततः त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कर ब्रह्मर्षि पद प्राप्त कर ही लिया।

अपनी हिमालय यात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेव जब अपने गुरु श्री सच्चिदानन्द जी महाराज के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने इस शिष्य को दीक्षा देने के पश्चात् बोले कि निखिल! तुमने स्थान-स्थान पर यात्रा कर ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त कर कई तरह की सिद्धियां प्राप्त कर ली है, लेकिन इन सिद्धियों के कारण तुम यह मत समझ लेना कि बहुत कुछ हो गया और अभी तो बहुत कुछ बाकी है, **तुम्हें यदि अष्टादश सिद्धियां प्राप्त करनी है तो विराट शक्ति स्वरूप श्रीचक्र स्थित त्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी और जब यह साधना सम्पन्न हो जाएगी तो तुम्हें अन्य साधनाएं बच्चों के खेल जैसी लगेंगी, इसलिए मेरे मानसपुत्र मैं तुम्हें सबसे पहले राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कराऊंगा, जिससे इस कलयुग में संसार को तुम कुछ दे सकोगे,** क्योंकि लक्ष्मी पति और राजा तो कई होते हैं, आते हैं और चले जाते हैं, उन्हें उनके जीवन काल में ही लोग याद करते हैं, लेकिन जो संसार का कल्याण करने की इच्छा रखता है और जो कुछ देने की सामर्थ्य रखता है और संसार को ज्ञान का अमृत देता है और खुद कमलवत् निस्पृह तथा सामान्य बना रहता है, वह चाहे विश्व के किसी कोने में हो, जगत् उसे हजारों-हजारों वर्षों तक याद रखता है और तुम्हारा जन्म इसीलिए हुआ है, अतः मैं तुम्हें यह साधना सम्पूर्ण रूप से कराऊंगा।

आज उसी विद्या का एक अध्याय जैसा श्रीगुरुमुख से मुझे प्राप्त हुआ वह पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है -

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी सिद्ध विद्या साधना कही जाती है, क्योंकि इसके विभिन्न रूपों की विभिन्न काम्य सिद्धि के लिए साधना की जाती है, ज्ञान प्राप्ति अर्थात् सरस्वती वाक् सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि, विशेष वशीकरण सिद्धि, अनंग सुख सिद्धि, सर्व वांछित सिद्धि, मर्दन सिद्धि इत्यादि इसी साधना से संभव है, इन साधनाओं को एक-एक क्रम से करना चाहिए। जब राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधक पर प्रसन्न होती है तो उसे अपनी सिद्धियों में एक के बाद एक सफलता मिलने लग जाती है, क्योंकि हर सिद्धि दूसरी सिद्धि से जुड़ी है।

साधना कब करें

त्रिपुर सुन्दरी साधना चारों नवरात्रियों में बिना कोई मुहूर्त देखें सम्पन्न की जा सकती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से भी साधना प्रारंभ की जा सकती है और सबसे अंत में ये जान लेना आवश्यक है कि सबसे सिद्ध मुहूर्त वही होता है, जब सद्गुरुदेव अपने शिष्य को साधना प्रारंभ करने को कहते है।

निकट भविष्य में दो श्रेष्ठ मुहूर्त्त आ रहे हैं, जिस दिन इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है। पहला है दस महाविद्या दिवस जो 27.03.22 को है और दूसरा है चैत्र नवरात्रि जो कि 02.04.22 से प्रारम्भ हो रही है। अतः इस दिन से या नवरात्रि में इस साधना को अवश्य सम्पन्न करना चाहिये।

नौ दिन के साधना क्रम में साधक प्रत्येक दिन देवी के अलग-अलग स्वरूप का ध्यान कर अलग-अलग कार्य सिद्धि के लिए साधना करें। हां जो साधक किसी एक कार्य विशेष के लिए साधना करना चाहते हैं तो वे नौ दिनों तक इसी क्रम को दोहरा सकते हैं।

त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी का सबसे प्रमुख ध्यान तो सूर्य का तेज धारण

किए हुए त्रिनेत्री जो कि कमलदल पर आसीन है और रक्ताम्बर धारण किए हुए है। चारों हाथों में धनुष, पाश, सुमसर धारण किए है जो अपने पूर्ण स्वरूप में शिव के ऊपर विराजमान है और त्रिजगत की आधार शक्तियां सरस्वती, ब्रह्मा, कुबेर आसन के नीचे स्थित है। वह भगवती आधारभूता त्रिपुर सुन्दरी राज राजेश्वरी को स्मरण करने मात्र में सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

इसके अतिरिक्त लक्ष्मी प्राप्ति, वाक् सिद्धि, ज्ञान प्राप्ति, आरोग्य सिद्धि, वशीकरण सिद्धि, काम सिद्धि आदि के अलग-अलग ध्यान आवश्यक है।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

दोनों हाथों में बीजपूर तथा कमल धारण करने वाली, सुवर्ण के समान आभा वाली तथा पद्मासन पर विराजमान त्रिपुर सुन्दरी का लक्ष्मी प्राप्त के लिए चिंतन करता हूँ।

ज्ञान प्राप्ति के लिए

चारों हाथों में - वरद मुद्रा, अमृत कलश, पुस्तक एवं अभय मुद्रा धारण करने वाली, अमृत की धारा फैलाने वाली त्रिपुर सुन्दरी का ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करता हूँ।

आरोग्य के लिए

चारों हाथों में वरद मुद्रा आदि धारण करने वाली, श्वेत वस्त्र वाली, चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा अकार से लेकर क्षकार तक समस्त वर्णों के अवयव वाली त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूँ।

वशीकरण के लिए

दोनों हाथों में अंकुश एवं पाश धारण करने वाली रत्न एवं आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्न वदना एवं अरूण आभा वाली देवी त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूँ।

काम सिद्धि-अनंग सिद्धि हेतु

कल्पवृक्ष के नीचे कांतिमान रत्न सिंहासन पर विराजमान मद से आघृणित नेत्र वाली चारों हाथों में क्रमशः वीजापुर, कपाल, बाण एवं अंकुश धारण करने वाली रक्तवर्णा त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूँ।

साधना सामग्री

नौ दिन की इस साधना महाकल्प के लिए नौ अलग-अलग सामग्री आवश्यक है और प्रत्येक सामग्री पूर्ण मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए। जिससे साधक उस सामग्री के प्रभाव को प्राप्त कर जो साधना करें, उसमें उसे सिद्धि अवश्य प्राप्त हो, इसके अतिरिक्त निम्न साधना सामग्री भी आवश्यक है, जिसकी व्यवस्था साधक अपने यहां स्वयं कर सकते हैं - **1. आसन (किसी भी रंग का हो सकता है), 2. जलपात्र, 3. गंगाजल यदि हो तो, 4. चांदी या स्टील की प्लेट, 5. कुंकुम (रोली), 6. अक्षत, 7. केसर, 8. पुष्प, 9. बिल्व पत्र, 10. पुष्प माला, 11. दूध, दही, घी, चीनी, शहद अनुमान से, 12. नारियल, 13. मौली अथवा कलावा, 14. यज्ञोपवीत, 15. अबीर गुलाल, 16. अगरबत्ती, 17. कपूर, 18. घी का दीपक, 19. नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, 20. पांच फल, 21. इलायची।**

इसके अतिरिक्त इस साधना में कुछ विशेष सामग्री की आवश्यकता रहती है जो कि साधक को पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए, जिससे कि साधना प्रारंभ करने के पश्चात् किसी सामग्री के अभाव में उसकी साधना अधूरी न रहे।

1. अद्वितीय **सर्वकामना सिद्धि युक्त त्रिपुर सुन्दरी यंत्र** जो कि चैतन्य एवं सिद्धि मंत्र से सम्पूरित हो।
2. **स्वर्णावती यंत्र** जो अखण्ड एवं अनायास धन प्राप्ति युक्त सिद्ध हो।
3. **वरदायक गृहस्थ सुख यंत्र** जो सभी प्रकार से पूर्ण गृहस्थ सुख में उपयोगी हो।
4. **मृत्युंजयी शिव रूद्राक्ष** जो अकाल मृत्यु निवारण एवं पूर्ण आयु प्रदान करने से संबंधित मंत्रों से सम्पूरित हो।
5. **नवदुर्गा त्रिभुवन मोहिनी माला** जो कि गले में पहिनने व मंत्र जप के लिए और पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।
6. **कल्पवृक्ष साफल्य** जो प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ति के लिए रावण कृत प्रयोग से सिद्ध हो।
7. **अद्वितीय त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** जो भगवती त्रिपुर सुन्दरी के प्रत्यक्ष दर्शन कराने में समर्थ हो।
8. **ऋद्धि-सिद्धि युक्त दुर्लभ तांत्रोक्त नारियल** जो जीवन के समस्त विघ्नों का नाश कर, पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।
9. **मनोकामना सिद्धि यंत्र** जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हो।

पूजन विधान

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना में नौ दिन के इस अनुष्ठान में प्रथम दिन जो पूजन करें वह पूजन तो आने वाले आठ दिनों तक और करना ही है, विशेष कार्यों हेतु विशेष सामग्री के साथ उसका पूजन एवं मंत्र जप करना है। किसी भी अनुष्ठान में सबसे पहले संकल्प लिया जाता है, तत्पश्चात गणपति पूजन करना आवश्यक रहता है और फिर **त्रिपुर सुन्दरी महायंत्र** को स्थापित करें, अब अपने पास पुष्प लेकर सबसे पहले त्रिपुर सुन्दरी की विशेष अनंग शक्तियों का दो क्रम से पूजन करना है, प्रथम क्रम में यंत्र के चारों ओर गोलाकार रूप में नौ पुष्प स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

प्रथम क्रम - ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामदायिन्यै नमः, ॐ रत्यै नमः, ॐ रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ मनोन्मन्यै नमः, ॐ इच्छायै नमः।

द्वितीय क्रम में - ॐ शुभगायै नमः, ॐ भगायै नमः, ॐ भगसर्पिण्यै नमः, ॐ

भगमाल्यै नमः, ॐ अनंगननायै नमः, ॐ अनंगमेखलायै नमः, ॐ अनंगमदनायै नमः।

अब यंत्र को घी से उसके पश्चात् दूध और फिर जल से धोकर उसे पुष्प के आसन पर विराजमान करना चाहिए, तत्पश्चात् भैरव पूजन सम्पन्न किया जाता है और यंत्र के आठ दलों में कामरूप पीठ, मलय पीठ, कोल्लगिरि पीठ, चौहारा पीठ, कुलान्तक पीठ, जालंधर पीठ, उड्डयान पीठ, कोट्ट पीठ। इस प्रकार आठ पीठ पूजन की कल्पना की जाती है कि इन सभी पीठों की शक्तियां हमारे पूजन में सहायक हो।

प्रथम दिवस

इस दिन देवी पूजन प्रारंभ करने के साथ ही दीपक जला देना चाहिए और सम्पूर्ण पूजन पूर्ण कर देवी के मूल मंत्र की 5 माला का जप करना आवश्यक है।

त्रिपुर सुन्दरी महामंत्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ
त्रिपुर सुन्दर्यै सर्व शक्ति
समन्वित सौः ऐं क्ली
ह्रीं श्रीं।।

यह मंत्र जप 5 माला **मोहिनी माला** से सम्पन्न किया जाना चाहिए।

अब अलग-अलग कार्यों के लिए किस प्रकार अलग-अलग सामग्री को प्रयोग में लानी है, यह ध्यान में रखें एवं जिस कार्य के लिए साधना करना चाहें वह सामग्री कार्यालय से मंगवा लें।

द्वितीय दिवस

इस दिन सर्वप्रथम त्रिपुर सुन्दरी का पूजन ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न करना है उसके पश्चात् **स्वर्णावती यंत्र** को **त्रिपुर सुन्दरी यंत्र** के आगे स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करें इस दिन साधक लाल वस्त्र धारण करें तथा निम्न मंत्र का 5 माला जप करें -

स्क्लीं क्षम्यौं ऐं त्रिपुर सर्व वांछितं
देहि नमः स्वाहा।।

तृतीय दिवस

गृहस्थ सुख यंत्र का पूजन कर निम्न मंत्र का 5 माला जप सम्पन्न करें -

क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां
योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा।।

चतुर्थ दिवस

मृत्युंजय शिव रुद्राक्ष का पूजन कर शिव का ध्यान करें और शिव की महाशक्ति त्रिपुर सुन्दरी की आराधना में निम्न मंत्र का 5 माला जप करें -

ह्रीं ह्रीं ह्रीं महा त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्य च देहि स्वाहा।।

पंचम दिवस

तांत्रोक्त नारियल का पूजन कर निम्न मंत्र का 5 माला जप करें -

ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा।।

षष्ठम दिवस

त्रिपुर सुन्दरी मनोकामना पूर्ति यंत्र का पूर्ण विधि से पूजन कर निम्न मंत्र का 5 माला जप सम्पन्न करें -

क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।।

सप्तम दिवस

इच्छा, कवित्व एवं वाक्सिद्धि के लिए **कल्पवृक्ष साफल्य** का पूजन कर देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर निम्न मंत्र का 5 माला विशेष जप अवश्य करना चाहिए -

ह्रीं क्लीं हसौः सौः क्लीं ह्रीं।।

अष्टम दिवस

इस दिन देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर वशीकरण सिद्धि हेतु साधना सम्पन्न करनी है। इसलिए **त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** का विशेष पूजन सम्पन्न करें तथा निम्न मंत्र का जितना अधिक जप कर सकें अवश्य करें -

क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर सुन्दरि
सर्व जगत् मम वश कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा।।

नवम् दिवस

आज साधना का पूर्णाहुति दिवस है इस कारण अब जिन-जिन सामग्रियों का पूजन कर मंत्र जप किया है, उनका प्रत्येक का पूजन कर ऊपर लिखे गये आठों मंत्र 11-11 बार अवश्य बोलें, इस दिन नौ दीपक जलाएंगे, क्योंकि प्रथम दिन एक दीपक, दूसरे दिन दो, इसी प्रकार यह क्रम बढ़ेगा। सर्वसिद्धि के लिए आज साधना अनुष्ठान पूर्ण होता है इस कारण देवी के आगे पुष्प का निरंतर अर्पण करते हुए निम्न मंत्र जप करें -

ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।।

त्रिपुर सुन्दरी साधना को कुछ लोग केवल वशीकरण की ही साधना कहते हैं, जो कि उचित नहीं है, वास्तव में तो त्रिपुर सुन्दरी साधना से साधक जगत वशीकरण कर जीवन में उच्चता पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है, उसे अपने जीवन में धन-धान्य, पशु-धन, पुत्र-सुख, लाभ, कार्य वृद्धि, ऐश्वर्य वृद्धि, व्यापार वृद्धि, लक्ष्मी बुद्धि, सम्मान बुद्धि इत्यादि अपने आप आने लगते हैं। इस अनुष्ठान के पश्चात् नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर दक्षिणा अवश्य प्रदान करनी चाहिए। आप जो साधना करना चाहें उसकी सामग्री जोधपुर से मंगा लें।

साधना सामग्री–त्रिपुर सुन्दरी यंत्र+त्रिभुवन मोहिनी माला-450, स्वर्णावती यंत्र- 240, गृहस्थ सुख यंत्र-240, मृत्युंजय शिव रुद्राक्ष-120, तांत्रोक्त नारियल-150, त्रिपुर सुन्दरी मनोकामना यंत्र-240, कल्पवृक्ष साफल्य-150, पारद गुटिका-300

भगवान का निवास

जब भगवान ने सृष्टि की रचना की, सभी सुख-सुविधाओं के साथ प्रेम से इसका निर्माण किया, चारों ओर प्रकृति बिखेर दी। जब उन्होंने इसे निहारा तो यह सृष्टि उन्हें अत्यन्त ही सुन्दर लगी, तब उन्होंने यह निश्चय किया कि मैं भी इस पृथ्वी पर ही निवास करूँगा।

लेकिन कुछ दिनों पृथ्वी पर रहने के बाद भगवान के सामने कई समस्याएं आने लगी। वे एक क्षण के लिए आराम नहीं कर सके क्योंकि हर समय कोई न कोई अपनी समस्या लेकर आ जाता था और भगवान उनकी समस्याओं का समाधान करते-करते परेशान हो गये। मनुष्य हर छोटी-छोटी बात के लिए भगवान को परेशान करने आते। इस प्रकार भगवान की शांति भंग हो चुकी थी। विशेष बात यह थी कि अपनी समस्याओं के समाधान पाने के बाद लोग अपनी सुविधा के अनुसार भगवान को सुझाव और सलाह भी देने लगे थे कि किस प्रकार संसार को और अधिक श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। चूंकि भगवान सर्व सुलभ थे अतः वे लोग यह भूल गये कि इस संसार को रचने वाले एवं मनुष्य का निर्माण करने वाले भगवान स्वयं हैं, जिन्होंने स्वयं मनुष्य को सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की है। लेकिन मनुष्य जिसे भगवान ने कुछ प्रतिशत ही शक्ति प्रदान की थी, वे अब परामर्श भी देने लगे कि आपको इसमें बदलाव करके इस प्रकार नियम बनाना चाहिए, आपको ऐसा करना चाहिए। ऐसे तरह-तरह के सुझाव। अन्ततः भगवान को अपने निर्णय पर पुनः विचार करना पड़ा कि मुझे अब कहीं और चले जाना चाहिए, जहाँ मुझे शांति प्राप्त हो।

इस सम्बन्ध में भगवान ने अपने लोगों से एवं देवताओं से पूछा कि मैं कहाँ रहूँ, जहाँ लोग मुझे खोज न सकें और मैं शांति से रह सकूँ, अनेक लोगों ने कई सुझाव दिये।

एक व्यक्ति ने कहा कि आप हिमालय के सबसे ऊँचे शिखर पर विराजमान हो जाइए, वहाँ कोई नहीं पहुँच सकेगा परन्तु दूसरे ने कहा पृथ्वी की सबसे ऊँची चोटी पर भी लोग पहुँच चुके हैं और भविष्य में और भी लोग पहुँचेंगे और रास्ता बना लेंगे फिर दूसरे लोग भी पहुँचने लगेंगे और वहाँ भी शांति सम्भव नहीं। एक व्यक्ति ने सलाह दी कि आप चाँद पर निवास करें, वहाँ कोई नहीं पहुँच सकेगा। इस पर दूसरे व्यक्ति ने कहा, कई देशों के यान चाँद पर पहुँच चुके हैं, आने वाले समय में, वहाँ भी आप अकेले नहीं रह सकेंगे।

सारी चर्चाओं में भगवान समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, कहाँ रहें जिससे वे अपनी योग निद्रा का आनंद ले सकें?

इसी प्रकार सोचते हुये उन्होंने गुरु बृहस्पति से इस बारे में सलाह मांगी तब बृहस्पति ने भगवान के कान में कुछ सलाह दी, जिसे सुनकर भगवान अत्यन्त प्रसन्न हो गये और कहा - हाँ, यही ठीक है, वहाँ मुझे कोई खोज नहीं सकेगा।

गुरु बृहस्पति ने उन्हें कहा कि आप मनुष्य के हृदय में ही बैठ जायें क्योंकि मनुष्य अपने सभी प्रार्थनागृहों में ही आपको ढूंढेगा लेकिन खुद के भीतर नहीं झांकेगा।

जब किसी साधक को यथार्थ में बहुत तड़फ होगी और तब वह किसी ज्ञानी पुरुष या श्रेष्ठ योगी का साहचर्य प्राप्त करेगाा और उसके दिशा निर्देशन पर चलकर जीवन के उन आयामों को स्पर्श कर भगवान को प्राप्त कर सकेगा।

वास्तव में भगवान कहीं और नहीं, मनुष्य के हृदय में ही निवास करते हैं, जरूरत इस बात की है कि हम हृदय में एकत्र विकारों की गंदगी को साफ करें और तब अपने अन्दर ही उनके दर्शन हो सकेंगे क्योंकि भगवान का अनुभव स्वच्छ और पवित्र हृदय में ही किया जा सकता है तब और कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष - सप्ताह का प्रारम्भ लाभ देगा। व्यापार में बढ़ोतरी होगी, मनोवांछित कार्य सम्पन्न होंगे। पुत्र का सहयोग मिलेगा। आपका कोई पुराना राज खुलने से चरित्र पर कीचड़ उछाला जा सकता है। दूसरे सप्ताह में शांति के साथ कार्य कर सकेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। परिवार में किसी का स्वास्थ्य अच्छा न होने से परेशान रहेंगे। शत्रु हावी रहेंगे। अपने ही सहयोग नहीं करेंगे। विद्यार्थी वर्ग की मेहनत सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति इस समय सुधरेगी। आप अपने कार्य स्वयं ही करने पर विश्वास करते हैं। कहीं से अचानक धनप्राप्ति के योग हैं। आवेश में न आयें, वाणी में मृदुलता रखें। चौथे सप्ताह में प्रतिकूल वातावरण रहेगा। शत्रुओं से सावधान रहें, क्रोध पर नियंत्रण रखें। कोई जमीन का सौदा हो सकता है। मेहनत रंग लायेगी। निराश न हों। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 22, 27, 28

वृष -प्रारम्भ खुशनुमा रहेगा। रुके हुये कार्य पूरे होंगे। व्यापार में उन्नति होगी। विद्यार्थी वर्ग का ज्ञान वर्द्धन होगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। कोई आकस्मिक घटना घट सकती है। वाहन धीमी गति से चलायें। मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। सरकारी ऑफिसों के चक्कर से छुटकारा मिलेगा। भौतिक सुखों पर खर्च करेंगे। मित्रों व सहयोगियों से सहायता मिलेगी। माह के मध्य में थोड़ा सावधान रहें। लोग बुराई करेंगे, कोई सहयोग नहीं करेगा। दूसरों के बहकावे में न आयें। समय उतार-चढ़ाव का है। राह में किसी से वाद-विवाद न करें। गलत सोहबत के लोगों से दूर रहें। क्रोध पर काबू रखें। लापरवाही से नुकसान हो सकता है। सतर्क रहें। अटके हुये रुपये प्राप्त होंगे। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी, कामयाबी मिलेगी। आप **सर्व सौभाग्य प्राप्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 30

मिथुन - प्रारम्भ के 1-2 दिन प्रतिकूल हैं। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। यात्रा से धन लाभ होगा। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। किसी नये व्यक्ति का आगमन आपको प्रभावित करेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। परिवर्तन से जीवन में सुधार आयेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। रुके हुये रुपयों की प्राप्ति होगी। अविवाहित व्यक्ति की सगाई हो सकती है। राजकीय सम्मान भी मिल सकता है। आप कठिनाइयों में भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे। व्यापार में प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं। संतान पक्ष का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सभी की इच्छायें पूर्ण कर सकेंगे। पुराने झगड़ों का निपटारा होगा, बिना वजह किसी से उलझें नहीं वरना अपमानित होना पड़ सकता है। विरोधी शांत रहेंगे। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। इस माह आप **हनुमान दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 31

कर्क - माह का प्रारम्भ उतार-चढ़ाव पूर्ण रहेगा। आत्मविश्वास कमजोर रहेगा। किसी और की चिन्ता में परेशान रहेंगे। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात व्यापार में सहयोग प्रदान करेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। किसी से मुलाकात प्यार में बदल जायेगी। शत्रु वर्ग निस्तेज रहेगा। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय है, जिसका भला करेंगे वही परेशानी में डालेगा। कर्मचारी वर्ग की पदोन्नति हो सकती है, उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। जीवनसाथी व संतान का सहयोग मिलेगा। अपने ही पीठ पीछे बुराई करेंगे। बिना सोचे-समझे कहीं हस्ताक्षर न करें। सूझ-बूझ से आप कार्यों को सुधारने में सक्षम हैं। इस समय की गई यात्रा यादगार पूर्ण रहेगी। आखिरी की तारीख टेंशनपूर्ण रहेगी। आप **मनः शांति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 16, 17, 24, 25, 26

सिंह - माह की शुरुआत अच्छी है। रुके हुये कार्य बनेंगे। शत्रु वर्ग परेशान करता रहेगा। संयम से काम लें, हठीलापन नुकसान पहुंचा सकता है। समय के साथ परस्थितियों में सुधार होगा। विरोधियों को समुचित जवाब देने में सक्षम होंगे। कम्प्यूटर के क्षेत्र में रोजगार चुनें। टेंशन में न रहें, आत्मविश्वास बनाये रखें। परिश्रम का पूरा परिणाम मिलेगा। किसी और के कारनामे आप पर थोपे जा सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। माह के मध्य में अनुकूल समय है, लाभ के अवसर हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में जीत होगी। शत्रु पक्ष के निंदा करने से आत्मविश्वास कमजोर पड़ेगा, विरोधी लाभ उठा लेंगे। इस समय शेयर बाजार, सट्टे आदि में धन लगाने से बचें। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ के अवसर हैं। आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

कन्या - सप्ताह का प्रारम्भ शुभ है। मुश्किलों के साथ कामयाबी मिलेगी। प्यार में सफलता एवं नौकरी में उन्नति होगी। किसी बुजुर्ग का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें। किसी उलझन में फंस सकते हैं। विद्यार्थियों का मन एकाग्र पढ़ाई में लगेगा। आय के स्रोत बढेंगे। किसी छोटी सी बात पर आपसी सम्बन्धों में मतभेद होगा। शत्रु हावी होने की कोशिश

करेंगे। कोई भी निर्णय जल्दबाजी में न लें। व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। संतान व्यापार में सहयोग करेगी। आखिरी सप्ताह में किसी से नोकझोंक हो सकती है। क्रोध पर नियंत्रण रखें अन्यथा नुकसान हो सकता है। नये मित्र बनेंगे। फालतू टेंशनों से मुक्ति मिलेगी। आप **महालक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 23

तुला - प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पैसे को सोच-समझकर इन्वेस्ट करें। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। बाधाएं आयेंगी। व्यापार में उन्नति होगी। महत्वपूर्ण लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। आय में बढोतरी होगी। दूसरा सप्ताह प्रतिकूल है। मेहनत का फल नहीं मिलेगा। व्यापार में साझेदार नुकसान कर सकते हैं। मानसिक चिंताएं बढ़ेंगी। लम्बी यात्रा हो सकती है। फालतु के झंझटों से छुटकारा मिलेगा। किसी की सगाई हो सकती है। किसी छोटी सी बात पर अनावश्यक वाद-विवाद हो सकता है। शत्रुओं से सावधान रहें। उच्चाधिकारियों से मित्रता होगी। विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम है। मेहनत करते रहें, काम का बोझ रहेगा। मेहनत निष्फल नहीं जायेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी। इस माह आप **भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 31

वृश्चिक - माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। स्वास्थ्य खराब रहेगा। आर्थिक नुकसान भी हो सकता है। खर्च की अधिकता रहेगी। दूसरे सप्ताह में रुके कार्य निपट जायेंगे। कर्मचारी वर्ग को साथियों से प्रशंसा मिलेगी। उत्साह बढेगा। छोटी सी किसी बात से अनावश्यक वाद-विवाद हो सकता है। शत्रु पक्ष मौके का फायदा उठायेंगे। अपने भी साथ नहीं देंगे। खर्च सोच-समझकर करें। विद्यार्थियों की परीक्षा अच्छी सम्पन्न होगी, मनोवांछित कार्य बनने शुरू होंगे। नौकरी के इण्टरव्यू में सफलता के अवसर हैं। किसी पर अत्यधिक विश्वास घातक हो सकता है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। व्यापारिक यात्रा लाभ देगी। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। खर्च पर अंकुश लगायें। दाम्पत्य जीवन मधुरतापूर्ण रहेगा। धार्मिक यात्रा हो सकती है। आप **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 16, 17, 24, 25, 26

धनु - प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। आर्थिक सहयोग मिलने से रुके कार्य पूर्ण होंगे। विरोधी अत्यधिक हावी रहेंगे। भौतिक सुख में वृद्धि होगी। पारिवारिक वातावरण सुखद होगा। बहुप्रतीक्षित इच्छायें पूर्ण होंगी। मित्रों और सहयोगियों से सहायता मिलेगी। माह के मध्य की तारीख में कुछ परेशानियां आयेंगी, मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। इस समय यात्रा न करें। वाहन चालन में सावधानी रखें, उच्चाधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। वाणी में विनम्रता एवं मिठास सफलता देगी। शेयर मार्केट से दूर रहें। गलत सोहबत के व्यक्ति से दूर रहें। क्रोध पर काबू रखें। लापरवाही न करें। अनर्गल कार्यों में धन व्यय न करें। विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। इस माह **मनोकामनापूर्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

मकर - सप्ताह का प्रारम्भ शुभ है। रुके हुए कार्य बनने शुरु होंगे। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। नौकर धोखा दे सकते हैं, मेहनत बेकार जाने से टेंशन रहेगा। वाहन धीमी गति से चलायें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। किसी से वाद-विवाद न करें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ होगा। माह के मध्य में परेशानियां आयेंगी। व्यापार में नुकसान हो सकता है। रुपये-पैसे कहीं आते नहीं दिखेंगे। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जीवनसाथी से तनाव रहेगा। धीरे-धीरे स्थिति में सुधार होगा। मेहनत का फल मिलेगा।

सर्वार्थ सिद्धि योग	- मार्च-6, 8, 9, 14, 15, 23, 27, 28
रवि योग	- मार्च-6, 8, 12, 13, 16, 17, 24
अमृत सिद्धि योग	- मार्च-23
रवि पुष्य योग	- मार्च-13 (रात्रि 8.06 से 14 मार्च प्रात: 6.36 तक)

मनोवांछित कार्य पूर्ण होंगे। किसी से वाद-विवाद न करें। धार्मिक शास्त्रों के अध्ययन में रुचि रहेगी। कर्मचारी वर्ग का प्रमोशन सम्भव है। बाधाएं दूर होंगी। भाईयों में मतभेद दूर होंगे। चित्त प्रसन्न रहेगा। आप **बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 11, 12, 13, 20, 21, 29, 30

कुम्भ - माह का प्रारम्भ शुभ नहीं है। अनावश्यक लड़ाई-झगड़ा हो सकता है। कोई झूठा लांछन लग सकता है। विरोधी भी परेशान करेंगे, सावधान रहें। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेगा। अचानक शत्रुओं के कारण परेशान रहेंगे और दूसरों की नजरों में बुरे इंसान बन जायेंगे परन्तु आवेश में न आयें, लापरवाही न बरतें। विदेश जाने का प्रोग्राम हो सकता है। आय के अनेक स्रोत बनेंगे। जमीन का सौदा भी लाभ देगा। पारिवारिक समस्याओं के कारण मानसिक शांति भंग हो सकती है। नया वाहन भी खरीद सकते हैं, आखिरी सप्ताह संतोषप्रद रहेगा। विद्यार्थियों का परीक्षा में पेपर अच्छा होने से प्रसन्नता रहेगी। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा। आप **पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 31

मीन - माह का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। किसी से नोक-झोंक हो सकती है, वाद-विवाद से दूर रहें। नशीले पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग को पढ़ाई पर अधिक ध्यान देना चाहिए। परिश्रम से कठिनाइयां स्वत: दूर होंगी। अपनी योग्यता के बल पर आप विशिष्ट सफलता पायेंगे। दूसरे सप्ताह में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। शत्रु वर्ग भी आपकी योग्यता से प्रभावित होगा। दाम्पत्य जीवन में तनाव हो सकता है। व्यापार में उन्नति होगी, मित्रों का सहयोग मिलेगा, मध्य में व्यस्तता रहेगी, संतान का सहयोग मिलेगा। कोई अशुभ समाचार परिवार में शांति भंग कर सकता है। रुके पैसे प्राप्त होंगे, नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति के अवसर हैं। कोई भी फैसला इस समय सोच-समझकर कर लेवें, जीवन में प्रगति का अवसर है। आप **भाग्योदय साधना** करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26, 27

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.03.22	मंगलवार	**महाशिवरात्रि**
10.03.22	गुरुवार	**होलाष्टक प्रारम्भ**
14.03.22	सोमवार	**आमलकी एकादशी**
17.03.22	गुरुवार	**होली**
19.03.22	शनिवार	**बसंतोत्सव**
22.03.22	मंगलवार	**रंग पंचमी**
25.03.21	शुक्रवार	**शीतलाष्टमी**
26.03.21	शनिवार	**गुरु पर्व**
27.03.21	रविवार	**10 महाविद्या दिवस**
28.03.21	सोवार	**पाप मोचनी एकादशी**

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मार्च-6, 13, 20, 27)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (मार्च-7, 14, 21, 28)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मार्च-1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मार्च-2, 9, 16, 23, 30)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (मार्च-3, 10, 17, 24, 31)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मार्च-4, 11, 18, 25)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मार्च-5, 12, 19, 26)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मार्च-22

11. आज प्रातः पूजन के बाद चींटियों को आटा डालें।
12. काली उड़द की दाल कुछ दक्षिणा के साथ किसी असहाय को दान दें।
13. भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
14. आज आमलकी एकादशी पर किसी गरीब को भोजन करायें।
15. आज हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जायें।
16. आज गौरी शंकर रुद्राक्ष (150/-) ताम्रपत्र में स्थापित करके निम्न मंत्र का 101 बार जप करके कुछ दक्षिणा के साथ दान दें-

    ।। ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ।।
17. आज होली है पत्रिका में प्रकाशित साधना अवश्य करें।
18. आज प्रातः सर्व बाधा दोष निवारण यंत्र स्थापित करके निम्न मंत्र का 51 बार जप करके फिर किसी निर्जन स्थान पर गाड़ दें-

    ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ
19. किसी देवी मन्दिर में 11 पुष्प चढ़ायें।
20. गायत्री मंत्र का एक माला जप करके जाएं।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन का 1 पाठ करें।
22. हनुमान मन्दिर में पांच दीपक जलायें। बाधाएं समाप्त होगी।
23. आज घी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का 51 बार जप करें-ॐ ह्रीं ॐ।
24. किसी पीपल के पेड़ में एक लोटा जल चढ़ायें।
25. दुं दुर्गाय नमः का 21 बार जप करके ही कार्य पर जाएं।
26. आज गुरु मंत्र की 16 माला जप करके जाएं।
27. आज 5 मिनट निम्न मंत्र का जप करें-

    ॐ सूर्य आदित्याय नमः।
28. प्रातः दूध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
29. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होगी।
30. केसर का तिलक लगाकर कार्य पर जाएं।
31. चना और गुड़ का दान करे, कार्य में सफलता मिलेगी।

अप्रैल-22

1. गाय को रोटी खिलायें।
2. आज से नवरात्रि प्रारम्भ है, माँ दुर्गा की आरती करें।
3. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
4. आज निम्न मंत्र का 51 बार जप करके जाएं-

    ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
5. आज श्री पंचमी है। कोई भी लक्ष्मी साधना करें।
6. आज माँ दुर्गा को दूध की बनी मिष्ठान का भोग लगायें।
7. आज गुरु गुटिका (न्यौ. 150/-) का पूजन करके धारण करें।
8. ॐ दुं दुर्गाय नमः का 1 माला जप करके जाएं।
9. आज दुर्गाष्टमी है, नवार्ण मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।
10. आज राम रक्षा स्तोत्र का एक पाठ करें।

देवी तारा दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या है और धनप्राप्ति के लिए संसार की अद्वितीय धनदायक देवी हैं।

हजारों वर्षों से ऋषि-मुनि और हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते रहे हैं क्योंकि निष्ठापूर्वक की गई साधना में सफलता अवश्य प्राप्त होती है

इसके साथ ही साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर अन्य महाविद्या साधना करने में भी अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधक भौतिक दृष्टि से जीवन में जो कुछ चाहता है, उसमें उसे सफलता मिलती है।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए सर्वश्रेष्ठ दिवस तारा जयंती है, जो कि इस बार 10.04.22 दिन रविवार को आ रहा है। अन्य दिनों में यह साधना किसी भी रविवार से सम्पन्न की जा सकती है। इस बार 10.04.22 को रविवार भी है और इस दिवस पर रवि पुष्य योग भी है, जो कि एक श्रेष्ठ मुहूर्त है। अतः साधकों को इस दिन यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए। क्योंकि इन विशेष मुहूर्तों में शीघ्र सफलता के अवसर हैं।

साधना सामग्री

- **तारा यंत्र एवं तारा चित्र**
- **तारा वत्सनाभ**
- **तारा माला**

साधना विधान

इस दिन रात्रि कोस्नान कर लाल धोती पहन कर, लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा दें और उस पर तारा यंत्र, तारा चित्र स्थापित कर दें, साथ ही लाल रंग से रंगे हुये चावल की ढेरी बनायें और उस पर तारा वत्सनाभ स्थापित करें। तेल का दीपक लगायें। इसमें कोई भी तेल इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ ही जल पात्र स्थापित करें धूपबत्ती लगायें।

अब तारा यंत्र को जल से धोकर रखें, उस पर कुंकुम लगायें और अक्षत चढ़ायें फिर तारा वत्सनाभ को जल से धोकर पोंछ कर फिर उस पर माचिस की शलाका से कुंकुम से निम्न मंत्र लिखें।

।। ॐ तारा तूरी स्वाहा ।।

फिर दीपक एवं धूपबत्ती जला दें, लाल रंग के पुष्प चढ़ायें। अब हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक नाम अमुक गोत्र का साधक इस साधना को सम्पन्न कर रहा हूँ। माँ तारा, हमारे भौतिक जीवन से सम्बन्धित सभी इच्छाएं पूर्णकरें, हमारे जीवन में आर्थिक उन्नति होती रहे।

।। ऐं ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।।

फिर मूंगा माला से उपरोक्त मंत्र नित्य 31 माला जप 6 दिनों तक सम्पन्न करें। छठे दिन आपको सूक्ष्म रूप से दर्शन भी हो सकते हैं एवं जो कुछ भी अनुभव हो वह किसी अन्य को न बतायें।

तारा यंत्र एवं चित्र पूजा स्थान में रख दें और तारा वत्सनाभ को उसी लाल वस्त्र में लपेटकर घर के किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है और शीघ्र ही माँ तारा की कृपा साधक को प्राप्त होती है और जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है, जो साधक की इच्छा होती है।

वस्तुतः यह साधना अपने आप में शीघ्र फलदायी है जो इसे सम्पन्न करता है। उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। प्रत्येक साधक इस विशेष शुभ मुहूर्त पर इसे अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री- 570/-

कहा जाता है कि

बीमारी, मुकदमा और गरीबी

ये तीन शत्रु ऐसे हैं

जो जीवन को दीमक की तरह खोखला कर देने वाले हैं

एक बार जब ये तीनों जीवन में घुस जाते हैं तो
जीवन शनैः-शनैः खोखलाहोता रहता है
और ऐसा लगता है कि जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है

विजय प्राप्ति हेतु

गणपति साधना

मनुष्य का ये कर्तव्य है कि इन तीन बाधाओं से जीवन में जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी मुक्ति प्राप्त कर ले।

जीवन में शत्रुओं द्वारा किए गए घात-प्रतिघात से जो स्थिति बनती है, वह अत्यन्त पीड़ादायक होती है। रोज-रोज कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाना, सम्पत्ति पर दूसरों का कब्जा, परिवार में विभेद, ये सारी स्थितियां विनाशकारी ही हैं।

जो विघ्नों का नाश कर जीवन में पूर्ण विजय प्रदान कराते हैं।

इसी कारण देवताओं में भी प्रथम पूज्य देव हैं। ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी तथा शुभ और लाभ के पिता हैं

प्रत्येक कार्य से पहले गणपति की पूजा इसीलिए की जाती है कि वह कार्य बिना बाधा के पूर्ण हो जाए, घर के द्वार पर भी गणपति की मूर्ति-चित्र स्थापित करने के पीछे यही भावना है कि नित्य उनके दर्शन होते रहे और जीवन में बाधाएं समाप्त हो जाएं। यदि कोई व्यक्ति नित्य प्रातः गणपति विग्रह का ध्यान कर अपने कार्य के लिए जाता है तो उसका दिन निश्चित रूप से अच्छा बीतता है।

साधना विधान

प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुद्ध आसन बिछाकर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठें, सामने चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर पहले गुरु चित्र स्थापित करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें। हे! गुरुदेव मेरी यह साधना आपकी कृपा से सफल हो जिससे मैं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके परिवार सहित निर्विघ्न रूप से सुखी जीवन बिता सकूं। इसके बाद धूप, दीप, पुष्प आदि से पंचोपचार पूजन करके संकल्प करें। दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य का उच्चारण करें।

मैं (अपना नाम लिखें), अमुक गोत्र (गोत्र बोलें) अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए इस साधना में सफलता प्राप्ति के लिए इस मंत्र का यथासंख्या जप करूंगा। चित्र के सामने ताम्र की प्लेट रख कर उसमें कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर पारद गणपति को उसमें स्थापित कर दें। फिर यथा विधि स्नान, तिलक, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करके लड्डू का भोग लगाएं।

यह प्रातःकालीन पांच दिन की साधना है। मूर्ति में सिन्दूर का तिलक लगाएं, इसके बाद लड्डू का भोग लगाकर 21 लाल फूल कनेर के चढ़ाएं। यदि कनेर पुष्प न मिले तो इसी जप मंत्र को बोलते हुए 21 लौंग चढ़ावें जिस कार्य के लिए यह प्रयोग कर रहे हो, उसका निवेदन करें। पांच दिन तक नियम पूर्वक नित्य 11 माला जप मूंगा माला से करें।

पाँच दिन के बाद पाँच कन्याओं को मीठा भोजन दान दक्षिणा सहित कराएं। जब तक मुकदमा पूरा न हो तब तक गणपति जी का पूजन नित्य करें तथा एक माला या पाँच माला नित्य जप करते रहें। जब भी कोर्ट-कचहरी जाएं तब मंत्र का स्मरण करें। विजय प्राप्ति के लिए किसी प्रकार की असावधानी न करें। श्रद्धा न छोड़ें ऐसा करने से विजय अवश्य मिलेगी।

मंत्र

।। ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः ।।

साधना सामग्री- 600/-

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

हनुमान जयंती
16.04.22

मुर्दा शरीर में भी प्राण फूंकने और
सम्पूर्ण मानसिक, शारीरिक रोगों से मुक्त होकर
अत्यधिक बलशाली होकर सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने का श्रेष्ठतम प्रयोग...

आज व्यक्ति के जीवन में अंधकार व्याप्त हो रहा है। वह समाज से पलायन कर रहा है, समाज में दृढ़ता के साथ स्थिर रहकर परिस्थितियों का मुकाबला नहीं कर पा रहा है, जिसके कारण वह जीवित तो है,

परन्तु उसके अन्दर जोश, उमंग, उत्साह, बल, साहस आदि नहीं है, फिर उस व्यक्ति में और एक मुर्दे में कोई अन्तर नहीं रह जाता है।

यदि हमें मानव जीवन मिला है, तो इसका पूर्ण रूप से सदुपयोग कर अपने जीवन को चुनौती के साथ जीयें, न कि डर कर, भीड़ में खोकर, अस्तित्व विहिन होकर

हुं	हुं	हुं	हुं
हुं	हुं	हुं	हुं
हुं	हुं	हुं	हुं
हुं	हुं	हुं	हुं
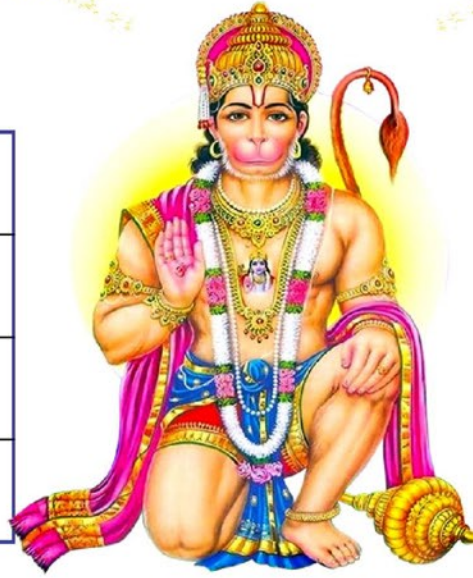
प्राचीन युग में ऋषियों को भविष्य ज्ञात था, कि आने वाले युग की संतान, पीढ़ियां स्वयं में इतनी अधिक सामर्थ्यवान नहीं होंगी, कि वे अपने प्रयत्न से अपने जीवनको रोगमुक्त कर सकें और बलशाली होकर अपने जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त कर सकें इसलिए उन्होंने कई साधनाओं का अनुसंधान किया, उन साधनाओं में ही विशिष्ट स्थान प्राप्त है, यह 'बजरंग प्रयोग'।

ऐसे जीवन से तो मृत्यु अच्छी है। जिनके जीवन में जोश नहीं है, पौरुषता नही है, साहस नहीं है, अडिगता नहीं है, क्योंकि किसी ने फटकार दिया तो सुन लिया, कोई अपमान कर गया, तो सह लिया, किसी ने चुनौती दी, तो उसे स्वीकार नहीं कर सके, तो ऐसे व्यक्तियों को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए, जिससे वे अपने जीनव को शेर की तरह जी सकें। यह प्रयोग सम्पन्न करने से कमजोर से कमजोर व्यक्ति में भी चुनौती का सामना करने का साहस आ जाता है।

व्यक्ति इतना अधिक तनाव में जीता है, कि वह अनेक मानसिक और शारीरिक रोगों से ग्रस्त होने लगता है, यह साधना उसमें सामर्थ्य उत्पन्न करती है, जिससे वह शारीरिक और मानसिक रोगों का निरोध कर पाता है, क्योंकि इस प्रयोग को सम्पन्न करने से उसकी शारीरिक और मानसिक व्याधियां भी ठीक होने लगती हैं।

जीवन में सर्वोच्चता पाने के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से रोग मुक्त होना ही पड़ेगा, क्योंकि बिना रोगमुक्त हुए जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हुआ जा सकता है.... और यही कारण है कि व्यक्ति अनेकों प्रयत्न करता है अपने आपको रोगमुक्त रखने के लिए, अनेकों प्रकार की चिकित्सा विधियों का सहारा लेता है, किन्तु कभी-कभी जब वह इससे ठीक नहीं हो पाता है, तो अपने आप पुकार उठता है - 'हे भगवान! रक्षा करो!

भगवान तो समय-समय पर विविध रूप, विविध उपायों द्वारा सभी के लिए सहायक बनते ही हैं। ऐसे ही भक्त वत्सल व पूर्ण सहायक हैं 'श्री हनुमान' तभी तो कहा गया है-

नासै रोग हरैं सब पीरा,
जपत निरन्तर हनुमत वीरा।

श्री हनुमान तो अपने भक्तों को उनके जीवन में सफलता प्रदान करते ही हैं और साधक को सर्वोच्चता-सफलता तक पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

भक्त वत्सल श्री हनुमान के बजरंग स्वरूप पर आधारित यह प्रयोग साधक के जीवन में आश्चर्यजनक रूप से उसके व्यक्तित्व में, उसके जीवन में परिवर्तन ला देता है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् वह अपने जीवन में समस्त मानसिक और शारीरिक रोगों से पूर्ण रूप से मुक्ति पाता ही है तथा उसके जीवन में सफलता के, सर्वोच्चता के रास्ते खुलते जाते हैं और शनैः-शनैः वह जीवन में अत्यन्त बलशाली होकर इच्छित कामना पूरी कर लेता है।

इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के अन्दर श्री हनुमान के समान बल, साहस, अदम्य तेज, तीव्र बुद्धि उत्पन्न होने लगती है। वह हर प्रकार की परिस्थिति में अडिग भाव से खड़ा रह सकता है तथा उनका दृढ़ता से सामना करता है।

'बजरंग बली' जिनमें अदम्य साहस है, अतुलनीय बल, भक्ति है जो अत्यन्त विनम्र, सेवाभावी हैं तथा इष्ट भक्ति में सर्वोच्च हैं, उनका प्रयोग सम्पन्न करने से तो जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती है, वे अपने भक्तों को तो कष्ट में देख ही नहीं सकते हैं।

यह प्रयोग आप 16.04.22 को हनुमान जयंती के अवसर पर या किसी भी शनिवार को सम्पन्न कर सकते हैं।

यह एक दिवसीय साधना है, प्रातःकाल करें, तो ज्यादा अनुकूल होगा।

इनकी साधना में आवश्यक सामग्री है 'बजरंग यंत्र'।

- यंत्र का चंदन, पुष्प, धूप आदि से पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें

  अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
  सकलगुण निधानं वानराणामधीशं; रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

- वीरासन में बैठकर निम्न मंत्र का 11 माला जप मूंगा माला से करें एवं लाल रंग के पुष्प यंत्र पर चढ़ायें-

  ।। ॐ हुं बजरंग सिद्धये हुं ।।

- तत्पश्चात् एक बार बजरंग बाण का पाठ करें। गेहूं की रोटी तथा गुड़, घी से बने चूरमे का भोग लगायें। अगले दिन यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें। साधक को प्रत्येक मंगलवार को बजरंग बाण का एक पाठ करते रहना चाहिए।

यह प्रयोग सम्पन करने से व्यक्ति में आश्चर्यजनक परिवर्तन आता है तथा वह पूर्ण रूप से रोगमुक्त होकर सामर्थ्यवान बनकर अपने कार्य क्षेत्र में सर्वोच्चता प्राप्त करता है। यदि साधक पूर्ण एकाग्र भाव में तथा विश्वास से यह प्रयोग सम्पन्न करें, तो सफलता मिलना संदिग्ध नहीं रहता है।

न्यौछावर - साधना सामग्री- 450/-

आयुर्वेद सुधा

शहद

ईश्वर ने जगत में एक से बढ़कर एक वस्तु बनाई है और ऐसी परम श्रेष्ठ वस्तुओं में से एक वस्तु शहद है, जो प्रकृति का एक अद्भुत और बेजोड़ वरदान ही है। सारे संसार के धर्मग्रन्थों, चिकित्सा शास्त्रों एवं पदार्थवेत्ता विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से शहद की प्रशंसा की है और इसे अत्यन्त गुणकारी पदार्थ माना है। जैसे गंगा का पावन जल वर्षों तक रखे रहने पर भी खराब नहीं होता वैसे ही वर्षों तक रखा रहने पर भी शहद खराब नहीं होता। इसीलिए तो आयुर्वेद शास्त्र ने–'पुराणं लघु संग्राहि निर्दोषं स्थौल्यनाशनम्' के अनुसार पुराने शहद को हलका यानी शीघ्र पच जाने वाला, संग्राहि (दीपन और पाचन करने वाला) यानी मलरोधक, निर्दोष तथा मोटापा नष्ट करने वाला माना तथा नये शहद को भी–'बृंहणीय मधुनव वातश्लेष्महरं परम्'–के अनुसार पुष्टिकारक, वात कफ को हरने वाला माना है।

भारतीय परम्परा में 'पंचामृत' के पांच द्रव्यों में से एक द्रव्य के रूप में शहद का ही प्रयोग होता आ रहा है। प्राचीनकाल में ही नहीं, आधुनिक काल के विद्वानों, विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने भी शहद की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की है और अनेक अनुसन्धान एवं परीक्षण करके शहद की श्रेष्ठता, गुणवत्ता और उपयोगिता सिद्ध की है। संक्षेप में, कहने का तात्पर्य है कि शहद प्रकृति का दिया हुआ एक नायाब तोहफ़ा है, गुणों का भण्डार है लिहाज़ा उचित विधि, युक्ति और मात्रा के अनुसार शहद का सेवन बच्चे, किशोर, युवा, बूढे, स्त्री व पुरुषों को अवश्य करना चाहिए। यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि शहद शुद्ध हो, मिलावट किया हुआ न हो।

शहद के प्रयोग के विषय में सबसे पहला और महत्वपूर्ण नियम है कि शहद का प्रयोग (अष्टाङ्ग हृदय) के अनुसार गरम किया हुआ, गर्मी से पीड़ित अवस्था में और गरम आहार के साथ शहद का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए।

शहद शुद्ध, पका हुआ और नमी रहित होना चाहिए। कच्चा, धूप या आग पर गरम किया हुआ तथा खमीर उठा हुआ नहीं होना चाहिए।

शहद उचित विधि और स्वच्छता के साथ मधुमक्खी के छत्ते से निकाला गया और गन्दगी रहित होना चाहिए।

एक ही वक्त में बहुत मात्रा में शहद खाना उचित नहीं बल्कि दिन में 3-4 बार में 1-2 चम्मच (लगभग 10 ग्राम मात्रा में) खाना चाहिए। अकेला यानी सिर्फ कोरा शहद नहीं खाना चाहिए बल्कि किसी खाद्य पदार्थ, फल, दूध या ठण्डे पानी (जैसी जरूरत हो) के साथ ही खाना चाहिए। फलों के रस, मलाई या क्रीम के साथ खाना चाहिए।

शहद के औषधीय प्रयोग

शहद की एक विशिष्ट महत्ता यह है कि यह न सिर्फ औषधि के नुस्खों में ही शामिल किये जाने योग्य है बल्कि योगवाही होने से औषधि के साथ अनुपान के रूप में भी यह प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह जिस पदार्थ के साथ मिलाया जाता है उसकी गुणवत्ता को सुरक्षित भी रखता है और उस पदार्थ के गुणों की वृद्धि भी करता है। यहाँ शहद के कुछ घरेलू प्रयोग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

शिशु वर्ग–छोटे शिशु की माता अपना दूध एक छोटा चम्मच भर लेकर उसमें 4-5 बूंद शहद डाल कर रोजाना शिशु को सुबह शाम पिलाया करे तो बच्चे को कब्ज नहीं होता, पेट नहीं फूलता, कफ-खांसी की शिकायत नहीं होती, बच्चा नींद में रोता नहीं और बिस्तर में पेशाब नहीं करता। बच्चे के पेट में कीड़े हों तो एक छोटे चम्मच भर दही में आधा चम्मच शहद मिला कर बच्चे को पिलाना चाहिए। कीड़े मर कर मल के साथ निकल जाते हैं। दांत निकलते समय शहद में जरा सा सोहागा महीन पिसा हुआ मिला कर शिशु के मसूढ़ों पर लगाना एवं हलके से मलना चाहिए। इसमें दांत-दाढ़ आसानी से निकल आते हैं। बच्चे को सुबह शाम चौथाई भर चम्मच शहद थोड़े से दूध में मिला कर पिलाने से बच्चा मोटा-ताजा, सुडौल और मजबूत शरीर वाला होता है।

स्त्री वर्ग–महिलाओं के लिए शहद अनेक प्रकार से हित करने वाला श्रेष्ठ पदार्थ है। यह स्त्रियों को अच्छा स्वास्थ्य, सौन्दर्य और बल प्रदान करने वाला पौष्टिक द्रव्य है। यह दुबली पतली स्त्रियों को पुष्ट व सुडौल शरीर वाली तथा मोटी स्त्रियों का मोटापा कम करके इकहरे

बदल वाली बनाने वाली अद्भुत क्षमता रखने वाला एक मात्र पदार्थ है जो ठण्डे दूध में मिला कर पीने से शरीर को मोटा करता है और ठण्डे पानी में मिला कर पीने से मोटापे को दूर करता है। कमजोर दुबली पतली लड़कियों और स्त्रियों को नियमित रूप से 40 दिन तक एक गिलास ठण्डे दूध में शक्कर न डाल कर 2 चम्मच (लगभग 10 ग्राम) शहद घोल कर सुबह शाम करना चाहिए। बाद में कुछ दिन तक सेवन करना बन्द रख कर फिर शुरू कर दें क्योंकि शहद को लगातार लम्बे समय तक सेवन नहीं करना चाहिए। मोटी महिलाएं एक गिलास ठण्डे पानी में सुबह-शाम 2 चम्मच शहद घोल कर पिया करें।

गर्भवती महिलाओं को शहद का सेवन अवश्य करना चाहिए। यह उनके शरीर के साथ ही गर्भस्थ शिशु के शरीर को भी पुष्ट, सुडौल और शक्तिशाली रखता है। गर्भावस्था शुरू होते ही शहद का सेवन शुरू कर देना चाहिए और बीच-बीच में कुछ दिन बन्द रख कर पूरे 9 माह तक शहद का सेवन दूध, फल, फलों के रस आदि के साथ सुबह-शाम सेवन करना चाहिए। इससे रक्ताल्पता, कमजोरी और दुबलेपन की स्थिति उत्पन्न नहीं होने पाती। अनिद्रा की शिकायत नहीं होती। शहद का सेवन करने वाली महिला को श्वेत प्रदर रक्त प्रदर आदि नारी रोग नहीं होते। सिर के बाल घने और लम्बे बने रहते हैं। चेहरा भरा हुआ और तेजस्वी रहता है।

पुरुष वर्ग–पुरुष वर्ग के लिए भी शहद अत्यन्त पौष्टिक, बलवर्द्धक और रक्तशोधक पदार्थ है। नित्य सुबह शाम 10-10 ग्राम शहद ठण्डे दूध या फल या फलों के रस में घोल कर 40 दिन तक सेवन करें और लाभ देख लें। यह कब्ज नाशक और यौनशक्ति बढ़ाने वाला उत्तम द्रव्य है। इसे युवा, प्रौढ़ और वृद्ध सभी आयु के पुरुष सेवन कर सकते हैं। दिमागी काम करने वालों और खास कर विद्यार्थियों को शहद का सेवन अवश्य करना चाहिए। यदि एक बादाम का दाना सुबह पानी में डाल कर शाम को छिलका हटा कर इस दाने को पानी के साथ सिल पर चन्दन की तरह घिस कर, इसका लेप भी शहद मिले दूध में डाल कर पिएं तो इसके गुण व लाभ में और भी वृद्धि हो जाती है। इस प्रयोग से दिमागी एवं शारीरिक ताकत बढ़ती है और दौर्बल्य दूर होता है। शहद के सेवन से सिर दर्द, हृदय-दौर्बल्य धातु-दौर्बल्य, शीघ्र पतन, यौनशक्ति की कमी, पेट दर्द, स्नायविक-दौर्बल्य, थकावट, मूत्र-विकार, आमवात, गठिया, कफ के रोग, खांसी, श्वास रोग आदि रोगों का मुकाबला करके शरीर को रोगों से बचाने वाली रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

सौन्दर्य प्रसाधन–सौन्दर्य की रक्षा में त्वचा और केशों का भारी हाथ होता है। शहद मिले उबटन का प्रयोग चेहरे और पूरे शरीर पर करने से चेहरे व शरीर की त्वचा चिकनी, मुलायम, उज्ज्वल और कान्तिपूर्ण बनी रहती है। चेहरे व पूरे शरीर पर लगाने योग्य एक श्रेष्ठ एवं असरकारी उबटन का नुस्खा प्रस्तुत है–

3 चम्मच शहद, एक चम्मच नींबू का ताजा निकाला रस, 10 ग्राम चिरौंजी चूर्ण, पाव चम्मच पिसी हल्दी और आवश्यकता के अनुसार जौ का आटा। सब सामान मिला कर लेप बना लें। आटा उतना ही मिलाएं जितना गाढ़ा लेप बनाने के लिए आवश्यक हो। इस उबटन को स्नान से घण्टे भर पहले लगा लें और स्नान करते वक्त पानी से धो डालें। चाहें तो इसे सोने से पहले भी लगा सकते हैं। घण्टे भर बाद पानी से धो सकते हैं। पूरे शरीर पर साबुन न लगा कर इस उबटन को लगा कर मसलना चाहिए और स्नान करके धो डालना चाहिए।

इस उबटन का लगातार प्रयोग करने से चेहरे और शरीर की त्वचा का रंग धीरे-धीरे साफ हो जाता है और त्वचा साफ, बेदाग, चमकीली और चिकनी बनी रहती है। युवक-युवतियों और युवा स्त्रियों को इस उबटन का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। महंगे, त्वचा को बिगाड़ने वाले और कृत्रिम सौन्दर्य-प्रसाधनों का प्रयोग न करके इस उबटन का प्रयोग करना अधिक श्रेयस्कर है। यह उबटन कील मुहांसों, दाग-धब्बों और झाइयों को भी दूर करता है और चेहरे की त्वचा की कान्ति बनाये रखता है। यह उबटन श्रेष्ठ, निरापद, प्राकृतिक और असरकारक घरेलू सौन्दर्य प्रसाधन है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

शरीर के प्रत्येक अंग को सुड़ौल बनाना आवश्यक है मन को हर समय जवान रहना आवश्यक है तो अपनाइये

और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

यह प्राणायाम नाड़ियों अर्थात् स्नायुमंडल की शुद्धि के लिए किया जाता है। यह बड़ा ही सरल प्राणायाम है और बहुत उपयोगी भी। मन को एकाग्र कर आप इसके क्रम को बढ़ाएं।

अनुलोम-विलोम-

नाड़ी शोधन की पहली अवस्था अलोम-विलोम है। पद्मासन में बैठें। बायीं नासिका से श्वास भरें और दायीं से छोड़े, फिर दायीं से भरें और बायीं से छोड़ें। इसी प्रकार 5-7 मिनट इसका अभ्यास करें। प्रयास करें कि जितना समय श्वास लेने में लगे, उतना ही समय श्वास छोड़ने में भी लगे और लय भी एक जैसी हो। इसका अभ्यास हो जाने के बाद रेचक का समय दोगुना कर दें।

रोगी तथा दुर्बल व्यक्ति इस प्राणायाम से विशेष लाभ ले सकते हैं। हृदय तथा श्वास रोगियों के लिए यह अति उत्तम प्राणायाम है जिससे मन शांत तथा नाड़ियां शुद्ध होती हैं।

विधि :

सिद्धासन, पद्मासन या सुखासन में बैठ जाएं। श्वास को शांत करें। दायें हाथ की दोनों पहली अंगुलियों को मोड़ते हुए दायीं नासिका को अंगूठे से बंद कर लें और श्वास को बायीं नासिका से भरें। चौथी एवं पांचवीं अंगुली से बायीं नासिका को बंद कर लें और कुछ क्षण आंतरिक कुंभक करे। अंगूठे को हटाकर दायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वास निकाल दें। फिर दायीं नासिका से श्वास लें। दोनों नासिकाएं बंद करें। फिर बायीं नासिका से श्वास बाहर निकाल दें। यह नाड़ीशोधन प्राणायाम की एक आवृत्ति हुई।

इसे तीन-चार बार प्रतिदिन करते हुए अभ्यास को बढ़ाएं। उतनी देर श्वास रोकना है, जितनी देर आप आराम से रोक सकें और जब सांस छोड़ें, तो छोड़ने की गति धीमी हो। जब आपका यह अभ्यास पक्का हो जाए तो श्वास का क्रम बना लें। यदि श्वास लेने में 4 सेकंड लगें, तो 8 सेकेंड तक श्वास रोकें और 8 सेकंड में ही श्वास को बाहर निकालें। यानि एक, दो और दो (1:2:2) का अनुपात। इस अनुपात को 1:4:2 तक बढ़ाएं। श्वास रोकने में शक्ति नहीं लगानी है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम में विशेष ध्यान देने योग्य बाते हैं पूरक, कुंभक और रेचक की क्रियाओं में एक विशेष अनुपात का होना तथा रेचक करते समय नासिका से अधिक दूरी पर श्वास का अनुभव न होना।

Anang Trayodashi (14.4.22)

or Any Friday

Kaamdev Rati Sadhana
Be Live, Be Beautiful ?

Beauty and love form the essence of life and every one in the world wishes to experience these two treasures. These are two elements that make life worth it and keep a person feeling youthful and energetic even though one might have crossed one's prime of life.

Most people mistake beauty for physical looks and love for passion. One cannot do much about transforming the way Nature has presented an individual to the world. Even cosmetics to little to make one look much attractive. But there sure are Mantras that could instil strange hypnotic magnetism in one's personality that everyone could be drawn towards one like a piece of iron pulled by a magnet. These are mantras that make beauty spring from within and the transformation could be too subtle to be noticed by the naked eye but without doubt the effect is simply amazing.

I have known revered Sadgurudev to have gifted this ritual and Mantra to many desperate individuals, and each of them benefitted tremendously from it. One particular girl I remember was so disillusioned by her looks and by the way others ignored her that she even tried to commit suicide !

Luckily a disciple of Sadgurudev saved her and directed her to the holy feet of the Master who kindly gave her **Kamdev Rati Diksha** and initiated her into this divine Sadhana. The girl had passed through virtual hell and she put in all she had into the Sadhana. And when she returned three months after to meet Sadgurudev and thank him even I could not recognize her.

Fine, she had the same face and same complexion. But an out of the world divine radiance played on her features and her eyes seemed to pull one towards her and strike a onversation. And the way she smiled! Sadgurudev was very pleased by the devoted way in which she had performed the Sadhana. And then she broke the big news. Although she was not from a very rich family, recently a very wealthy businessman had proposed to her on his own accord.

This very Sadhana is being revealed here with blessings of revered Sadgurudev. It works wonders for not just women but also men. And even those who feel old and listless due to the onslaught of worries and tensions can greatly benefit from it. This Sadhana infuses one with the divine energy of **Kaamdev** (the god of love and beauty) and **Rati** (his divine consort) and thus makes one feel youthful, beautiful, confident and eregetic. And when there is beauty in one's thoughts, a sparkle in one's eyes, a song on one's lips and the spirit of youth in one's heart can love be far behind ?

This Sadhana must be tried on a **Friday** – the day signifying planed Venus the star of love and beauty.

At night after 10 pm have a bath and wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North or East. Wear some natural fragrance on your clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it draw a Swastik with vermilion. On it place a picture of Sadgurudev. Worship Sadgurudev by offering vermilion, flowers and rice grains. Light a ghee lamp and incense. In a copper plate over a mound of rice grains place **Ratikaam Yantra** (amulet).

Take water in the right palm and speak thus – *I (speak your name) am performing this Sadhana for infusion of divinity and beauty in my life.* Let me water flow to the floor. Make two marks with vermilion on the Yantra. Offer rice grains and vermilion on the Yantra. Then chant one round of Guru Mantra.

There after chant fifty one rounds of this Mantra with **Anang rosary**.

Om Kaam Ratyei Phat.

After the Sadhana Chant one round of Guru Mantra. Wear the Yantra – (amulet) around your neck for twenty one days. Daily chant the Mantra just five round in the morning after having a bath. After twenty one days drop the rosary and Yantra in river or pond.

Sadhana Articles – 660/-

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

Navratri

Durga Sadhana

Worship of the nine Goddess

The days of Navratri are very important for the Sadhaks of Shakti or the Divine Goddess.

Sadhanas accomplished during these days prove to be successful, for these are powerful days imbued with the power of Tantra. Even the slightest effort bears fruit during these days. Wise Sadhaks realise the great significance of these days and they keep waiting for a chance to try Sadhanas during these days. In this period the Tantra form of the Mother Goddess is worshipped. One can of course also worship the Goddess according to the Vedic process. Goddess Durga has nine divine forms called Nav Durgas and the combined worship of the nine forms proves to be very fruitful for the Sadhaks.

Worship articles

One needs rice grains, vermilion, sandalwood paste, flowers, incense, lamp, milk, curd, ghee, honey, sugar, sweets and fruit.

Besides one needs a Mantra energised Navdurga Yantra, Navdurga rosary and Nav Shakti Beejs.

Early in the morning have a bath and wear yellow clothes. Sit on a yellow mat. Cover a wooden seat with a red cloth and on it place a picture of Sadgurudev.

Take the Sadhana articles i.e. Yantra and rosary etc in the two hands and chant thus to energise them.

Om Aam Hreem Krom Ram Vam Sham Sham Ham Lam Sham Ham Sah Soham Asyaah Shree Durgaa Pratimaayaah Praanaa Ih Praannaah Om Aam Hreem Krom Yam Ram Lam Vam Sham Sham Sam Ham Lam Sham Ham Sah soham Asyaah Shree Durgaa Pratimaayaah Jeev Ihasthitah.

Om Aam Hreem Krom Yam Ram Lam Vam Sham Sham Sam Ham Lam Sham Ham Sah Soham Asyaah Shree Durgaa Pratimaayaah Sarvendriyaanni Vaangmanastva-kachakshuh shrotra Jihvaa-ghraan-paani Paad Paayoopasthaani Iheivaagatya Sukham Chiramtishtthantu Swaahaa.

In a plate draw a Swastik with vermilion and on it place the Navdurga Yantra. On the left side of the Yantra place a Navshakti Beej. Offer vermilion and rice grain on both. Light ghee lamp and incense. Propitiate all the nine forms of the Goddess by chanting the following Mantras related to each Goddess and offering rice grains on the Yantra.

Sheilputri

Om Bhoorbhuvah Swah Sheilputri. Ihaagachh Ihatishtth, Sheilputryei Namah Sheilputree-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Jagatpoojye Jagadwandye Sarvashakti-swaroopinni Poojaam Grihaann Koumaari. Jagan-maatarnmostute.

Brahmachaarinni

Om Bhoorbhuvah Swah Brahma-chaarinni. Ihaagachh Ihatishtth, Brahma-chaarinnyei Namah Brahma-chaarinni-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Tripuraam Trigunnaadhaaraam Maarggyaan-swaroopinneem, Treilokya-vanditaam deveem Trimoortim Poojayaamyaham.

Chandraghantaa

Om Bhoorbhuvah Swah Chandraghantaa. Ihaagachh Ihatishtth, Chandraghantaayei Namah Chandraghantaa - maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Kaalikaam Tu Kaalaateetaam Kalyaann Hridyaam Shivaam, Kalyaann-jananeem Nityaam Kalyaanneem Poojayaamyaham.

Kooshmaandaa

Om Bhoorbhuvah Swah Kooshmaandaa. Ihaagachh Ihatishtth, Kooshmaandaayei Namah Kooshmaandaa-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Annimaadi-gunnodaaraam Makaraakaar-chakshushaam, Anant Shakti Meghaam Taam Kaamaaksheem Poojayaamyaham.

Skandmaataa

Om Bhoorbhuvah Swah Skandmaatah. Ihaagachh Ihatishtth, Skandmaatryei Namah Skand-maataa-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Chandveeraam Chandgaatraam Chandmund Prabhanjineem, Taam Namaami Cha Devesheem chandikaam Poojayaamyaham.

Kaatyaayani

Om Bhoorbhuvah Swah Kaatyaayani. Ihaagachh Ihatishtth, Kaatyaayanyei Namah Kaatyaayani-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Sukh-aanandkareem Shaantaam Sarva Deveirnamaskaritaam, Sarvabhoot-aatmikaam Kaalraatri.

Om Bhoorbhuvah Swah Kaalraatri. Ihaagachh Ihatishtth, Kaalraatryei Namah Kaalraatri-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Chand Veeraam Chand Maayaam Raktabeej Prabhanjineem, Taam Namaami Cha Devesheem gaayatreem Poojayaamyaham.

Mahaagouri

Om Bhoorbhuvah Swah Mahaagouri. Ihaagachh Ihatishtth, Mahaagouryei Namah Mahaagouri-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Sundareem Swarnn-aavarnnaangeem Sukh Soubhaagya-daayineem, Santosh Jananeem Deveem Subhadraam Poojayaamyaham.

Siddhidaatree

Om bhoorbhuvah Swah Siddhide. Ihaagachh Ihatishtth, Siddhidaayei Namah siddhidaa-maavaahayaami Sthaapayaami Namah.

Om Durgame Dustarekaaryee Jayadurge Vinaashini. Poojayaami sadaa Bhaktayaa Durgaam Durgatinaashineem.

Dhyaam

Join both palms and chant the following Mantra meditating on the divine form of the Goddess Durga.

Durga Smritaa Harasi Bheetimashesh Jantoh Swastheith Smritaamati-mateev Shubhaam Dadaasi. daaridraya dukh Bhaya Haarinni Kaa Tvadanyaa, Sarvopkaar Karannaay Sudaardrachittaa.

Chanting the following Mantra offer a flower as a seat for the Goddess.

Anek Ratnasanyuktam Naanaamanni-gannaan-vitam, Kaartswarmayam Divyamaasanam Prati-grihyataam.

Offer two spoonful of water for washing the holy feet of the Goddess.

Gangaadi Sarva Teerthebhyo Mayaa praartha-nayaahritam, toyametatsukh Sparsham Paadyaarth Pratigrihya-yataam.

Offer two spoonful of water for washing hands.

Nidheenaam Sarva Ratnaanaam tvamanarghya-gunnaahatam, singho-paristhite Devi! Grihaanaar-ghyam Namostute.

Offer three spoonful of water for rinsing te mouth.

Karpoorenn Sungandhen Surubhi swaadu Sheetalam, toyam-aachmaneeyaartham Devi! Tvam Pratigrihyataam.

Then bathe the Yantra with water chanting —

Mandaakinyaah Samaaneeteir-hemaam Bhoruh Vaasiteih Snaanam Kurushva Deveshi! Salileishcha Sugandhibhih.

Next bathe the Yantra with milk, curd, ghee, honey and sugar. Then mix all of them and bathe the Yantra with the mixture (Panchamrit) chanting the following Mantra.

Payodadhi ghritam Cheiv Madhu cha Sharkaraanvitam, Chandanam Devi! Deveshi! Snaanaartham Pratigrihyataam.

Next chanting the following Mantra bathe again with pure water.

Gange Cha Yamune Cheiv Godaavari Saraswati, Narmade Sindhu Kaaveri Snaanaartham Pratigrihyataam.

After the bath wipe the Yantra dry with a clean cloth and then make a Swastik with vermillion in another plate. On it place the Yantra.

Then offer a piece of red thread (Mouli) signifying offering of clothes to the Goddess.

Patt Koolyugam Devi! Kanchuken Samanvitam. Paridhehi Kripaam Kritvaa Durge! Durgatinaashin!

Make a mark with vermilion or sandalwood paste on the Yantra.a

Shree Khand Chandanam Divyam Gandhaadd Yam Sumanoharam, vilepanam Cha Deveshi! Chandanam Pratigrihyataam.

Offer rice grains on the Yantra chanting thus.

Akshataannirmalaan Shuddhaan Muktaamanni-saman-vitaan, Grihaan-nemaan-mahaadevi! Dehi Me Nirmalaa Dhiyam.

Next offer turmeric powder, vermilion and grass. Then offer a garland of fresh flowers chanting thus.

Sharatkaale Samudbhootaam Nishumbhaasur Mardini. Pushpmaalaam Varaam Devi! Grihaam Surpoojite.

Next worship the body parts of the Goddess offering vermilion and rice grains each time chanting one of the following Mantras.

Om Durgaayei Namah Paadou Poojayaami Namah.
Om Mahaakaalyei Namah Gulfou Poojayaami Namah.
Om Mangalaayei Namah Jaanudwayam Poojayaami Namah.
Om Bhadrakaalyei Namah Katim Poojayaami Namah.
Om Kamalvaasinyei Namah Naabhim Poojayaami Namah.
Om Shivaayei Namah Udaram Poojayaami Namah.
Om Shamaayei Namah Hridyam Poojayaami Namah.
Om Koumaaryei Namah Stanou Poojayaami Namah.
Om Umaayei Namah Hastou Poojayaami Namah.
Om Mahaagouryei Namah Dakshinn Baahum Poojayaami Namah.
Om Ramaayei Namah Skandhou Poojayaami Namah.
Om Mahishmardanyei Namah Netre Poojayaami Namah.
Om Singhvaahinyei Namah Mukham Poojayaami Namah.
Om Maaheshvaryei Namah Shirah Poojayaami Namah.
Om Kaatyaayanyei Namah Sarvaang Poojayaami Namah.

Next light incense chanting thus —

Dashaang Guggulam Dhoopam Chandanaagaru Sanyutam, Samarpitam Mayaa Bhaktayaa Mahaadevi Cha Grihyataam.

Light a ghee lamp chanting thus.

Ghritvarti Samaayuktam Mahaatejo Mahojwalam, Deepam Daasyaami deveshi Supreetaabhav Sarvadaa.

Offer a sweet made from milk.

Annam chaturvidham Swaadu raseishadabhih Samanvitam, Neivedhyam Grihyataam devi! Bhaktim Mehyachalaam Kuru.

Offer fruits to the Goddess chanting thus.

Draakshaa Kharjur Kadali Pana-saamra Kapithkam, Naarikelekshu Janvaadi Phalaani Pratigrihyataam.

Offer cloves, cardamom, betel nuts chanting thus.

Elaalavang Kasturi Karpooreih Pushpvaasitaam, veetikaam Mukha-vaasarth-marpayaami Sureshwari.

Offer some cash chanting thus.

Poojaa Phal Samridhyarthan Tavaagre Swarnnameeshwari, Sthaapitaa Ten Me Preetaa Poornnaankuru Manorathaan.

The with a Navdurgaa rosary chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Dum Durge Durgatinaashaay Dum Om Phat.

Then light a lamp with nine wicks and sing the Aarti of the Goddess. Thereafter offer flowers chanting thus.

Naanaa Sugandh Pushpaanni Yathaa Kaalod-bhavaani Cha Pushpaanjali-rmayaa Dattam Grihaann Parameshwari.

After the Sadhana is over distribute the sweets to everyone. If possible offer meals to a girl below ten. After Sadhana drop the Yantra and rosary in a river or pond. Place the Navshakti Beej in your safe or where you store your food grains.

Sadhana Packet-570/-

01 मार्च 2022

महाशिवरात्रि महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल :

परिणय वाटिका विवाह भवन, दर्शनिया मोड़ बी. देवघर, रांगा मोड़ के पास, रेलवे पुल के नीचे कांवरिया रास्ते पर, **वैद्यनाथ धाम, देवघर (झारखण्ड)**

आयोजक मण्डल-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सौरभ दास गुप्ता (चितरंजन)-9932858697, कुन्तल मित्रा- 89722 49536, सुनील देवदर्सी (देवघर)-8825105774, विजय कुमार - (देवघर)-7979886176 अनुप चेल (बुण्डू) - 7535817357, भुनेश्वर प्रमाणिक (बुण्डू) - 97713 33701, आभा रानी एवं मुटाई कुदादा - (रांची), 8340 317589, सत्यप्रकाश सिंह, (रांची) - 8405800226, डॉ. आर.के. हाजरा (रांची)-6205169797, महेन्द्र बिरूउली-(चाईबासा)-77080 10608, अमरेन्द्र कुमार सिंह (रांची)-9162155183, अरूण कुमार मुण्डा (फुसरो)-8863866106, हरेन्द्र कुमार महतो (गोमिया)-98012 84131, प्रमोद कुमार साव (गोमिया)- 8210885811, दिनेश नायडु (फुसरो)-7992215965, सत्येन्द्र भारती (सिंजुआ)-98351 21114, शम्भु प्रसाद यादव (हटरगंज)-7488154775, राम मनोज ठाकुर-9431357893, धनबाद- शिवानन्द झा (भागलपुर)- 9334738354, सुनील यादव (भागलपुर)-9934583245, शैलेस कुमार सिंह, (कठिहार)-9934635279, देवेन्द्र कुमार (बड़बिगहा)-7079858420, पंकज कुमार (मुज्जफरपुर)-9631099909, प्रेम लाल पासवान (पुसा)- 7294009781, निवास सिंह मुंगेर, चैतन गुंजन योगी जी (लखिसराय)- 8144904640, आ.सि.सा. परिवार चित्ररंजन, बंगाल के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, भागलपुर

06 March 2022

Guru Shishya Milan Samaroh

Shri Yathiraja, Ramanuja Trust, No. 198, Sampige Road, Malleshwaram, Banglore

Contact No. : 8210257911, 9199409003, 9632172538, 8660106621, 8762684986, 8660271419, 8123466062, 9342659091, 8884611220

13 मार्च 2022

सर्व सौभाग्य प्रदायक विष्णु लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सर्व समाज मांगलिक भवन, नगर पालिका परिषद, तिल्दा-नेवरा, मिशन अस्पताल के पास सासाहोली, सिमगा रोड़, **तिल्दा** - जिला- रायपुर (36गढ)

आयोजक मण्डल-आयोजक मण्डल छत्तीसगढ़ - जी.आर.घाटगे-9669 901379, महेश देवांगन-9424128098, लकेश्वर चन्द्रा-98274 92838, सेवा राम वर्मा-9977928379, हितेश ध्रुव-98265 41021, संजय शर्मा- 9111342100, रायपुर-दिनेश फुटान-89591 40004, बृजमोहन साहू-79740-12769, तिल्दा नेवरा क्षेत्र-दिलीप देवांगन-7000354515, मुरली मनोहर वर्मा-9926603007, संतोष राव लहने-9301211762, श्रीमती राधिका वर्मा-9302738864, जागेश्वर पटेल 93005-07287, नीलकंठ निषाद-9981818042, सुरेश उच्चहरा-9754984685, गोवधन जांगड़े-8435632511, शैलेन्द्र वर्मा-9754291554, गजानंद साहू- 8964804988, चन्द्रशेखर वर्मा 9300256673, नवीन वर्मा-9826515409, टीकाराम वर्मा-93025 54110, महेन्द्र वर्मा-9425201521, नारायण वर्मा-9300903462, मकरध्वज यादव, रामजी धुव, उत्तरा चन्द्राकर, भोलाप्रसाद शर्मा, राकेश चन्द्रवंशी, मुकेश साहू, योगेश साहू, रेखा धनकर, चितरेखा चन्द्राकर, वेदप्रकाश चन्द्राकर, दुलेश्वर साहू, रामचन्द्र, राकेश श्रीमाली, सुमित्रा निषाद, रामकुमार वर्मा, हरख राम सिरमौर, मनोज राव लाहने, शांति यादव, सेवकराम ठेठवार, चन्द्रकला देवांगन उड़िसा, दुखूराम निषाद, राजू वर्मा, ब्रदीप्रसाद कश्यप, अशोक राव लाहने, छपोरा-शत्रुहन वर्मा 8770999326, मालती वर्मा-62635 11345, श्यामलाल वर्मा, डागेश्वर वर्मा, हुमन्त धीवर, तुकाराम साहू, खूबीराम वर्मा, परसराम वर्मा, हिनेश चौहान, रमेश चौहान, मोहगांव-रविकांत वर्मा- 8463862531 दीपक वर्मा, खरोरा-ईश्वरी प्रसाद देवांगन- 94242 82065, सुनील नायक-9406019927, वंदना शर्मा, हेमराय देवांगन, प्रहलाद यादव, सिलयारी- गज्जू वर्मा, सिमगा-हरिशरण सोनी, टीकाराम साहू 76978-38246, हृदय साहू, हुलास साहू 90983-88293, प्रकाश कुंभकार, मढ़ी - गजानंद-8964804988, धनाराम धीवर, विनोद साहू, रविन्द्रनाथ ठाकुर, हेमनाथ निषाद, त्रिपुरारी साहू, मोतीराम साहू, देवचरण ढीमर, वीरेन्द्र धीवर, खौना-गौकरण वर्मा-6268924232, पवन देवांगन, केसरी पटेल, उड़सेना-पवन वर्मा-9399220640, असौंदा-दुकलहा साहू, छबिराम वर्मा, खुडमुड़ी- राजेश साहू-9399795374, संतराम साहू- 93994 01347, भूपेन्द्र वर्मा, भिमौरी-नारायण वर्मा, छतौद-भागवत चौधरी-9617657873, मेघनाथ यादव, केदार वर्मा, बल्ला वर्मा, सिलयारी (कुरूद)-ओमेन्द्र कश्यप -9300176588, रामेश्वरी नायक, उत्तम साहू, सतीश साहू, सुरेश सिंघल, कोदवा-गजानंद वर्मा 9424128221, मस्का-हुलास साहू- 9685713726 राजेश साहू-8435753773 गोपेश साहू, शत्रुहन साहू, प्रवीड़ सप्रे, संजय साहू, खिलोरा- वीरेन्द्र साहू-9826970393, टीकाराम साहू, मोहित जायसवाल, केसली-चुड़ावन वर्मा, रामाधार मानिकपुरी, केसदा-बलदाउ सागरवंशी, टेकराम कश्यप- 98268 83547, हथबंद-हरिराम निषाद, बिटकुली-बसंत वर्मा-95162 80008, हिरमी-बंशीलाल वर्मा, गंगेश्वर वर्मा, शेखर वर्मा, भाठापारा -विजय शंकर साहू- 6266672202, राजेन्द्र साहू, संजय मिश्रा-8878688250, खेमदास वैष्णव, प्रकाश वैष्णव, गजेन्द्र साहू-7000493699, राजकुमार साव, पुरूषोत्तम कर्ष, निर्मला कर्ष, विजय साव, सुरेश ध्रुव, जनक देवांगन, हेमसिंह चौहान, गुरूप्रसाद साहू, हुल्लास राम साहू, गेंदराम साहू, शत्रुहन देवांगन एवं समस्त छत्तीसगढ़ के साधक गण

16-17 मार्च 2022

होली महोत्सव साधना शिविर
गुरुधाम, जोधपुर

26 मार्च 2022

महामृत्युंजय सदाशिव साधना शिविर

शिविर स्थल :

बरखू राम वर्मा महिला पी.जी. कॉलेज, जोकहरा, **लाटघाट**, **जिला-आजमगढ़ (उ.प्र.)**

आयोजक मण्डल-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, अजय जायसवाल-9335643294, दुर्गा प्रसाद मौर्य- 9454618123, 91402 66817, डॉ. सुमन प्रसाद चौरसिया-7007692878, लवकुश महाराज, व्यास मिश्रा, दिग्विजयनाथ दुबे, संजय राय, रामकेवल पटेल, रविशंकर यादव, सुजीत राय, हेमन्त दुबे-95064 80297, लाटघाट-विन्ध्यवासिनी राय- 8009857156, 9450734456, दया शंकर शुक्ला, द्विग्विजय नाथ दुबे, संजय राय, कमलेश राय, श्रीमती निर्मला चौरसिया, डॉ. राम किसूनसिंह, डॉ. शशांक राय, डॉ. दिनेश सिंह, डॉ. रत्नेश पाण्डेय, डॉ. शिवम यादव, डॉ. अनिरुद्ध सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण मौर्य, दिनेश चौरसिया, रामकेवल सिंह, योगेन्द्र सिंह, रामसिंह मौर्य, विनोद कुमार, विजय कुमार, संजय कुमार, विजय बरनवाल, विजय शंकर यादव, अनिल जायसवाल, मुनिष चन्द्र मिश्रा, लालती देवी, रौनापार-अभय नारायण सिंह पटेल, रविशंकर यादव, अनिल यादव, जयबहादुर पटेल, बालचंद सिंह, ओमप्रकाश गोड़, राममूरत यादव, मनोज श्रीवास्तव, अरुण श्रीवास्तव, उमेश गुप्ता, शंकर गुप्ता, पतिराम यादव, सीताराम यादव, रामरूप यादव, आजमगढ़-लवकुश महाराज जी, रामदर्शन यादव, विंध्याचल पाण्डेय, घ्नश्याम तिवारी, रवि उपाध्याय, संजय पाण्डेय, चुन्नीलाल, विजय मिश्रा, जितेन्द्र यादव, राजदेव राय, राधेश्याम दूबे, दोहरी घाट, बड़हलगंज -दयाशंकर तिवारी, राजकुमार राय, अजय राय, डॉ. राजीव पाण्डेय, संतोष राय, संतोष गुप्ता, संतोष मौर्य, मोती चौहान, रामकुंवर सिंह, शंकर साहनी, नित्यानन्द मिश्रा, शिवांकर तिवारी, आनन्द तिवारी, सुजीत राय, विरेन्द्र शाही, जितेन्द्र यादव, अच्छेलाल चौरसिया, रामगोविन्द यादव, गुणाकेश पाण्डेय, श्रीकृष्ण यादव, मऊ-विंध्याचल चौहान, अशोक गोड़, बलिया-सरोज, प्रवीन प्रजापति, वाराणसी-लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, अरुण पाण्डेय, आशीष दुबे, गोरखपुर-के. के. शुक्ला, रामनारायण पटवा, योगी रमेश नाथ, शकुंतला यादव, सेतभान यादव, बद्रीनारायण श्रीवास्तव, पुनीत श्रीवास्तव, श्याम सुन्दर पाण्डे, अशोक इस्त्री, राजकिशोर गिरी, प्रमोद कुमार चौहान, खुशबू गुप्ता, अमर नाथ, मोहम्मदाबाद-अनिल कुमार सिंह, डॉ. जगदीश सिंह, सुरेश प्रजापति, जहाँगीर गंज-इन्द्रजीत सिंह, रामनगर-अशोक शुक्ला, अच्छेलाल यादव।

27 मार्च 2022

सर्व पाप दोष निवारण
भाग्योदय साधना शिविर

शिविर स्थल : सोसायटी धर्मशाला, पाण्डु नगर, गणेश शंकर विद्यार्थी इण्टर कॉलेज के निकट, जे.के. मंदिर पिछला गेट : **कानपुर** (उत्तर प्रदेश)

आयोजक मण्डल : महेन्द्र सिंह-9450227356, शैलेन्द्र सिंह-97211 67706, 8630969496, जे.एन. मिश्रा, चन्द्रबल पाण्डेय, सुरेश पाण्डेय, के. एन. वर्मा, श्रीकान्त गुप्ता, अशोक सोनी, बी.पी. त्रिपाठी, राकेश त्रिपाठी (राम नगर), सत्येन्द्र यादव, सुदेश सचान, प्रताप शशि सिंह, श्रीमती नीलम सिंह, श्रीमती पुष्पा सचान, श्रीमती यशोदा इन्दर वर्मा, राहुल यादव, राकेश भाई त्रिपाठी-9839125675, अभिषेक त्रिपाठी, विनय मिश्रा, उमेश सोनी, हरिकिशन सोनी, विजय पाल, दिनेश सिंह जादोन, धर्मेन्द्र यादव, राजेन्द्र सिंह यादव, श्रीकिशन पाल, लल्ला पाल, श्रीमती साधना, श्रीमती पुष्पलता श्रीवास्तव, राम पाल वर्मा, अरविन्द यादव, सरनाम सिंह यादव, विमल गुप्ता, नवजोत शर्मा, सत्य प्रकाश वर्मा, सर्वेश विश्नोई, डी.सी. यादव, संगम लाल गुप्ता, संजय आर्य, हृदयेश श्रीवास्तव, विनोद सचान, शिवशंकर शर्मा, राम निवाज पाल-7800002874, राजेश कश्यप, संग्राम सिंह, विजय कुमार प्रजापति, बबेरू-अरुणेश अग्रहरी सोनू, सुशील मिश्रा, सरन शिवहरि, महेश गुप्ता, विजय पाल सिंह, समर सेन सिंह, अमर लाल श्रीवास्तव, मुन्नी लाल गुप्ता, राज बहादुर कुशवाहा, लखनऊ-अजय सिंह, सतीश टंडन, पंकज दूबे, डी.के. सिंह, सन्तोष सिंह अन्नू, कानपुर देहात-श्याम सिंह यादव, सुनील शर्मा, जय करन सिंह परमार, प्रेम शंकर शर्मा, रमेश चन्द्र साहू, श्रीमती प्रकाश सचान, बिधुना, औरैय्या, ईटावा, कन्नौज-लक्ष्मी नारायण परिहार, आनन्द यादव, विजय कुमार, लाल सिंह वर्मा, अजय परिहार, चन्द्रभान सिंह, उदयभान सिंह, गौरव सिंह, रविन्द्र कश्यप, राजीव कुमार गुप्ता, बिटोला देवी, जयनारायण यादव, अशोक सिंह गौर, श्रीमती अनीता सिंह, प्रशान्त सोनू, अरुण वर्मा, रिंकू सोनी, डॉ. पवन श्रीवास्तव, चन्द्र प्रकाश पाठक, आशू, शशांक गुप्ता, बिरेन्द्र त्रिवेदी, नरेन्द्र याद्रव, कृपाल यादव, अरविंद यादव, शिव कुमार बाथम, गौरेलाल (फौजी), लाल निरंजन (जालौन), धर्मवीरसिंह, कायमगंज, हरदोई, सीतापुर, फर्रुखाबाद-अरुण शाक्य, सुनील पाल, प्रदीप शाक्य, बबलू मिश्रा, रागनी, राजेन्द्र भारद्वाज, संतोष शर्मा, कुसुम लता, गयाप्रसाद राठौड़, रामसिंह राठौड़, इन्द्रपाल सिंह, संतोष कुमार सिंह, सर्वेन्द्र विक्रम सिंह, सर्वेश राठौड़, भैया लाल निखिल, प्रज्ञा सिंह, लखीमपुर खिरी-श्रीमती कलावती देवी, सरोज रस्तोगी, राम प्रसाद कश्यप, ज्वाला सिंह, ओमप्रकाश गुप्ता, बाबा सूरज दास, वंदना श्रीवास्तव, बिपिन विहारी बाजपेयी, आलोक सिंह चौहान, चन्द्र प्रकाश रस्तोगी, बच्छरावां, प्रयागराज, बाराबांकी-राजेश वर्मा, डॉ. विजय, दिनेश कुमार, अखिलेश कुमार, अभय कुमार, अभिषेक, शिवानी गुप्ता, संदीप, राम हर्ष, डॉ. गया प्रसाद यादव, सूर्यनारायण दुबे

14 अप्रैल 2022

गुरु शिष्य मिलन समारोह

शिविर स्थल :

जानोलकर मंगल कार्यालय, केशव नगर, रिंग रोड, जिला : **अकोला** (महाराष्ट्र)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : राजेश सोनोने-9823033719, रविंद्र अवचार- 99211 38349, 9423468059, भास्कर कापडे-9623454354, विष्णु जायले-

9623454353, आनंद गुप्ता, विनायकराव देशमुख- 94229 37169, पुंजाजी गावंडे-9527570406, श्याम दायमा-8805710711, राजू चिंचोळकर -9850574122, श्रीनिवास पावसाळे-9767605061, शंकरराव अंभोरे-99601 52144, राजेश राऊत-9145860760, दिनेश कोरे-98225 60901, संतोष दांडगे-9822730441, संजय शेन्डे-96044 83029, दयाराम घोडे-7350655850, धीरज टापरे-9975054742, गुणवंत जानोरकर -9226070462, किशोर नरहर पाटिल-97667 75911, राजेश पाटिल-9028465950, सुनील खंडारे-9623744190, सुनील जामनारे-9850333769, शरद पवार-9696323452, शशिकांत लोंढे- 7798130130, मनीष येन्डे-9326917415, गणेश काळे-98506 63935, संदीप बढे-7387393556, प्रह्लाद भरसाळदे-9766333084, गजानन बलोदे-9822716368, मंगेश सोनोने-9623454352, धनराज माळी- 8007727479, प्रवीण सोनोने-9405674015, ज्ञानेश्वर लिखार- 9860972211, अरुण म्हैसने-99233 13939, नारायण इंगळे- 9922072683, अरुण रावरकर- 9822943520, प्रवीण वाघमारे- 7249390312, पांडुरंग मास्कर-9860279267, सौ. ममता घाटोळ-9552658461, अरुण पवार-9822808593, मुरलीधर शेटे-9850251078, दिलीप कुमरे-8975255794, कृष्णा रावणकार -9011883645, विजय भगत- 9075072619, शकील सर्जेकर- 78419 69809, पुरुषोत्तम निंबाळकर- 9011929278, अवधूत सिरसाट-9766451677, किशोर चव्हाण- 9975957702, रामकृष्ण नवघरे-9850159069, प्रमोद सोनोने-9370549394, हरीभाऊ उकर्डे-9325811463, दीपक मालोकार-9921964053, सुधाकर पुंडकर-9637384570, विजय लोहकरे-81494 83987, राजेश सरोदे- 9623408967, अंकुश मिसाळ-9860674496, निलेश चव्हाण- 9579034331, महेंद्र पवार-8788364330, मनीष कनोजिया- 94229 88945, अशोक चव्हाण- 9226893205, चंद्रपुर-वतन कोकास- 9422114621, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्प्रे- 9406751186, गडचिरोली- दुल्लुराज वुइक-9422615423, यवतमाळ- श्रीकांत चौधरी-9822728916, अमरावती-रोहित काळे-8551975547, वर्धा- चंद्रकांत दौड-8379080867, नागपुर-वासुदेव ठाकरे -9764662006, किशोर वैद्य, सारंग चौधरी- 9921672114, भण्डारा -देवेन्द्र काटखाये- 7020221640, नरेन्द्र काटेखाये-9403419979, गोंदिया -डी.के. सिंह-9226270872

16 अप्रैल 2022

निखिल सायुज्य
राजराजेश्वरी ललिताम्बा साधना शिविर

शिविर स्थल :

जोरावर स्टेट पार्टी प्लाट, वाघोडिया क्रॉसिंग एवं डभोई क्रॉसिंग के बीच, नेशनल हाईवे नं. 8 बाईपास, नियर ईस्टर्न आर्केड, जिला : **बड़ौदा** (गुजरात)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : सिद्धाश्रम साधक परिवार बड़ौदा, गुजरात- पी.के. शुक्ला-9426583664, चिराग महेश्वरी-9725323930, कनु भाई सोनी-9737836800, सुनील सोनी-9925555035, विरल सोनी -9925234536, महेन्द्र सिंह राणा-9825026711, हितेश शुक्ला 8141376295, विजय भाई दर्जी, हितेश बिरला, अपूर्व वोरा, कान्ति भाई परमार, रमाकान्त सोनी, ज्योति पाटिल, प्रकाश पटेल, अल्पेश राठवा, अजय अग्रवाल, विरेन्द्र शर्मा, मनोज महेश्वरी, राजेश भटट, रोहित मोरे , कमलेश शर्मा, यतिन पंडया, रेवजी पटेल, मुकेश पढियार, अशोक परमार, भावेश पटेल, ललित प्रसाद, भुपेन्द्र भाई सुथार , क्रुणाल उपाध्याय

17 अप्रैल 2022

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

20-21 अप्रैल 2022

सद्गुरुदेव अमृत महोत्सव
एवं सहस्राक्षी महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : डॉ. रमाबाई राजकीय महाविद्यालय ग्राउण्ड, इन्दिरा चौक, **गजरौला** - जिला- अमरोहा (उ.प्र.)

(विस्तृत विवरण पत्रिका की पृष्ठ संख्या 27 पर देखें)

आयोजक मण्डल-केप्टन श्यामवीरसिंह-9997944895, पुष्पेन्द्रसिंह-94123 42835, खिलेन्द्रसिंह-9837458090, विकास अग्रवाल-8868982839, योगराजसिंह-9917055523, मुनेन्द्रसिंह -9756700204, कृष्णकुमार मिश्रा-9897105859, प्रेमनाथ उपाध्याय-9997754279, शत्रुधन त्यागी- 6397392356, किरनपाल सिंह-8869041980, गजरौला-श्याम सुन्दर कौशिक, यतेन्द्र कुमार, शेखर वर्मा, विनोद पाण्डे, गतेन्द्र सिंह, रितेश त्यागी-9999561076, कुलदीप सिंह, अमरोहा-नितिन अग्रवाल- 9258890999, मनोज कुमार-7351960854, दीपक कोहली, रामनाथ त्यागी, मनीष सैनी, विजयपाल सैनी, मुरादाबाद-युवराजसिंह, रागिनी गुप्ता-843346020, यशवीरसिंह-9758337325, मुकुल सिंह, हरज्ञानसिंह यादव-9149224023, अशोक कुमार, सोमपालसिंह, सुशील कुमार सिंह, विजेन्द्रपाल सिंह, मनोज विश्नोई, राजेन्द्र सिंह, सूरजपाल सिंह, सम्भल-मोनू कुमार-9568495068, रामेन्द्र सिंह, रिंकू सैनी-9457131508, सुरेन्द्र सैनी, रणजीत सैनी-9027765397, परमसिंह, सतेन्द्र सिंह, नरेन्द्रसिंह, लोकेन्द्र सैनी, विजेन्द्र सैनी, अक्षय त्यागी, शशांक चौधरी, मिलन शर्मा, श्रीमती वीर बाला, हर्ष राणा, तरुण यादव-6396432371, प्रेमसिंह यादव, अनूपसिंह यादव, अनिल सैनी, कमल सैनी, जितिन सैनी, शंकर सैनी, अंकुर सिंह, बिजनौर-सोमपाल सिंह-9759405278, निर्वेश त्यागी-9756220905, कल्याणसिंह, राजबहादुरसिंह, राजवीरसिंह, नन्दकिशोर, जशवन्त सैनी, धामपुर-सुरेश कुमार रस्तौगी, मनोज कुमार, शीतल कुमार, संजय कुमार, मंजू रस्तोगी, राजीव शर्मा, अनिल अग्रवाल, आशाराम गौड़, अनुराग त्यागी (नूरपुर), बुलन्द शहर-पंकज गर्ग, मनोज कुमार शर्मा, बरेली-राजेश प्रताप, शहाजहांपुर-अनिल कुमार, प्रदीप राठौड़, कैलाश राठौड़, लखीमपुर-बाबा सूरतदास, अमित कुमार, अरुण मिश्रा, बबलू मिश्रा, राजेश रस्तोगी, लखनऊ-अजय कुमार सिंह, सतीश टण्डन, जयंत मिश्रा, कानपुर-शैलेन्द्र सिंह, श्रीमती नीलम, सुरेश पाण्डे, महेन्द्र सिंह, नागपुर-वासुदेव ठाकरे, हलद्वानी-आनन्द राणा, हरीश प्रसाद, श्रवण कुमार, संजीव चौहान, उधमसिंह नगर-शिवदयाल, वासुदेव, सुनील रुहेला, हरभजन सिंह, बाजपुर-मनोज सिंह, सत्येन्द्र कुमार वर्मा, काशीपुर-आसु मिश्रा, वी.के. मिश्रा, नैनीताल-पप्पन जोशी, कोटद्वार-महिपाल सिंह, हरिद्वार-स्वामी प्रकाशानन्द, लक्ष्मण सिंह, प्रतुल कुमार, आशा राम गौड़

हनुमान दीक्षा

हनुमान तो अपने भक्त की रक्षा करने वाले एकमात्र देव हैं, जो संकट के समय में एवं भूत-प्रेत बाधा को दूर करने में सहायक तथा बल-वीर्य प्रदान करने वाले हैं। जब हनुमान साधना करने पर भी लाभ की स्थिति न बन रही हो तथा किसी भी प्रकार की भय-बाधा दूर न हो रही हो, तो उसका सीधा, सरल उपाय है-'दीक्षा'। 'हनुमान दीक्षा' को प्राप्त कर साधक को साधना में भी सफलता मिलने लग जाती है, साथ ही दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वह स्वयं भी अपने आप को बलवान, पराक्रमी अनुभव करने लग जाता है, फिर कैसी भी बाधा हो, विपत्ति हो, वह उसका मुकाबला दृढ़ता के साथ, साहसपूर्वक करता है।

बलमिच्छेच्च दीक्षाभिः हनुमतः शत्रुदारिणः।
बुद्धिं ज्ञानं यया चैव, सर्वं सौभाग्यमीहते।।

अर्थात् श्री हनुमान शत्रुओं का शमन करने वाले तथा विघ्न विनाशक हैं, अतः यह 'हनुमान दीक्षा' बल, बुद्धि ज्ञान एवं सौभाग्य को देने वाली है।

।। ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा।।

योजना केवल 16, 17, 19 एवं 20 मार्च इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 February, 2022
Posting Date : 21-22 February, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : मार्च एवं अप्रैल में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
16-17 मार्च
12 अप्रैल

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
19-20 मार्च
23-24 अप्रैल

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002